Copyrighted Material

निखिल सचान

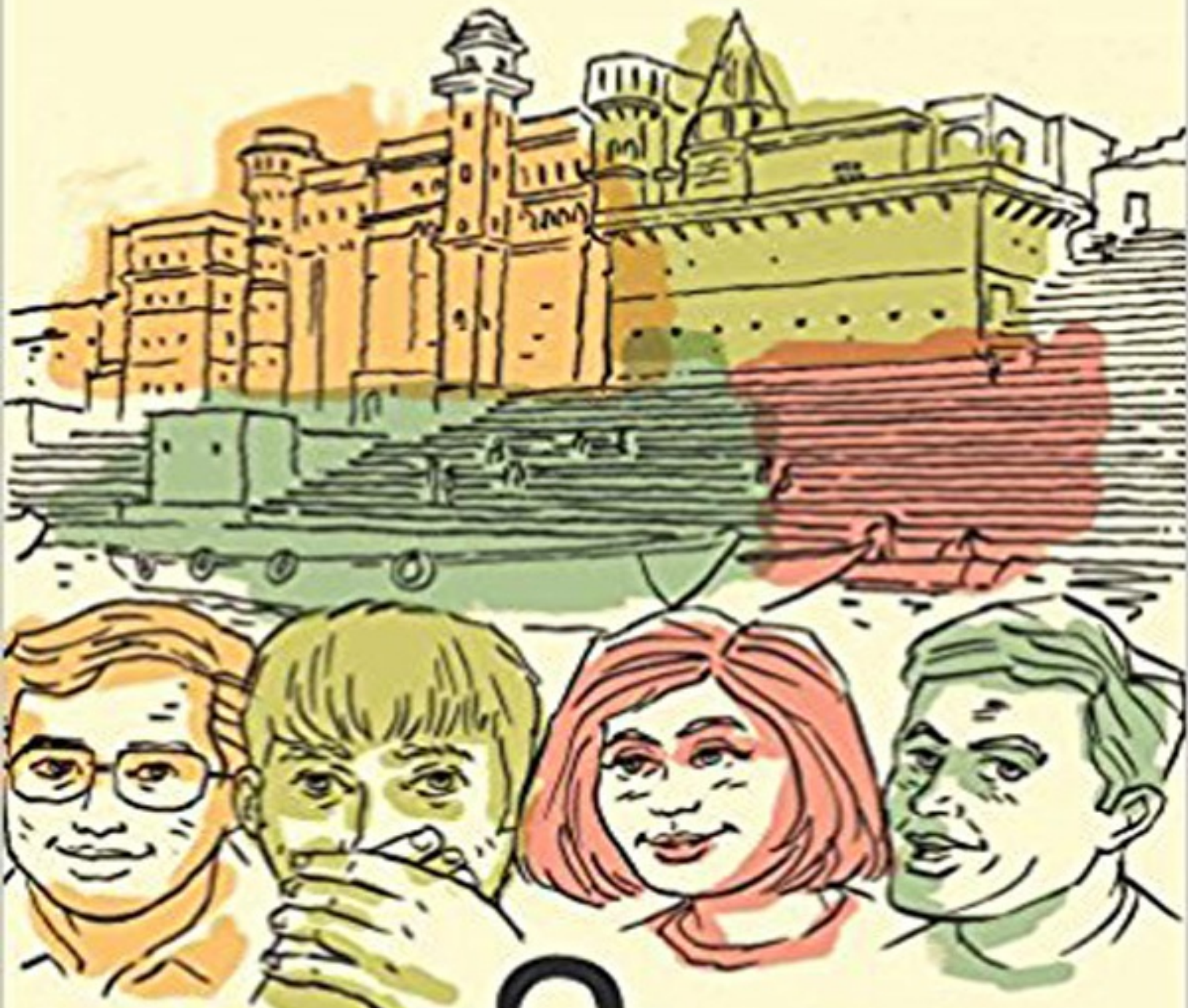

यूपी 65

More Books - www.The-Gyan.in

Copyrighted Material

निखिल सचान

निखिल सचान **नई वाली हिंदी** के पोस्टर ब्वाय हैं। **IIT** और **IIM** के छात्र होने के नाते इनकी शुरुआत हिंदी साहित्य के आउटसाइडर के रूप में हुई, लेकिन पहली किताब आते ही, ये आनन-फ़ानन ही, हिंदी साहित्य के नए रंग-रूट में सबसे चहेता चेहरा हो गए।

इनकी किताब **'नमक स्वादानुसार'** और **'ज़िंदगी आइसपाइस'** ने हज़ारों ऐसे लोगों को उँगली पकड़कर हिंदी की किताबों से जोड़ा जिन्होंने अपनी आख़िरी हिंदी किताब बोर्ड एग्ज़ाम पास करने के लिए उठाई थी, जिन्हें हिंदी बोरिंग और अन-कूल लगती थी और जिन्हें पूरा भरोसा था कि हिंदी किताबें पढ़ पाना उनके बस की बात नहीं है।

वहीं निखिल ऐसे लोगों के बीच भी गहरी पैठ रखते हैं जो क्लासिक हिंदी लिटरेचर के शौक़ीन हैं, जो साहित्य की गहरी समझ रखते हैं और जिन्हें उसके मूलभूत स्वरूप से छेड़-छाड़ पसंद नहीं है। नतीज़तन, इनकी दोनों किताबें पिछले कुछ सालों की सबसे बड़ी हिंदी बेस्ट सेलर्स में से एक हैं और BBC, आज-तक जैसे मीडिया हाउसेज़ के अलावा क्रिटिक्स ने भी इन्हें 2013 और 2015 की सबसे बेहतरीन हिंदी किताबें क़रार दिया।

फ़िलहाल निखिल अपना पहला नॉवेल **यूपी 65** लेकर हाज़िर हैं और मायानगरी मुंबई की शरण में हो लिए हैं।

More Books - www.The-Gyan.in

यूपी 65

निखिल सचान

More Books - www.The-Gyan.in

westland publications ltd
61, II Floor, Silverline Building, Alapakkam Main Road, Maduravoyal, Chennai 600095
93, I Floor, Sham Lal Road, Daryaganj, New Delhi 110002
www.westlandbooks.in
Hind Yugm
201 B, Pocket A, Mayur Vihar Phase-2, Delhi-110091
www.hindyugm.com

Copyright © Nikhil Sachan 2017
All rights reserved

Nikhil Sachan asserts the moral right to be identified as the author of this work. This novel is entirely a work of fiction. The names, characters and incidents portrayed in it are the product of the author's imagination. Any resemblance to actual persons, living or dead, or events or localities is entirely coincidental.

Due care and diligence has been taken while editing and printing the book. Neither the author, publisher nor the printer of the book hold any responsibility for any mistake that may have crept in inadvertently. Hind Yugm and WESTLAND, the Publisher and the printers will be free from any liability for damages and losses of any nature arising from or related to the content. All disputes are subject to the jurisdiction of competent courts in Chennai.

More Books - www.The-Gyan.in

This book is sold subject to the condition that it shall not by way of trade or otherwise, be lent, resold, hired out, circulated, and no reproduction in any form, in whole or in part (except for brief quotations in critical articles or reviews) may be made without written permission of the publishers.

More Books - www.The-Gyan.in

बनारस के लिए,
जिसने एक कमबख़्त बा-फ़िक्र लड़के को हद दर्जा बे-फ़िक्र बनाया

बनारस हिंदू यूनीवर्सिटी के लिए
जहाँ महबूबा और दोस्त मिले और यूँ मिले कि आजतक न छूटे

शुभांगी के लिए
जो मेरी प्रेयसी है, पत्नी है, हमसफ़र और रहगुज़र है

दोस्तों के लिए
जिनका सबसे बड़ा काम ये था, कि वो आज तक किसी काम न आए

More Books - www.The-Gyan.in

बात की बात

इस किताब को शायद कुछ-एक बरस पहले ही आ जाना चाहिए था। बनारस और BHU का मेरे जहन पर मन भर उधार रहा है। दोनों जगहों ने मुझे जो कुछ दिया है, यह किताब उसका मोल चुकाने की अदना-सी कोशिश भर है।

फिर भी तमाम साल मैं इस किताब को लिखने से बचता रहा जिसकी मूल रूप से तीन वजहें रहीं। पहली यह, कि मैं नहीं चाहता था कि मैं IIT और कॉलेज लाइफ़ पर एक और किताब लिखकर स्टीरियो-टाइप कर दिया जाऊँ और इस किताब को बिना पढ़े ही एक और 'फ़ाइव प्वाइंट सम वन' कह दिया जाए। दूसरी यह कि सत्य भाई की 'बनारस टाकीज़' आने के बाद, मैं दोबारा संशय में था कि BHU और बनारस पर इतनी बेहतरीन किताब के बाद, एक और किताब का स्वागत किस हद तक होगा। या नहीं भी। तीसरी यह, कि मैं इस बात से भी बचता रहा कि किताब का कथानक गूढ़-गंभीर न होने से उसे एक बड़ा वर्ग फ़ौरी तौर पर सिरे से दरकिनार तो न कर देगा।

वैसे भी हिंदी साहित्य में लेखक कम हैं, आलोचक अधिक।

इस संशय के लिए BHU बार-बार मुझे कोसता रहा और मैं ख़ुद को। फिर एक अलमस्त शाम मैंने ख़ुद से सवाल किया, कि किवाड़ पर खड़ा मेरा सबसे ख़ूबसूरत मेहमान जो अभी बार-बार प्यार से कुंडी खटखटाता है, वह कल को ख़फ़ा हो गया तो मैं उसे वापस कैसे लाऊँगा। मैंने ख़ुद को याद दिलाया कि मैं एक ख़ुदग़र्ज़ लेखक हूँ और मैंने एक-एक अक्षर सिर्फ़ अपने और अपने पाठकों के आनंद के लिए लिखा है। मेरे पढ़ने वालों ने ही मुझे बनाया है, अन्यथा मैं कभी भी एक साहित्यिक महकमे से नहीं था।

आपने मेरी पहली दो किताबों के लिए मुझे जितना प्यार दिया है मैं उतने भर का तो शायद पात्र भी नहीं था।

मैं ख़ुद से कहता रहा कि मैं वही लिखता आया हूँ जो दिल-ओ-दिमाग़ ने मुझे उँगली पकड़कर लिखाया है। क़िस्से-कहानियों से मेरा नाता विक्रम-बेताल वाला रहा है। जब कोई क़िस्सा मेरे गले पड़ जाता है तो वो तब तक मेरा पीछा नहीं छोड़ता जब तक कि मैं दिल-भर उसे सुन-कह न लूँ। उसे कंधे पर टाँगकर घूमता फिरूँ और बतकही करूँ। फिर एक दिन जब

More Books - www.The-Gyan.in

वह पूरा हो जाए, वो मुझे मुक्त कर दे और अलविदा कहकर उड़ जाए। इस किताब को पूरा करके मैं BHU और बनारस को कंधे से उतार पा रहा हूँ।

बनारस मेरी ज़िंदगी का सबसे ख़ूबसूरत चैप्टर है। बनारस ने मुझे मुझसे मिलाया है। मेरी प्रेयसी से मिलाया है। मेरे अज़ीज़ दोस्तों से मिलाया है। यह किताब उन्हीं सब का कुल जमा-जोड़ है। हालाँकि इसका अधिकांश हिस्सा काल्पनिक है लेकिन अगर ये सब लोग न होते तो मैं इतनी ख़ूबसूरत दिल्लगी की कल्पना यूँ ही तो न कर पाता।

यह पहली किताब है जिसने मुझे ख़ालिस आनंद दिया है। जिसे लिखते हुए मैं छटपटाया नहीं। इसे लिखना बनारस के घाट पर गंगा जी की गोद में, खुले आसमान के नीचे, एक नाव में झूला-झूलने जैसा कुछ रहा है। इस किताब के वाक्य बनाना इतना सुकून भरा रहा है जैसे मैं अस्सी घाट पर बैठा घंटों गंगा जी में कंकड़ फेंक रहा होऊँ और लुप्प की आवाज से लहरें बनाकर पानी में तैरते हुए दीयों को बच्चे के पालने की तरह आहिस्ता से धक्का देते जा रहा होऊँ।

यह किताब इसी ख़्वाहिश में है कि ये आपको बे-इंतहा हँसाए, बनारस ले जाए और आपकी ज़िंदगी के सबसे सुकून भरे पलों से मिलवा लाए। इसके अतिरिक्त कुछ नहीं। हँसते-खिलखिलाते आप ख़ुद को पा भी जाएँ तो भोले बाबा का आशीर्वाद मानिए।

इससे इतर और कुछ हो भी क्यों, काहे से ई बनारस है महराज!

More Books - www.The-Gyan.in

सोलह नंबर, सुलेमानी उस्तरा और नयन मोंगिया

अमित कुमार पांडे। इलेक्ट्रॉनिक्स। फर्स्ट इयर। करेली, इलाहाबाद।

एल्यूमिनियम के बक्से पर लाल पेंट से बड़ा-बड़ा लिखा था। जब मैं IIT BHU के राजपूताना हॉस्टल के कमरा नंबर चार में घुसा, तो मेरा रूममेट अमित कुमार पांडे एल्यूमिनियम के संदूक पर बैठा दाढ़ी बना रहा था। बक्से पर जितनी बेडौल और अनगढ़ उसके नाम की लिखाई थी, उतना ही बेढंगा और बेहूदा वह खुद। उकड़ूँ बैठकर शीशे में झाँकता हुआ। नथुने फुलाकर नाक में बढ़ आए बालों की पड़ताल कर रहा था। उसके हाथ में जिलेट का ट्विन ब्लेड या ट्रिपल ब्लेड रेजर नहीं था बल्कि बाकायदा पुश्तैनी सुलेमानी उस्तरा था, जिसे वह पापा की शेविंग किट से चुराकर लाया था।

वे कभी दाढ़ी नहीं बनाने देते थे क्योंकि पढ़ने-लिखने की उमर में मूँछ-दाढ़ी घोटना आवारागर्दी की निशानी है। अब चूँकि पांडे IIT-JEE क्वालीफाई कर चुका था इसलिए IIT में घुसते ही, इस हिटलरी जोर-फरमान के विरोध में सामान-वामान खोले बिना ही, बड़े अधिकार से मूँछ घोट रहा था। वह उस्तरा ऐसे चला रहा था, जैसे साक्षात् छत्रपति शिवाजी हाथों में शमशीर लिए दुश्मन को बेरहमी से काट-बिछा रहे हों।

“हेलो! मैं निशांत। तुम्हारा रूम पार्टनर।” मैंने कमरे में अपना सामान रखते हुए कहा।

पांडे मुस्कुराते हुए चेहरे पर लगा हुआ फोम अपनी बनियान से पोंछते मुझसे हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ा। मेरे हाथ में किताब थी।

“फाइव प्वाइंट सम-वन पढ़ रहे हो?” पांडे ने जोर से हँसते हुए पूछा।

“हाँ। इंग्लिश नॉवेल पढ़ना अच्छा लगता है।” मैंने झेंपते हुए कहा।

“हाँ हाँ! हिन्दी-अंगरेजी तो ठीक है। हम तो किताब देख के हँसे।”

“क्यों, ऐसा भी क्या खराब है किताब में?”

More Books - www.The-Gyan.in

“अमा देखो निशांत बाबू! IIT में ऐसी टोपापंती नहीं होती, जैसा इस किताब में लिखा है। और खासकर BHU में। ये मउज वाली जगह है बे। यहाँ चार साल खाली बकचोदई होती है। अगर ये किताब पढ़कर, तुमको ये लग रहा है कि यहाँ आके तुम भी बड़का भारी हवाई जहाज उड़ा लोगे, नासा चले जाओगे या बड़ा भारी साइंटिस्ट बन जाओगे, तो ऐसा नहीं होने वाला। और हाँ, वो जो उसमें प्रोफेसर की लड़की के साथ मचाने वाला सीन है, वो तो यहाँ एकदम नहीं होने वाला।” पांडे वापस उस्तरा चलाने लगा।

“कुछ लोग यहाँ पढ़ने भी आते है। शायद नासा भी पहुँचते हों।” मैंने चिढ़ते हुए कहा।

“अब जो यदि तुम पढ़-लिखकर नासा पहुँचने के इरादे से आए हो तो फिर तुम सोलह नंबर कमरे तरफ मत जाना।”

“क्यों?”

“काहे से उधर एक से एक हरामी लौंडे रहते हैं। अभी कॉलेज में घुसे हुए जुम्मा-जुम्मा दो दिन हुआ नहीं और BF चल रही है वहाँ।”

पांडे फिटकरी से चेहरा रगड़ रहा था। कुछ देर पहले उसकी घनी दाढ़ी और मोटी मूँछ थी। अब नहीं थी। जैसे सन् 1990 में नयन मोंगिया हुआ करता था, पर अब नहीं है। जैसे एक जमाने में पेजर और वॉकमैन था और आज नहीं है। जैसे कभी बाबा सहगल था, अब नहीं है। वैसे ही पांडे की मूँछ दुनिया के मानचित्र से गायब हो चुकी थी। जैसे वह कभी थी ही नहीं।

“बढ़िया लग रहे हैं?” पांडे बिना मूँछ दाढ़ी के दमक रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे कुछ देर पहले अनिल कपूर फोम लगाए बैठा था। पानी मारा तो अंदर से संजय कपूर निकला।

बिना जवाब दिए मैं सामान लगाने लगा और उसकी सलाह को अपने दिल-ओ-दिमाग में पक्का कर रहा था—‘अब जो यदि तुम पढ़-लिखकर नासा पहुँचने के इरादे से आए हो तो फिर तुम सोलह नंबर कमरे तरफ मत जाना।’ मैंने खुद से तीन बार कहा।

तीन बार इसलिए क्योंकि मैं IIT BHU में बड़ी चमकदार उम्मीदों के साथ दाखिल हुआ था। पांडे से मिलने से पहले तक मेरी आँखें वैसे ही चमक रही थीं, जैसे आमतौर पर तंबाकू के विज्ञापन के किरदारों की चमका करती हैं। ‘मुँह में रजनीगंधा, कदमों में दुनिया’, ‘दिल बड़ा तो, तू बड़ा’, ‘ऊँचे लोग, ऊँची पसंद’, ‘दीवाना उड़ा रे, मस्ताना चला रे’। तमाम सालों से IIT में दाखिल होना मेरा सपना था। या यह कह लीजिए कि मेरे परिवार वालों का सपना था, जो मेरे कंधे पर कब लाद दिया गया, मुझे पता ही नहीं चला। जैसे विक्रम के कंधों पर बेताल लाद दिया गया था, मेरे कंधों पर IIT में पढ़ने का सपना टाँग दिया गया था।

मैं जहाँ भी जाता, यह बेताल मेरे साथ चलता और IIT मेरे दिन-ब-दिन की सनक का

More Books - www.The-Gyan.in

हिस्सा हो गया। पापा अक्सर मुझे स्कूटर पर IIT कानपुर घुमाने ले जाते और मैं वहाँ की हर एक चीज को कौतूहल से देखा करता।

अगर कोई लड़का मोटा चश्मा लगाकर, हाथ में इंजीनियरिंग ड्राइंग का ड्राफ्टर, चार्ट, कम्पास वगैरह लिए घूमता दिख जाता था, तो मेरा दिल-ओ-दिमाग बेइंतहा इज्जत से भर जाता था। इज्जत इसलिए क्योंकि मुझे लगता था, हो-न-हो यही लड़का एक दिन आगे चलकर अब्दुल कलाम की तरह अग्नि की उड़ान भरेगा। मिसाइलें बनाएगा। बड़ी-बड़ी इमारतें बनाएगा। क्या पता कोई नया मेटल ही खोज निकाले। स्वदेश के शाहरुख की तरह गाँव लौट के पानी का ट्यूबवेल चला दे। मंगल गृह पर जिंदगी खोज दे। अणु के भीतर से परमाणु नोच दे।

मुझे बुरा इस बात का लग रहा था रहा था कि पांडे इस बात की अहमियत को समझ नहीं पा रहा था कि वह किस गौरवशाली इंस्टीट्यूट का हिस्सा बन रहा है। बुरा मुझे इस बात का भी लग रहा था कि मैं ऐसा सोचने वाले लड़के के साथ कमरा शेयर करने वाला हूँ। और उन लोगों के साथ हॉस्टल शेयर करूँगा जो कॉलेज में घुसते ही BF देखने में लग गए। अरे! कुछ और भी कर सकते थे। डिपार्टमेंट देखने जाते। कंप्यूटर लैब हो आते या लाइब्रेरी ही टहल आते।

"लाइब्रेरी कार्ड इश्यू कराने चलोगे?" मैंने पांडे से पूछा।

"क्यों? अभी तो इनरॉलमेंट भी नहीं हुआ है, किताब कैसे मिलेगी?"

"मैंने सुना है कि अच्छी किताबें हमेशा जल्दी खत्म हो जाती हैं। मेरे एक बड़े भैय्या हैं जो IIT खड़गपुर से पढ़े हैं। उन्होंने कहा था कि अच्छी किताबें पहले ही लाइब्रेरी में छुपा देनी चाहिए। माने अगर फिजिक्स की किताब हो तो उसे नागरिक शास्त्र वाली अलमारी में जाकर सिविक्स की किताबों के बीच गड्डमड्ड कर दो। फिर जब लाइब्रेरी कार्ड मिले तो वहाँ से निकाल कर इश्यू करा लेना।"

"अरे नहीं खतम होंगी बे। कहे बौरिया रहे हो!" पांडे मेरे मास्टर प्लान को पूरी तरह खारिज करते हुए बोला। फिर शायद उसे इस बात का आभास हुआ कि मैं 'बे' कहने का बुरा मान गया हूँ।

"यार, देखो बुरा मत मानना बे। इलाहाबाद से है। अबे, तबे, कस-में हर बात में निकल आता है। मन में कुछ नहीं रखते। जो कुछ आए तो बक के बराबर कर देते हैं। कभी-कभी इस चक्कर में लभिड़ भी जाते हैं पर देखो हम यार हैं तो ऐसे ही। गाली-ऊली दे दें तो बुरा मत मानना। अब तुम रूममेट हो हमारे।"

"हम्म।" मैंने अनमने से कहा। "घर से कौन-कौन आया है?" मैंने बात टालने के लिए पूछा।

More Books - www.The-Gyan.in

"घर से कोई क्यों आएगा? बाउ ट्रेन में बिठाने आए थे। और बिठा के करेली वापस। तुम्हारे बाउ आए हैं क्या?"

"हाँ। मेस में खाना खा रहे हैं।"

"अबे यार तो पहले बताना था न! हम यहाँ दाढ़ी-मूँछ का बक्सा लिए हुए बैठे थे। नाउ की दुकान खोल के।" पांडे जल्दी-जल्दी अपना पुश्तैनी शेविंग किट समेटने लगा। "वैसे कहाँ से हो निशांत बाबू?"

"कानपुर।"

"कानपुर!"

"हाँ।" पांडे कानपुर कनेक्शन निकल आने से चहक रहा था। यह जबरन वाला कनेक्ट हम उत्तर भारत के लोगों को विरासत में मिला है। आप जहाँ-कहीं से भी हों, वहाँ उनका या फिर उनके ममेरे भाई की फुफेरी बहन का मुँहबोला ससुराल या बड़बोला मायका निकल ही आता है।

"अबे हम तीन साल कोचिंग पढ़े हैं कानपुर में! अनीस के यहाँ फिजिक्स। केमेस्ट्री पंकज के यहाँ और गणित बिश्नोई के यहाँ।" पांडे मेरे और करीब आ गया था और उसने मेरे कंधे पर गलबहियाँ डाल दी थीं।

"मैं भी वहीं पढ़ा हूँ। फिजिक्स लेकिन नारकर के यहाँ पढ़ता था।" मैंने दो फुट नीचे झुककर, गलबहियों से खुद को मुक्त करते हुए कहा।

"हम भी पहले वहीं फिजिक्स पढ़ते थे लेकिन एक बार एक लड़के से पंगा हो गया। हम साले को मजाक में बोल दिए कि मार देब, मर जाबो। वो साला दिल पे ले लिहिस। हम बोले ऐसा थोड़े होता है बे। इलाहाबाद में तो हर कोई ऐसे ही बोलता है। इसका मतलब ये थोड़ी है कि तुमको सही में मार देंगे। पर ऊ सरवा माना नहीं और डेली हमको लभेड़ने के चक्कर में कोचिंग के गेट पर खड़ा रहता था। इसीलिए हम कट लिए। लेकिन यार तुम कानपुर के लगते तो हो नहीं। कानपुर के लौंडे बोलते हैं तो दिल करता है बोलते ही रहें। हमारा एक कनपुरिया दोस्त बात-बात में बोलता था, अभी झपड़िया दिए जाओगे, तब पता चलेगा कि पंजीरी कहाँ बट रही थी। तुम 'मैं' बोलते हो। वहाँ 'हम' बुलाते हैं।"

पांडे ने मेरे कनपुरिये अभिमान को उँगली दिखा दी थी। "तुम हो वही, जिसमें आता है दही। माने कुल्हड़।" मैंने अपने डिफेन्स में, चटक कनपुरिया अंदाज सुनाया।

"काम पैंतिस हो गया भाईजी।" तख्त पर चढ़कर, पांडे ने उछलते हुए दूसरा कनपुरिया जुमला दिया।

"कुछ पल्ले पड़ रहा है कि अइसे ही औरंगजेब बन रहे हो!" मैंने भी तख्त पर चढ़कर,

More Books - www.The-Gyan.in

उसके नहले पर अपना दहला जमाया।

"ये मठाधीशी बंद करो बे! ज्यादा चौधराहट करोगे तो अबहिएँ पेल दिए जाओगे।" अब पांडे मेज पर चढ़ बैठा था।

"आता न जाता, चुनाव चिह्न छाता।"

"बाप मरे अँधेरे में, बेटा पावरहाउस।"

"हटिया खुली बजाजा बंद, झाड़े रहे कलक्टरगंज।"

"मरबे कम, घसीटबे ज्यादा, लंबे हुई जाओगे दो मिनट में।"

"पचड़े में पड़ोगे तो अभी लभेड़ हो जाएगी भाई जी।"

हम दोनों दे-दनादन कनपुरिया जुमलों का दहला-पकड़ खेल रहे थे। एक रैप-बैटल शुरू हो गया था। पांडे हनी सिंह, तो मैं बादशाह। वह रफ्तार, तो मैं बिलाल सईद। पांडे अचानक खेल छोड़कर किताबें सेट करने लगा।

"का हुआ बे! निकल गई सारी कलेक्टरी।" मैंने अगले जुमले की अपेक्षा में अपना जुमला फेंका, लेकिन पांडे और भी तल्लीनता से किताबें झाड़ने लगा। ऐसे, जैसे यहाँ कुछ हो ही नहीं रहा था।

"चिर गई? बोलो बे! अभी तो मउज आनी शुरू हुई है।" पांडे ने फिर भी जवाब नहीं दिया। मैंने पलटकर देखा तो पापा खड़े थे और शायद हमारी बकर पुराण का पूरा प्रवचन सुन चुके थे। वे मेस से खाना खाकर लौट आए थे। मैं पापा को यूँ देख रहा था जैसे वे परीक्षा में सिलेबस के बाहर से आया हुआ सवाल हों।

"नमस्ते अंकल जी!" पांडे किताबें लगाना छोड़कर पापा के पैर पर लगभग लोट ही गया।

"खुश रहो!" पापा ने दो कदम पीछे छिटककर कहा और फिर दे-दनादन रैपिड फायर राउंड खेला गया। पापा ने पांडे का पूरा फैमिली ट्री निकाल लिया। कास्ट से लेकर गोत्र तक। मोहल्ले से लेकर गली तक। 'बहन कहाँ ब्याही है' से लेकर 'मम्मी का मायका किधर पड़ता है' तक। पांडे भी ऐसा पलटीखोर निकला कि दो मिनट में 'मार देब, मर जाबो' से 'जी अंकल जी, एकदम ठीक बात है जी' में बदल गया। जितना बार वह एक लाइन में 'बे' घुसाता था, उससे अधिक बार हर एक लाइन में 'जी' सजाने में लग गया।

"दोनों लोग अच्छे से पढ़ाई करना। कॉलेज में तमाम लड़के होंगे जो दिन भर ऐसा दिखाएँगे कि वे कुछ नहीं पढ़ रहे हैं और फिर रात में लाइट बंद करके टेबल लैंप की रोशनी में घंटों रट्टा मारेंगे। ऐसे ही इलाहाबाद पॉलिटेक्निक में कल्पेश सिंह करके एक लड़का था। वो दिन भर सबको क्रिकेट खिलाता था और सबको गुडनाइट बोलकर, रात में कमरे की बत्ती

More Books - www.The-Gyan.in

बंद करके मोमबत्ती जलाके पढ़ता था।"

"अरे अंकल जी आप इलाहाबाद से पढ़े हैं!" पांडे पापा की बात बीच में ही काटकर फिर से जिजियाने लगा। तब तक, जब तक कि पापा अपना सामान उठाकर जाने न लगे। मैं बैग पकड़कर उनके पीछे हो लिया।

"मन लगा के पढ़ना और इस लड़के से थोड़ा बचके रहना। ये हमको कल्पेश सिंह जैसा ही खुराफाती लग रहा है। और देखो मूँछ भी घोटा हुआ है। पक्का आवारागर्द होगा।" पापा ने जाते-जाते कहा। वे जाते हुए कभी मुड़कर नहीं देखते थे क्योंकि उनका मानना था कि ऐसा करने से मन कच्चा होता है। "और हाँ, दिन-रात पढ़ना। यहाँ स्कूल जैसा हाल नहीं है। यहाँ तो सब लड़के अपने-अपने स्कूल के टॉपर रहे होंगे। एक बार आप ढीला पड़ गए तो कैच-अप नहीं कर पाएँगे। यहाँ भी फर्स्ट ही आना है आपको।"

***

मैं पापा को गेट तक छोड़कर आया तो कमरा नंबर तीन पर हाय-तौबा मचा हुआ था। मैंने पांडे से पूछा तो पता लगा कि मुम्बई से आई एक गोरी चिट्टी फैमिली इस बात पर अड़ गई है कि उनका लड़का संदीप सिंह के साथ रूम शेयर नहीं कर सकता।

"अरे एक झक्क गोरा, एकदम गुड्डे जैसा लड़का है। उसके बाउ बिदक गए हैं कि रूममेट चेंज करना होगा। बिचारा सारनाथ का ठेठ गँवई लड़का है। करिया ऐसा कि उसके आगे डामर फेल है।" पांडे ने मुँह बनाते हुए कहा। इस बात से अनभिज्ञ कि वह भी रंग से साँवला है गोरा नहीं। हालाँकि, यह अलग बात है कि हिंदुस्तान में हर साँवला इंसान खुद को 'गेंहुआ' कहलाना पसंद करता है।

"काला है तो क्या हो गया!" मैंने पांडे को झिड़कते हुए कहा।

"अरे बाहर मत निकलो। नहीं तो तुमई को पकड़ लेंगे। वे रूममेट ऐसे खोज रहे हैं जैसे आदमी अँधेरे में मोमबत्ती खोजता है।"

मैं पांडे की बात अनसुना करके बाहर आया तो वहाँ उसकी मम्मी मँझले सुर में सुबुक रही थीं। नजर मुझ पर पड़ी तो उनकी आँखें चमक-सी गईं।

"बेटे, वुड यू प्लीज शिफ्ट विद समीर?"

"नो, आई ऑलरेडी हैव अ रूममेट।"

"नहीं बेटे, आपके साथ उसका भी थोड़ा वेवलेंथ मैच हो जाएगा न। ही हैज नेवर बीन अलोन एक्चुली।" आंटी आगे बढ़ीं।

"नहीं आंटी, आई डोंट थिंक दैट वार्डन विल लाइक दिस।" मैं पीछे हटा।

More Books - www.The-Gyan.in

"ही स्पीक्स सम काइंड ऑफ भोजपुरी, आई गेस। समीर तो समझेगा भी नहीं बेटा।" आंटी और आगे बढ़ीं।

"ही विल बी टोटली फाइन, ट्रस्ट मी।" और मैं फटाफट रूम में अपने कमरे की ओर भाग लिया।

पांडे पेट पकड़े हँस रहा था। अट्टहास ऐसा कि स्वरूपनगर की रामलीला का रावण याद आ जाए। "हा हा, अबे हम बोल रहे थे कि उधर मत जाना। उसकी मम्मी को ऐसा लग रहा था कि भोजपुरी बोलने वाला लड़का उनके लड़के को कहीं खा-खू न जाए। वो जैसे ही बेसिन पर डेटॉल से सेब धोने आया, हम समझ गए कि ये लौंडा यहाँ गजब मजा दिलाने वाला है। अबे सेब को सेप्टिक से कौन धोता है बे! इसके बाप भी बद्धी वाली चेक पैंट पहनते हैं जैसे रबर का गुड्डा हों। चलो बे घूम के आते हैं। प्रसाद बता रहा था कि अबकी गजब-गजब नमूने आए है इस बैच में।"

"प्रसाद कौन?"

"अबे तुम प्रसाद से नहीं मिले। चलो सबसे पहले तुमको उसी से मिलाते हैं। वो देखो, कमरा नंबर ग्यारह के दरवाजे पर नीली स्लीवलेस में जो लौंडा खड़ा है, वो है प्रसाद। और उसके बगल में मोहित।"

पांडे ने आगे बढ़कर दोनों से हाथ मिलाया और हमारा इंट्रो जैसा कुछ करवाया। अगर मैं एक लाइन में प्रसाद का खाका खींचूँ तो उसकी सुपर पॉवर थी गप्प हाँकना और लंतरानी झोंकना। मोहित की खासियत थी दुनिया भर की बेइज्जती करके प्रसाद को ऊँचे चढ़ाना। एक पतंग तो दूसरा ढील। जो यह कन्नी तो वह छुड़ईया। राम मिलाई जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी। दोनों बचपन के जिगरी थे और केंद्रीय विद्यालय से पढ़े थे। BHU, अस्सी, लंका, सुसवाही में बचपन से खेले-कूदे थे और इनके चप्पे-चप्पे से वाकिफ थे।

वे दोनों एक-दूसरे को वैसे ही पूरा करते थे जैसे सौरव गांगुली के घटिया से शॉट को टोनी ग्रेग की छाती-पीट कमेंट्री पूरा करती थी। क्रिकेट के शौकीन लोगों को याद होगा कि गांगुली (जिसे कानपुर के लोग गाण्डुली बुलाते थे) जैसे ही स्टेप आउट करके लॉन्ग ऑफ की ओर गेंद तान देता था, टोनी ग्रेग चिल्लाना शुरू कर देता था, "ओह माय गॉड, प्रिंस ऑफ कलकीटा गोज अगेन, देयर द बॉल गोज डांसिंग, इट्स हाइ, इट्स हाइ, इट्स डांसिंग इन दी स्काई, ओह माय गॉड इट्स गोना वेनिश, वॉट अ क्लास प्रिंस ऑफ कलकीटा।" और इतने में ही कोई ओलंगा छाप क्रिकेटर कैच लपक लेता था और गाण्डुली कलकीटा वापस।

टोनी ग्रेग और गांगुली की तरह, मोहित और प्रसाद इतने घनिष्ठ थे कि हमेशा साथ ही पाए जाते थे। जैसे पुराने जमाने के राजा-महाराजा बिना दरबारी-कवि-चारण के अधूरे होते थे, प्रसाद मोहित के बिना अधूरा था।

More Books - www.The-Gyan.in

“और पांडे, BHU घूमे तुम लोग या अभी मौका नहीं लगा?” प्रसाद ने पूछा। वह हाथ झुलाते हुए हमारे पास आया।

“अभी अकेले सेफ होगा?” पांडे ने पूछा।

“सेफ काहे नहीं होगा जी! रैगिंग से डर रहे हो! कैसे इलाहबादी हो बे?”

“डर नहीं रहे हैं। देखो हमारा सीधा हिसाब है कि फैलने उतना ही दो जितना पतीले में झोल हो। उससे ज्यादा में तो हम उबल जाते हैं। सीधी-साफ बात है। मार देब, मर जाबो।”

“अरे पंडित! ढेर जोश में? नंगा करके दौड़ाते हैं यहाँ।” मोहित ने प्रसाद को बैक अप दिया।

“जुगनू बना देते हैं यहाँ। जुगनू समझते हो रे पंडित?” प्रसाद ने मोहित के तीर पे फॉलो अप लिया।

“जुगनू?” पांडे की त्योरी चढ़ी हुई थी।

“हाँ जुगनू! अगरबत्ती खोंस देगे पंडी जी, पिछवाड़े में। फिर नचवाएँगे बत्ती बुझा के।” प्रसाद ने कहा। “साजन-साजन तेरी दुल्हन, तुझको पुकारे आ जा।”

“आ जा। आ जा। आ...” मोहित ने ईको दिया।

“गीतकार आनंद बक्शी। संगीतकार अन्नू मलिक। सिंगर अल्का याग्निक। फिल्म आरजू। समझे पंडी जी?” प्रसाद ने कहा।

“रैगिंग?” पांडे दुबला हुआ जा रहा था और मैं भी।

“कानपुर होता तो मजाल किसी की जो कपड़े उतरवा लेता!” मैंने जी कड़ा करते हुए कहा। “इतने में तो कट्टा चल जाए बर्रा दो में।”

“अच्छा तुम कानपुर से हो?” मोहित जोर से हँसा। उसकी और प्रसाद की खुशी का ठिकाना नहीं था।

“क्यों, कानपुर में ऐसा भी क्या है?” मेरा दिल सिकुड़ के गुझिया हो रहा था।

“कानपुर वाले सबसे लंबा नपते हैं यहाँ। रोल कॉल होगी। सबसे पहिले कनपुरियों का ही नंबर आता है। पिछले साल विवेक मिसिर करके एक लड़का था कानपुर से। राघवेंदर सिंह ने उसको उमराव जान बना दिया था। बाकायदा पंद्रह दिन उसकी मुजरा ट्रेनिंग चली थी और फिर धनराजगिरी हॉस्टल में मैदान पे लाइट और तखत-उखत सजवा के उसका शो लगा था। पोस्टर छपे थे। कमरे-कमरे पर्चे बँटे थे – आपके शहर में पहिली बार, अखिल भारतीय महान उद्घाटन। कानपुर की कटीली नचनिया आ रही हैं, आवा देखा हो महराज।” प्रसाद बोला।

More Books - www.The-Gyan.in

"चिकना था वो भी।" मोहित ने मेरी तरफ आँख टेढ़ा करके कहा।

"ऐसे कोई जबरदस्ती थोड़ी करवा सकता है कुछ भी!" मैंने मजबूती से कहा।

"करवाने को तो करवा ही सकता है लेकिन उसकी नौबत ही क्यों आए। कुल मिलाके सैंतीस सौ पचास रुपये का इनाम हुआ था विवेक मिश्रा पे। चार-छह महीने घर से पैसा मँगाने की नौबत नहीं आई थी विवेक मिश्रा को। एक सौ एक का व्यवहार तो हम खुदे किए थे।" प्रसाद ने शान से कहा।

"तुम भी आए थे मुजरा देखने?"

"तब क्या! BHU घर है हमारा। राघवेंदर सिंह मेरा ही चेलवा है। उसका दो साल पहिले JEE निकल गया तो सीनियर हो गया। वो कोटा निकल गया था और हम यहाँ राव सर और झा सर के यहाँ दूसरी सीट पर बैठ के प्रियंका मोहन की कमर का टैटू ही देखते रह गए। तितली वाला। नहीं तो बेटा हम भी थर्ड इयर में होते। क्या पता आज हम तुम्हारे सीनियर होते और तुमको पंडी जी के साथ नचवा रहे होते।"

"मैं रैगिंग देने नहीं जाऊँगा। कम्प्लेन कर दूँगा अगर किसी ने ज्यादा हीरो बनने की कोशिश की।"

"हाँ और नहीं तो क्या! मजाक है क्या! मार देब, मर जाबो!" पांडे ने मेरी हिम्मत बढ़ाई।

"ये गजब कभी न करना पंडी जी। आते ही क्रांति की बातें न करो। क्रांति करवाओ पड़ोसी से, खुद मत करो। चाचा नेहरू बनके गुलाब का फूल खोंस लो और नेतागीरी करो, भगत सिंह बनके असेंबली में घुसोगे तो फाँसी पे लटका दिए जाओगे। रैगिंग नहीं देनी तो मत देना। बस मेरा और मोहित का नाम बता देना। कोई कुच्छो नहीं कहेगा।"

"रैगिंग तो यहाँ त्यौहार जैसे होता है जी। जज्बाती होके विभीषण छाप विलाप काहे कर रहे हो!" मोहित ने कहा।

"हम तो हर हॉस्टल में रैगिंग दे आए हैं। केमिकल सेकेंड इयर वाले खुद को बहुत तोप समझते हैं। गिलेस्पी-गिलेस्पी करके एक लौंडा है, घुँघराले बाल वाला। आइब्रो में बाली पहनता है आँख के ऊपर। साला हमको बोला कि शर्ट उतार। हम सीधे पैंट उतार दिए। चड्ढी भी खोलने ही वाले थे कि खुदई हाथ जोड़ लिया साला। हमारा रैगिंग ले रहा था, हम खुद उसका रैगिंग ले लिए।" प्रसाद बोला।

मैं चुपचाप उसे सुन रहा था और यह गुत्थी हल करने की कोशिश कर रहा था कि खुद की पैंट उतार देने से सामने वाली की रैगिंग कैसे हो गई।

हाँ पर इस बात का सुकून जरूर था कि प्रसाद और मोहित से दोस्ती हो गई और शायद

More Books - www.The-Gyan.in

अब रैगिंग से बच भी जाएँगे। प्रसाद मुझे बाकी के लड़कों से मिलाने ले जा रहा था पर मैं पंद्रह नंबर से आगे नहीं गया। मैं उसकी बात टाल गया। पांडे की हिदायत अभी भी मेरे दिल-ओ-दिमाग में सुरक्षित थी।

'अब जो यदि तुम पढ़-लिखकर नासा पहुँचने के इरादे से आए हो, तो फिर तुम सोलह नंबर कमरे तरफ मत जाना।'

मैंने कदम वापस खींच लिए और अपने कमरे में वापस आ गया। राजपूताना हॉस्टल दिन चढ़ते गुलजार हो रहा था। मैं आते-जाते लोगों को देख रहा था। तरह-तरह के लोग।

***

अगर आप यह सोच रहे हैं कि मैं सोलह नंबर में क्यों नहीं जाना चाहता था तो उसका जवाब मेरे बचपन की कंडीशनिंग में छुपा है।

मैं कॉलेज आया था तो कई सारे प्रिजम्शन-पूर्वानुमान के साथ। सोच रहा था कि असल में कॉलेज वही है या फिर उससे इतर कुछ और। मेरे लिए कॉलेज बस वही था जो लोगों से सुना था या फिर टीवी में देखा था। फिल्मों में, सीरियल में। थोड़ा-थोड़ा किताबों में।

काफी कुछ कॉलेज अपने दिमाग में भी बनाया था मैंने। जब मैं हर रोज बारह से चौदह घंटे फिजिक्स, केमेस्ट्री और मैथ की होली ट्रिनिटी के आगे माथा टेक-फोड़ रहा होता था तो फ्रस्ट्रेशन के बीच दिमाग में थोड़ा-सा कॉलेज सजा लेता था। ताकि मैं खुद को समझा पाऊँ कि कल सुबह भी पाँच बजे उठूँगा और रात ग्यारह बजे तक कम-से-कम छह-सात चैप्टर का रिवीजन जरूर करूँगा। फिर एक दिन IIT पहुँच जाऊँगा। वह सचमुच कितना सुखद दिन होगा!

मैं उन लोगों में था जो अपने चचेरे-मौसेरे भाई बहनों के लिए अजूबा होते हैं। जिन्हें वे कोसते भी हैं और मानते भी। मानते इसलिए हैं क्योंकि मैं पढ़ने-लिखने में सबसे अव्वल था। कोसते इसलिए हैं कि मेरी दुहाई दे-देकर मौसा और चाचा उन्हें खेलने नहीं जाने देते थे। लेकिन मजेदार बात यह थी कि आज राजपूताना हॉस्टल उन सारे लोगों से भरा पड़ा था जो अपने चचेरे-मौसेरे भाई बहनों के लिए दुहाई थे। मैं यहाँ पर किसी से भी अलग या बेहतर नहीं था।

पापा ने मेरी तालीम एक तगड़े फंडामेंटलिस्ट स्कूल में कराई थी। मुझे बचपन से शिशु मंदिरों, विद्या मंदिरों और सनातन धर्म विद्यालयों में पढ़ाया गया था जो मुझे संयम, संस्कार और अनुशासन का बेहतरीन कॉकटेल बनाना चाहते थे। इस कंडीशनिंग के हिसाब से, मैं उन लोगों में था जो अपने दोस्त भी संस्कारी होने, न होने का हिसाब लगाकर चुनते थे। मैंने शायद ही कभी ऐसे लोगों से दोस्ती भी की होगी जो गाली-गलौच करते हों (मैं आपको बता

More Books - www.The-Gyan.in

दूँ कि मैं कानपुर का रहने वाला हूँ। गाली के नाम पर मैंने अधिक-से-अधिक किसी को 'चूतिया' ही कहा होगा क्योंकि कानपुर वह जगह हैं जहाँ 'चूतिया' को गाली नहीं मानते। वहाँ गालियाँ जबान का आभूषण होती हैं। पर्सनालिटी का वजन होती हैं और आपके दिल में सामने वाले के लिए मुहब्बत कितनी गहरी है, इस बात का सबसे वाजिब पैमाना होती हैं)।

मुझमें कोई ऐब या बुराई नहीं थी। मैं उन लोगों में था जो सुबह-सुबह ब्रह्म मुहूर्त में उठते हैं। उठते ही माँ और पिता के चरण छूते हैं। और यदि सर्दी के दिनों में माँ और पिता अलसा के न उठे हों तो मुझमें वो जादुई शगल था कि मैं रजाई के अंदर से उनके पैर खोज निकालता, उन्हें प्रणाम करता और वापस रजाई ओढ़ा देता। उसके बाद दिन भर की घनघोर तपस्या पर लग जाता। अगर आपने बचपन में 'आदर्श बालक' वाला चैप्टर अपने स्कूल की किताब में पढ़ा हो तो मैं सचमुच वही लड़का था। मैं उसमें दी हुई एक-एक हिदायत को दिल से मानता और पूरा करता था।

यह इस बात की एक बड़ी वजह थी कि मैं सोलह नंबर में क्यों नहीं जाना चाहता था।

***

"अरे वाह! सब सामान सजा लिए। किताबें, पढ़ने की मेज, टेबल लैम्प, सब!" पांडेय दरवाजे पर खड़ा ऐसे खींसें निपोर रहा था जैसे उसने मुझे पता नहीं कौन-सा गलत काम करते पकड़ लिया हो।

"मुझे लगा कि खाली हूँ तो सामान वगैरह ही लगा लिया जाए। ज्यादा कुछ था नहीं तो निपट गया।" मैंने डिफेंड किया।

"हम तो मिल आए सबसे। सब लोग पूछ रहे थे कि रूममेट कहाँ है तुम्हारा?"

"अच्छा। उधर सोलह नंबर तरफ गए थे?"

"हाँ गए थे। विवेक मिला उधर। जबपलपुर से है। अखिल करके एक लड़का है, झाँसी से। विकास कपूर है एक, दिल्ली से।"

और फिर पांडे ने एक-एक करके सबका चरित्र चित्रण अपने टिपिकल इलाहाबदी अंदाज में प्रस्तुत किया।

"अखिल नाम से जो लड़का है उसका पूरे ब्रांच में सबसे अधिक हल्ला है। आते ही नाम भी पड़ गया है 'बॉन्ड'। बॉन्ड इसलिए, काहे से उसने नाइंथ क्लास में सेक्स किया हुआ है। सोलह नंबर में गर्लफ्रेंड-लड़की-माशूक वगैरह, यही सब बतकही चल रही थी। ज्यादातर लोग या तो नाड़े के पक्के हैं या फिर अपना हाथ जगन्नाथ हैं या फिर उनकी तरफ आज तक कोई लड़की घूरी नहीं। गर्लफ्रेंड भी किसी की है नहीं। ये लौंडा बात की बात में बोल दिया कि वो नाइंथ में सेक्स किया हुआ है। सब सन्न बटे सन्नाटा। इतने आराम से ऐसे सुर्री में बात

More Books - www.The-Gyan.in

छोड़ दिया कि सबकी आँखें बटन हो गई हैं। लेकिन लड़का हमको सही लगा। बारवीं के बोर्ड एग्जाम के साथ ही IIT निकाल दिया और बोर्ड में भी टॉप मारा। कोचिंग-ओचिंग भी नहीं किया। साला लग रहा है, हमीं तीन साल घिसा के यहाँ एंट्री ले पाए है।"

"छोड़ रहा होगा, ऐसे ही।" मैंने पूरी दृढ़ता से कहा।

"छोड़ काहे रहा होगा?"

"ऐसे IIT थोड़े ही निकल जाता है किसी का! नाइंथ में ये सब करने वालों का तो कतई नहीं। बोलने को तो कोई कुछ भी बोल सकता है। सब पढ़े होंगे रात-रात भर और यहाँ आके जीनियस बनते हैं कि हम तो कुछ पढ़ते-वढ़ते थे नहीं। बस लड़कीबाजी करते थे।"

"छोड़ रहा हो, हमारी बला से! निशांत बाबू। सच्चाई वाली दुनिया इतनी बोरिंग जगह है कि हम तो हर वो बात सही मान लेते हैं जिसको मानने में हमको मजा आए। हिंदी अखबार में संडे का रंगायन-रूपायन नहीं पढ़ते हो? संडे का अखबार बाकी हफ्ते के अखबार से दो रुपये अधिक कीमत का क्यों आता है? क्योंकि उसको पढ़ने में मजा आता है। अटल बिहारी बाजपेई के बूढ़े घुटने या नरसिम्हा राव के मुँह में क्या रखा है! लेकिन रणबीर और दीपिका का क्या चल रहा है, उसमें मौज है, तो है। अमिताभ का रेखा से चक्कर हो या न हो, हम तो उसे सच मान के चलते हैं।"

"तुम मानो तुमको जो मानना है।" मैं चिढ़कर किसी और काम में व्यस्त होने की कोशिश करने लगा।

"हाँ तो हम मान ही लिए। अब आगे सुनो। एक कोई विकास कपूर है, दिल्ली से। वो आया तो गजब तमाशा हुआ। कमरे इतने छोटे हैं कि उसकी मम्मी को लगा कि ये कमरा नहीं स्टोररूम होगा। और असली कमरा बाद में अलॉट होगा। बाद में पता चला कि ये सुस्ताने की टेम्प्रेरी जगह नहीं है बल्कि यही कमरा है और उसमें रूममेट अदद होगा। लड़का दिल्ली से है, बाप के फॉर्महाउस हैं चार-चार। मम्मी बिफर के वार्डन को हड़का दीं लेकिन उसके पापा गजब खुश। बोले कि अब इसको अकल आएगी। अब जब अपना कपड़ा खुद साफ करेगा, कूड़ा जैसी मेस में खाना खाएगा तब सही से इंसान बनेगा ये। मोटापा भी कम होगा।"

मैं पांडे के कौतूहल को देखकर यह समझने की कोशिश कर रहा था कि इसमें पांडे को क्या मजा आ रहा है। पर यह गुत्थी मेरी समझ के बाहर थी। पांडे आगे बढ़ा।

"विवेक से भी मिले। भाईसाहब बहुत तेज लड़का है। रॉक सुनता है।"

"रॉक सुनने में क्या भोकाल है भाई? मैं भी सुनता हूँ।"

"अच्छा! क्या सुनते हो?"

"वेंगाब्वॉइज, आतिफ असलम, स्टीरिओ नेशन।"

More Books - www.The-Gyan.in

"हाहा। समझ गए भाई तुम तो हमसे भी गए गुजरे हो। अबे वो प्रॉपर वाला सुनता है।" पांडे ने 'प्रॉपर' पर पूरा जोर दिया। 'प्रॉपर' बोलते हुए उसने दाहिने हाथ की पहली और चौथी अँगुली से डब्लू का निशान बनाया। जिसका मतलब रॉक था। "डेथ मेटल सुनता है। ब्रेक अप हो गया था न उसका।"

"ब्रेक अप का डेथ मेटल से क्या कनेक्शन?"

"अरे है यार। जिसका ब्रेक अप होता है वो डेथ मेटल सुनता है। मेटालिका, आयरन मेडेन वगैरह। वो खूब रॉक वगैरह।" पांडे ने जीभ निकालकर कहा। "काफ्का, दोस्तोवस्की, टॉलस्टॉय वगैरह सब पढ़ा हुआ है। एक नॉवेल भी लिख रहा है अपने ब्रेकअप पर। उसका निक-नेम पाब्लो है। बताओ भला!"

"क्या भला?"

"अरे! कितना सही नाम नहीं है? उसके बाउ एक चिलियन पोएट के नाम पर उसका नाम पाब्लो रखे। हमारे बाउ तो हमारा नाम अमित रख दिए क्योंकि दादा जी ने बड़े भाई का नाम सुमित रख दिया था। बताइए यह भी कोई बात हुई! मतलब हम दोनों क्या किसी हिंदी कविता की लाइने हैं कि राइम होना जरूरी है। तुकबंदी भिड़ाना जरूरी है? हम लोग के बाप लोग भी न, नाम रखने में भी मक्कारी करते हैं। तुम्हारा कोई बड़ा भाई है?"

"हाँ है।"

"हाँ तो उसका नाम पक्का प्रशांत होगा।"

"हाँ।" मैंने खीझते हुए कहा।

"देखा। हमको पहले ही पता था। ये आजकल के बाप लोग भी न। भगवान से मनाओ कि तुम्हारा छोटा भाई न आ जाए नहीं तो उसका नाम सुशांत धर देंगे। खैर छोड़ो। हाँ तो हम क्या कह रहे थे?"

"विकास कपूर और पाब्लो के बारे में बता रहे थे।" मैंने गुस्से में कहा।

"हाँ तो उनकी बात तो हो गई। आगे 18 नंबर कमरे में एक लड़का है। दीपेंद्र कुमार। पाँच साल में IIT निकाला है। जैसे किसी सरकारी पंचवर्षीय योजना के तहत दाखिला मिला हो, इतना बूढ़ा दिखता है कि उसके रूममेट को लगता है कि उसे फोर्थ इयर के सीनियर के साथ कमरा अलॉट हो गया है। मेमने जैसा बैठा रहता है। दीपेंद्र भी ऐसा हरामी है कि उस बेचारे का दो दिन से रैगिंग ले रहा है। बाल में मशीन ऑयल लगवा के बीच से माँग निकलवा दिया है। उसके अगले वाले कमरे में एक साउथ इंडियन रेड्डी है। वो तो जब से आया है यहाँ-वहाँ सबटाइटल खोज रहा है। कुछ पल्ले नहीं पड़ रहा। उसका रूममेट झारखंडी है। भगवान जाने कौन कबीले से है। बोलता कम है, घूरता जादा है। कल सुबह तक या तो

झारखंडी बचेगा या रेड्डी।"

पांडे तमाम देर तक हर कमरे के लड़के का चरित्र-चित्रण करता रहा। मैं उसे अनमने सुनता रहा। जब तक कि वह ऊँघते हुए सो न गया।

पापा ने ट्रेन से फोन करके बताया कि वे कानपुर पहुँचने वाले हैं। साथ ही फोन रखते-रखते दुबारा हिदायत दी, "वो जो तुम्हारा रूममेट है, उस लड़के से थोड़ा बचकर रहना। क्या नाम बताया था? हाँ, अमित कुमार पांडे। बहुत चंट लड़का है। और हाँ, पढ़ाई लिखाई अभी से शुरू कर देना। जो शुरू में खींच ले गया, वही लड़का आगे निकल जाएगा।"

More Books - www.The-Gyan.in

ई बनारस है महराज!

अगले दिन दो बार इंडक्शन हुआ। ऑफिशियल इंडक्शन वाइस चांसलर पवन मिश्रा की तरफ से और अन-ऑफिशियल इंडक्शन कबाड़ी बाबा की ओर से। दोनों अपनी-अपनी तरह से IIT BHU के कर्ता-धर्ता, हमें इंडक्शन में BHU और IIT से रू-ब-रू करा रहे थे। BHU में, यह एक बिन-कहीं बतकही थी कि यहाँ लड़कों की पढ़ाई-लिखाई और रोजमर्रा की जिंदगी कबाड़ी के चलाए चलती थी। हालाँकि पवन कुमार मिश्रा को लगता था कि IIT BHU के असली झंडाबरदार वही हैं।

जैसे बनारस के असली करता-धरता औघड़ शंकर है, काशी नरेश तो बस नाम के हैं। ये पवन मिश्रा ही थे जिन्होंने IT BHU को IIT BHU बनाया था और वे इसे एक वर्ल्ड क्लास इंस्टीट्यूट बनता देखना चाहते थे। हालाँकि कबाड़ी को लगता था कि IIT बन जाने से धीरे-धीरे इस इंस्टीट्यूट की आत्मा मर जाएगी। लेकिन पवन मिश्रा का सीधा-सा मत था कि जब यहाँ एडमीशन IIT JEE के एग्जाम से होता है तो इसे IIT का दर्जा न दिए जाने की कोई वजह नहीं है। लड़के मलाल न करते रह जाएँ कि JEE के एग्जाम में, केमेस्ट्री में मोल कॉन्सेप्ट वाला सवाल गलत न हुआ होता, या फिर फिजिक्स में पुली पर फोर्स सही दिशा में लगाया होता तो वो आज IIT कानपुर में बैठे होते। पवन मिश्रा ने लंबी लड़ाई लड़ी और वे इसे IIT बना ले गए।

स्वतंत्रता भवन ऑडिटोरियम में पवन मिश्रा के स्पीच के बाद जिमखाना मैदान पर कबाड़ी बाबा के अन-ऑफिशियल भाषण की बारी थी। कबाड़ी हमेशा BHU में साइकिल पर बोरी लादे पैडिल हाँकते दिख जाता था। किसी अघोरी की तरह। शरीर पर आधी बाँह का कुर्ता, जो टाँक से एक फुट छोटा था। जेबें कुर्ते से बाहर, जीभ निकाले, चिढ़ाती हुई। कंधे पर यहाँ-वहाँ रफू। धूल-धूसरित, पके-बिखरे बाल, जर्दे से रँगे और गालियों से सजे, लाल-भूरे होंठ। बोलता था तो जैसे एक-एक शब्द अच्छी तरह चबा-चबाकर बोल रहा हो।

"गाँजा पीए राजा, बीड़ी पीए चोर

तंबाकू खाए चूतिया, थूके चारों ओर

बोलो क्या समझे?" कबाड़ी ने सवाल किया। लड़कों ने 'न' में मुंडी हिला दी।

More Books - www.The-Gyan.in

"डाकिया लाया डाक,

भूतिया लाया भूत।

लाख टके का सवाल है,

कि चूतिया लाया... ?

बोलो क्या समझे?" कबाड़ी ने फिर से सवाल किया। लड़कों ने फिर से 'न' में मुंडी हिला दी।

"छिनरो के! सब चूतिया ही आए हैं क्या इस बैच में?" कबाड़ी ने निराश होते हुए कहा।

"अच्छा पवन मिश्रा ने जो बोला वो समझ आया?"

लड़कों ने 'हाँ' में सर हिलाया। कुछ एक ने पवन मिश्रा के स्पीच के हाइलाइट्स भी गिना दिए– IT BHU, IIT बन गया है। अब हमें 450 करोड़ की ग्रांट मिलेगी। BHU की अपनी हवाई पट्टी बनेगी। लड़के फॉरेन एक्सचेंज में पेरिस, इटली, बेल्जियम और सिंगापुर जा सकेंगे। फेसबुक और गूगल ने पिछले साल ग्यारह लड़कों को 50 लाख सालाना से अधिक पैकेज पर हायर किया। BHU का एक्सटेंशन होगा, छह हजार एकड़ में 'स्टेट ऑफ द आर्ट' कैम्पस बनेगा।

"पवन कुमार मिश्रा को जब चुन्ने काटते हैं तो ऊ मेहरिया की तरह रोते हैं, ई बताया कि नहीं?" कबाड़ी ने पूछा। "अच्छा अउर ई बताया कि डीन अनिल यादव, पवन मिश्रा की बीवी की चोलिया का हुक लगाते पकड़े गए थे?"

"नहीं ये तो नहीं बताए।" फर्स्ट इयर केमिकल के झुंड में से आवाज आई। कबाड़ी बरगद के चबूतरे पर से नीचे उतर आया और तंबाकू थूककर बनियान के छोर से मुँह पोंछने लगा।

"हाँ तो ई काहे बताएँगे छिनरो के! देखो बेटा पहला बात ई कि पवन कुमार मिश्रा हैं बक्चोनहर। दूसरका ई कि BHU बनारस में सबसे वर्ल्ड भेस्ट अन्भर्सिटी है। तीसरका बात ई कि तुम लोग का खुश किस्मती है कि तुम यहाँ अडमीसन पाए हो। काहे से इसलिए कि तुम लोग IIT भी निकाल लिए और बनारस की शरण में भी आ गए। बनारस ऊ जगह है, जहाँ आदमी खुशी-खुशी भोले बाबा की छाया में रहता है और चौड़ में नेतागीरी करता है। यहाँ भले अपनी दुकान पे कस्टमर खड़ा हो, आदमी, बुजरो का, उसे छोड़ के, घंटों सड़क पे नेतागीरी करता फिरेगा। देखने को, कि सरकारी नाला कहाँ खुद रहा है। यहाँ हर कोई गुरु है, चेला कोई नहीं है। पवन मिश्रा के भेजे में ई बात नहीं घुस सकती क्योंकि पवन मिश्रा असली बनारसी हइये नहीं। उसको लगता था कि IIT बने बगैर इस इन्स्टीटयूट का कुछ नहीं हो

More Books - www.The-Gyan.in

सकता। छिनरो वाले को कउन समझाए कि ये अन्भर्सिटी को सौ साल से ऊपर हो गया है। यहाँ से ऐसे-ऐसे चउचक लड़के निकले हैं। एकदमे बम्पर। प्रतिभाशाली। काहे से प्रतिभा जो है न गुरु ऊ भोले बाबा का आसिरबाद है। गियानी तो दुनिया में हर कोई है। लेकिन हर किसी के सर पे औघड़ संकर का हाथ नहीं होता।"

और ये कहते-कहते कबाड़ी न जाने कौन-सी दुनिया में निकल गया। असर न जाने किसका था। गाँजा का, या जर्दा का, या भाँग का। लेकिन कबाड़ी धारा-प्रवाह बोले जा रहा था। हम सब उसे ऐसे सुन रहे थे जैसे बुद्ध सारनाथ के टीले पर खड़े होकर उपदेश दे रहे हों और सभी बौद्ध भिक्षु हो गए हों। कबाड़ी हमें बनारस के DNA की पूछ पकड़ा रहा था और हम उसे पतंग की डोर की तरह समेटते जा रहे थे। बनारस की पतंग हवा में ऊँची तन गई थी। कबाड़ी अपने अदाज में केदारनाथ सिंह की कविता 'बनारस' कहने लगा –

"इस शहर में बसंत
अचानक आता है
और जब आता है तो मैंने देखा है
लहरतारा या मड़ुवाडीह की तरफ से
उठता है धूल का एक बबंडर
और इस महान पुराने शहर की जीभ
किरकिराने लगती है

जो है उ सुगबुगाता है
जो नहीं है उ फेंकने लगता है पचखियाँ
आदमी दशाश्वमेध पर जाता है
अउर पाता है घाट का आखिरी पत्थर
कुछ और मुलायम हो गया है
सीढ़ियों पर बैठे बंदरों की आँखों में
एक अजीब-सी नमी है
और एक अजीब-सी चमक से भर उठा है
भिखारियों के कटरों का निचाट खालीपन

तुमने कभी देखा है

खाली कटोरों में बसंत का उतरना!

ई शहर इसी तरह खुलता है

इसी तरह भरता

और खाली होता है ई शहर

इसी तरह रोज-रोज एक अनंत शव

ले जाते हैं कंधे

अँधेरी गली से

चमकती हुई गंगा की तरफ।"

"बनारस की बात ही अलग है" पांडे बोला। उसके चेहरे पर अजीब-सा वैराग्य था। मंद-मंद वाली मुस्कराहट थी। या भगवान जाने कुछ नया जान लेने का और्गाजम ही था। वह कबाड़ी की ज्ञानधारा और बनारस की महिमा में बहता हुआ फ्री फ्लोट कर रहा था।

"यार ये कबाड़ी आदमी तो मजेदार है। कितनी सही बात बोला है। नहीं?" उसने प्रसाद से पूछा।

"पंडी जी वो खाली बकचोदी कर रहा है। एक नंबर का चरसी है। आंय-बांय-सांय बकना उसका रोज का काम है। इतना सेंटियाओ मत उसकी ज्ञानबाजी पे।" प्रसाद ने कहा।

"ठीक ही तो कह रहा है वो, हर एक बात।"

"घंटा सही कह रहा है। वो दिखता जरूर फक्कड़ है लेकिन एक नंबर का प्रपंची है। लंका गेट पर उसका चार तल्ले का मकान है। उसका कहानी सुनोगे तो हाथ में आ जाएगी पंडी जी!" मोहित ने प्रसाद के समर्थन में कहा।

"कबाड़ बेचने वाले का चार तल्ले का मकान?" पांडे ने हैरान होते हुए पूछा।

"ब्लू फिल्म बेचने आता था BHU में। पंद्रह साल पहले। तब इंटरनेट था नहीं। टेरा पैट्रिक का जमाना नहीं था, तब खाली तारा पत्रकार की सीडी आती थी। 'एक्स्ट्रा करीकुलर एक्टिविटी' का अकेला सप्लायर यही था। जैसे इंडिया में पॉप बप्पी लहरी लाया वैसे BHU में हरामचोट्टई यही लाया। वहाँ से जो इसकी शुरुआत हुई है फिर ये रुका नहीं। नॉटी अमेरिका से भी ज्यादा नॉटी है वो।" प्रसाद ने कहा।

"माने?"

"माने ये, पंडी जी, कि BHU वालों का गूगल भी यही है, विकीपीडिया भी और अमेजन भी। जो माँगोगे जुगाड़ करवा ही देगा। पिछले सालों के एग्जाम पेपर से लेकर सेकेंड हैंड किताब तक। एग्जाम की डेट से लेकर फेल-पास की खबर तक। मैगी बनाने के

More Books - www.The-Gyan.in

लिए केटल, हीटर से लेकर गर्मी में भाड़े के कूलर तक। साला सब कुछ घंटे भर में दरवाजे पे लाकर धर देता है। कबाड़ और सेकेंड हैंड सामान बेच-बेच के करोड़पति हो गया है। यही कर-कर के ये दुनिया का पहला कबाड़ी होगा जिसका चार तल्ले का मकान है", मोहित ने कहा।

"गजबी खोपड़ी है ये", पांडे चमत्कृत हो उठा था।

"और नहीं तो क्या! खोपड़ी भिड़ा-भिड़ा के ही BHU का कर्ता-धर्ता बना बैठा है। ये बात ठीक है कि यहाँ कबाड़ी के बगैर सर्वाइव करना असंभव है लेकिन ये भी समझ लो कि ये एक नंबर का हरामी और लऊँडियाबाज है। कौन लड़की किस लड़के से फिरी में समोसा खा रही है, से लेकर वो किसके घुटनों के बीच उठक-बैठक कर रही है, उसका हिसाब भी रखता है ये। होटल, लॉज, गेस्ट हाउस, मेडिकल स्टोर, सर सुंदर लाल अस्पताल, हर जगह एक-एक जोड़ी कान धराया हुआ है इसने", प्रसाद ने कहा।

"बनारसी खतरनाक होते हैं बे", पांडे का मुँह मछली जैसा गोल हो रहा था।

"और नहीं तो क्या!" मोहित पांडे को लगभग धिक्कारते हुए बोला। "पंडी जी तुम्हारे जैसे लणभग-सियार लोग ही झूठ-मूठ का हल्ला बना के रखे हैं बनारस का। गंगा नहाने आते हैं और लंगोटी के साथ गोटी भी चोरवा के वापस।"

"यार लेकिन जो भी बोलो, बनारस में अपना अलग चार्म है तो है।"

"चार्म तो है", प्रसाद बोला। "लेकिन चार्म हर गली नुक्कड़ ऐसे पंजीरी की तरह नहीं बट रहा है। ऐसे हर बात पे आश्चर्य चकित होके मुँह बाए खड़े हो जाओगे तो कोई माणिकचंद थूक के निकल जाएगा मुहवा में।"

"हम्म, समझ गए", पांडे आँख बंद करके मुँह तिरछा करके बोला।

"क्या समझ गए?"

"मतलब के बनारस एक फील है", पांडे कबीर हो रखा था। वह बनारस की महिमा के खिलाफ एक लव्ज सुनने को तैयार नहीं था। जैसे उसने अपने कान पर एक बनारसी दरबान बिठा रखा हो, भीतर वही जाएगा, जो बनारस का गुणगान हो। हम तीनों पांडे के दार्शनिक स्वरूप को देखकर लोटपोट हो रहे थे। पांडे किसी अलग प्लेन-ऑफ-थॉट पर निकल चुका था और उधर कबाड़ी केदारनाथ सिंह की कविता के सहारे बनारस के बारे में अपने ज्ञान दर्शन में धाराप्रवाह तल्लीन था।

"इस शहर में धूल

धीरे-धीरे उड़ती है

धीरे-धीरे चलते हैं लोग

More Books - www.The-Gyan.in

धीरे-धीरे बजते हैं घंटे
शाम धीरे-धीरे होती है

ई धीरे-धीरे होना
धीरे-धीरे होने की सामूहिक लय
दृढ़ता से बाँधे है समूचे शहर को
इस तरह कि कुछ भी गिरता नहीं है
कि हिलता नहीं है कुछ भी
कि जो चीज जहाँ थी
वहीं पर रखी है
कि गंगा वहीं है
कि वहीं पर बँधी है नाव
कि वहीं पर रखी है तुलसीदास की खड़ाऊँ
सैकड़ों बरस से"

"तो बकचोदी का सार ये कि ई रजा बनारस है। अब जो इहाँ आ गए हो पार लगोगे ही लगोगे।" कबाड़ी ने श्री-बनारस-नारायण कथा का पहला अध्याय समाप्त किया।

इसके बाद अन-ऑफिशियल BHU दर्शन हुआ। कबाड़ी हमें इसके बिल्डिंग-डिपार्टमेंट, प्रोफेसर-चपरासी, मेस-कैंटीन, मैदान-उजाड़, सीनियर-जूनियर से लेकर लंका-सुसवाही तक का ओर-छोर बता-समझा रहा था। उसका लंबा मोनोलॉग बोर्ड एग्जाम के सबसे कठिन विषय की उस कुंजी की तरह मालूम होता था जिससे एग्जाम में छः-आठ सवाल तो फँसते ही फँसते है। जिसे एग्जाम के ठीक पहले दिल-ओ-जान से घोट लेने का मन होता था। BHU की लंबाई-चौड़ाई नापते हुए उसका गुणगान करता हुआ कबाड़ी कभी तुलसीदास-सा महाकवि मालूम होता तो कभी सुरेंद्र मोहन पाठक-सा तिलिस्मी जादूगर। उसके पास बिहारीलाल के अलंकार भी थे और काशीनाथ सिंह की गालियाँ भी। रीति कालीन हिंदी साहित्य की अतिशयोक्ति भी और छायावाद की रियैलिटी भी।

कबाड़ी के श्रीमुख से श्री-बनारस-नारायण कथा का दूसरा अध्याय कुछ इस प्रकार है —

"ये इलेक्ट्रॉनिक अभियांत्रिकी बिभाग है। HOD हैं शांतनु मुखर्जी। महा सज्जन आदमी हैं। दिन में जैसे-तैसे डिपार्टमेंट हाँकते हैं और शाम के बाद संकट मोचन मंदिर के

More Books - www.The-Gyan.in

महंत हो जाते हैं। काहे से इनके दादा इस मंदिर के मुख्य महंत थे और बाप काशी विश्वनाथ के। चार साल डायोड, ट्रायोड, ट्रांजिस्टर और ट्रान्सफार्मर का महिमामंडन ऐसे बुझाएँगे जैसे रामचरितमानस का सुंदरकांड। इनके हिसाब से दुनिया में दुइए बात सत्य है। एक तो हरि नाम और दूसरा इलेक्ट्रान-प्रोट्रान-न्यूट्रान। इनके पेपर में पढ़-लिख के अपना टाइम भेस्ट मत करना। एगदम लप्पो पेपर आता है। पिछले तीन साल के एग्जाम पेपर लगा लेना। बुजरो का अस्सी परसेंट फँसेगा ही फँसेगा। और अगर ऊ भी करने का मन न हो तो आंसर शीट के हर पन्ना का ऊपर, दहिना वाले कोना पर 'ओम हनुमतए नमह' लिख देना। कम-से-कम फेल तो नहीं किए जाओगे। और आखिर में कबाड़ी का महामंत्र। इनकी क्लास में चाहे जो भी करना लेकिन प्रॉक्सी मत मारना। झूठ, नकल और गलत काम से सख्त नफरत है। नप गए तो फिर भाइस चांसलर पवन कुमार मिश्र का बाप भी बचा नहीं पाएगा।"

"उ जो सफेद शर्ट में जा रहे हैं, वो हैं पंकज मिश्रा। भगवान जाने क्या दुख है इस आदमी को। क्लास में इनका आधा बात इसलिए नहीं समझ आएगा क्योंकि साला नाक से बोलता है और आधा बात इसलिए नहीं समझ आएगा क्योंकि नाक अधिकतर जुकाम से जाम रहता है। भद्दर गर्मी में भी वही हाल रहेगा। इसीलिए नोट्स लेने की कोशिश न करना। पूरा डिपार्टमेंट आज भी रिचा शर्मा के चार साल पुराने नोट्स की फोटू-कापी से पढ़ता है। इनका टेप रिकार्डर आज भी चार साल से वइसहे बज रहा है। पहला सेमेस्टर कइसेट का साइड ए और दूसरा सेमेस्टर कइसेट का साइड बी। कुमार सानू, अलका याग्निक। उदित नारायण, कविता कृष्णमूर्ती।"

"वो नटुआ देख रहे हो? पूरे बिएच्चू का सबसे हरामी लैब असिस्टेंट है। ई बउचट साला मुक्तिबोध की कविताओं से भी अधिक जटिल है। बिचित्र है। चार साल में इससे बिना डसाए निकलना उतना ही मुश्किल है, जैसे साँप-सीढ़ी में बिना साँप कटाए सौ लंबर तक चढ़ जाना। लेकिन कबाड़ी के पास इसका रामबाण इलाज है। इसके नाम के आगे जी लगाओ और नाम के पीछे भी जी लगाओ। इतना इज्जत दो जितना साला अपने जीजा को देता है, दामाद अपने ससुर को देता है और औरत अपने दर्जी को देती है। गारंटी है कि प्रैक्टिकल एग्जाम में सबसे कठिन से कठिन सर्किट भी ढाई मिनट में तुम्हारी डेस्क पे आके सेट करके जाएगा और टीचर को पतइए नहीं चलेगा। आनन-फानन में पूरे सर्किट बोर्ड पे बिजली ऐसे दौड़ा देगा, जैसे स्वदेश का शाहरुख खान हो।"

"ओ हैं डीन अनिल यादव। इनके बारे में बताए थे न कुछ देर पहिले? अरे वोही जो वाइस चांसलर पवन कुमार मिश्रा की बीवी की चोली में हुक लगाते पकड़े गए थे। बस इनका परिचय इतना ही है।"

"बस इतना ही क्यों कबाड़ी बाबा?" भीड़ में से आवाज आई।

"काहे से इसके बाद पवन कुमार मिश्रा ने इनको ऐसा रगड़ा कि आज तक हाय हुक

More Books - www.The-Gyan.in

हाय हुक हाय हाय कर रहे हैं'।

"कबाड़ी बाबा हुक वाली कहानियाँ कुछ और हो जाएँ?" भीड़ बोली।

"अभी जब तुम लोग सेकिंड इयर हो जाओगे तब तुमको ये सब खबर मिलेगी।"

"अच्छा बस इतना बता दो कि अंतरी सिंगल है या सेट है?" पांडे ने सवाल किया।

"काहे बे? सिंगल होगी तो तुम पटा लेओगे? ससुर अभी जुम्मा-जुम्मा चार दिन हुए नहीं और फर्स्ट इयर की सबसे माल लड़की पे बुकिंग देने का जुगाड़ हो रहा है। तुम्हारा कुछ न होएगा लिख के ले लेओ।"

"अरे बता तो दो। नहीं होगा तो न सही। एफर्ट पूरा रहेगा", भीड़ ने दृढ़ता से कहा।

"देखो ई गुरु मंत्र सिर्फ तुम लोग को बता रहे हैं। किसी और बैच को नहीं बताए हैं। ध्यान से सुन लेना। पिछले पंद्रह सालों में हम BHU की सैकड़ों लड़कियों का सैम्पल एनालाइज किए। उसका निचोड़ ई है कि यहाँ सिर्फ उन्हीं लड़कियों पे लाइन मारना जो कम खूबसूरत हैं। जिन्हें पहले सेमेस्टर में कोई लाइन नहीं मारेगा क्योंकि पूरा-का-पूरा बैच सबसे भैरंट माल लड़कियों के पीछे लगा रहेगा। छह महीने में इन कम खूबसूरत वाली लड़कियों का सेल्फ एस्टीम वक्त से पहले बूढ़ा होकर राखी गुलजार हो जाएगा। ये कातर निगाहों से भेट करती रहेंगी कि इनके लिए कोई करन या अर्जुन आएगा पर ऐसा बिलकुल नहीं होगा। ऐसे नाजुक मौके पर सेकेंड सेमेस्टर की झुंझलाहट के बीचों-बीच जो भी लड़का उनकी पथराई हुई आँखों और पके हुए बालों पे गजल कहेगा, वो उसका पर्सनल गुलजार हो जाएगा। सुकून से चार साल कट जाएँगे और कॉलेज खतम होने पर आपसी सूझबूझ से हो जाएगी नमस्ते।"

"और जो लड़कियाँ भैरंट माल हैं वो?" भीड़ अधीर हो रही थी। कुलबुला रही थी। कसमसा रही थी। वो जीवन का गूढ़ ज्ञान जान लेना चाह रही थी।

"वो चार साल में में पाँच ब्वायफ्रेंड, तेरह भाई और और छह पक्के वाले दोस्त बनाएँगी। इन पाँच, तेरह और छह— यानी चौबीस— लड़कों के मोहोब्बत का करियर कुमार गौरव की तरह उठेगा और रोनित राय की ही तरह घुस जाएगा। ब्वायफ्रेंड, भाई और दोस्त आपस में आइडेंटिटी बदल-बदल के कन्फ्यूज हो जाएँगे कि साला वो हैं क्या आखिर? लड़की से उनका रिश्ता क्या है? भाई? दोस्त? आशिक? आदमी? पजामा? सलवार? कददू? तरोई? या घुइंया?"

"फिर?"

"फिर? फिर काँपती हुई आवाज में भैरंट वाली लड़की इनसे कहेगी—देखो हर रिश्ते को नाम देना जरूरी नहीं होता है। इतने में थर्ड इयर खतम होने वाला होगा और प्लेसमेंट का

More Books - www.The-Gyan.in

सीजन आने वाला होगा।"

"फिर?" जनता जिज्ञासा से पगला रही थी।

"फिर होगा ई कि ये थर्ड इयर खतम होते-होते जीवन से निराश हो चुके होंगे। कसम खाएँगे कि अब ये सबसे अच्छी नउकरी लगवा के उस लड़की को गिल्टी फीलिंग करवा लेंगे। और ई उठा लेंगे यशवंत कानितकर की 'लेट अस सी'। आधी किताब पार करते ही कोई ज्ञानी लड़का इन्हें ज्ञान देगा कि आजकल सी प्लस प्लस का स्कोप है। सी तो पुरानी हो गई। तो ये बागड़ बिल्ले झपटेंगे प्लस प्लस पर। लेकिन फिर कोई समझाने आएगा कि बिना सी पढ़े, प्लस-प्लस तो समझ आने से रही। फिर कोई सीनियर ज्ञान देकर चला जाएगा कि असली एक करोड़ की नौकरी तो आजकल नेटवर्किंग और डेटा स्ट्रक्चर की किताब पढ़ने से ही लग पाएगी।"

"फिर?" भीड़ अधीर होकर एक करोड़ की नौकरी का राज जान लेना चाहती थी।

"फिर होगा ये कि डेटा स्ट्रक्चर हर चूतिये को समझ नहीं आती और ई सरउ हिम्मत हार के टीसीएस या इन्फोसिस के ट्रक में बैठकर चले जाएँगे बंगलौर।"

इस तरह श्री-बनारस-नारायण कथा का दूसरा अध्याय कबाड़ी ने बेहद निर्ममता से समाप्त किया और IIT के छात्रों का एक करोड़ की नौकरी का सपना चकनाचूर कर दिया। उसने साइकिल हाँक ली। हम उसके पीछे-पीछे हो लिए। वह हमें BHU घुमाता रहा। जैसे कभी हैमलिन का एक पाइडपाइपर बाँसुरी बजाते हुए पूरे शहर के चूहों को मोह ले गया था।

हम देखते सुनते रहे। मंत्रमुग्ध। गर्ल्स हॉस्टल और उसके बाजू वाला चौराहा जिसे PMC यानी पिया मिलन चौराहा भी कहते थे। जहाँ एक-से-एक प्रेम कहानियों की इब्तदा हुई। कुछ फली-फूलीं और बाकी वीरगति को प्राप्त हुईं। लिम्बडी कॉर्नर, जहाँ सारा BHU चाय पीने, सुस्ताने, आँख सेंकने, आँख मूँदने और अलसाने आता है। फैकल्टी ऑफ आर्ट्स, फैकल्टी ऑफ म्यूजिक, फैकल्टी ऑफ लॉ। धनराजगिरी, राजपूताना, बिरला, ब्रोचा, रुइया हॉस्टल। आप चलते जाइए और देखिए कि कैसे काशी नरेश की दी हुई 1300 एकड़ जमीन पर 132 डिपार्टमेंट, 14 फैकल्टी, 34 देशों से आने वाले 30,000 छात्र और 75 हॉस्टल, मिलकर दुनिया की सबसे खूबसूरत यूनिवर्सिटी बनाते हैं।

More Books - www.The-Gyan.in

आयशा टाकिया दूध डेरी, बाबी देओल हेयर कटिंग सैलून और गंगा जी

पहले दो-एक महीने, शाम से ही रैगिंग का बुलावा आने लगता और छापामारी शुरू हो जाती थी। पांडे की भाषा में कहूँ तो, 'हर-एक छेद में बाँस हो रखा था'। दिन भर की क्लासेज खतम होते ही छुपने-छुपाने की मशक्कत शुरू हो जाती थी। लड़के हॉस्टल में खुद को ऐसे छुपा लेते थे जैसे नई बहुएँ छत पर सूखते हुए कुर्ते सलवार के नीचे अंडर गारमेंट्स छुपा लेती हैं। सीनियर, जैसे गर्ल्स कॉलेज के बाहर तफरी-गेड़ी मारने वाले आवारागर्द शोहदे हो रखे थे और जूनियर, जैसे गर्ल्स कॉलेज की भोली-भाली लड़कियाँ।

हल्ला था कि BHU में सीनियर नंगा कराए बिना नहीं मानते। पांडे कहता था, "यार एक बार न सील तुड़वा ही ली जाए और टनटा खतम हो! एक बार हिचक खुल गई तो बाकी साल भर आराम रहेगा। वहीदा रहमान की तरह 'कांटों से खींच के ये आँचल, तोड़ के बंधन बाँधी पायल' गाते हुए पूरे BHU में स्वच्छंद घूमेंगे।"

वह फ्रस्टिया के दूसरे ही हफ्ते 'पूरी' रैगिंग दे आया था और अब छुट्टे साँड़ की तरह बनारस घूमता था। अक्सर घाट घूमने निकल जाता था। छुपते-छुपाते एक दिन मैं भी उसके साथ पैदल ही घाट की तरफ निकल गया। कबाड़ी ने उसके दिमाग में बनारस की महिमा का जो कीड़ा बोया था, वह अभी तक कुलबुला रहा था। गाइड के देवानंद की तरह पांडे मुझे बनारस दिखा रहा था। आयशा टाकिया दूध डेरी जैसी रैंडम-ट्रिविअल जगह से लेकर बॉबी देओल हेयर कटिंग सैलून तक। मुक्ति भवन (होटल डेथ) से लेकर थकी उदास गंगा जी तक।

"अबे ये देख— आयशा टाकिया दूध डेरी", पांडे ने उँगली से डेरी के साइन बोर्ड की ओर इशारा किया। यह अपने आप में एक अनोखा बैनर था। बाएँ तरफ गाय, बीच में बड़े अक्षरों में लिखा हुआ 'आयशा टाकिया दूध डेरी' और दाएँ तरफ साक्षात् आयशा टाकिया की हँसती-मुस्कुराती-शर्माती हुई अद्भुत तस्वीर। बनारस की मोनालीसा जैसी। आप जिधर से भी देखें, लगे कि आयशा की पुरनूर आँखें, आपकी आँखों में शरारत से झाँक रही हैं।

More Books - www.The-Gyan.in

"ये क्या है?" मैंने हैरान होते हुए पूछा।

"फनी है न!" पांडे ने हमेशा की तरह अपनी वज्रदंती मुस्कुराहट चियारते हुए कहा।

"इसमें क्या फनी है? घटिया है", मैंने तौबा करने के अंदाज में कहा।

"फनी नहीं है? अबे निशंतवा डेरी का बैनर देखो। आयशा टाकिया का फोटो है, उसके बगल में गाय का। और बड़ा-बड़ा लिखा है – दूध डेरी। जोक नहीं समझे तुम? अब समझ आया?" पांडे बड़ी-बड़ी आँखों से मुँह खोलकर मुस्कुरा रहा था। इंतजार कर रहा था कि मैं समझ जाऊँ।

"जोक मैं समझ गया। मैं बस ये कह रहा हूँ कि ये बैनर घटिया है।"

"भाक बे! तुमको टेस्ट नहीं है निशांत बाबू। बनारसी लोग का सेंस ऑफ हयूमर तुम नहीं समझोगे। बहुत गड्ड होता है", पांडे ने निराश होते हुआ कहा। वैसी निराशा जैसे आप बड़े मन से किसी को अपना लंबा फेवरिट जोक, पूरी थियेट्रिकल अदा से सुनाएँ, और सामने वाला, चुटकुला खतम होने के बाद 'इसके बाद क्या?' वाली नजरों से, बिना हँसे, आपको देखता रहे।

"हाँ तो तुम समझते हो तो समझा दो।"

"अबे देखो! यहाँ अगर जैसे किसी बड़े-बूढ़े का पैर छुओगे तो वो आशीर्वाद देते हुए जानते हो क्या बोलेगा?"

"बोलेगा खुश रहो। और क्या?"

"नहीं! यही तो कैच है। तुम कहोगे पाँय लागी तो वो कहेगा— अरे जियो रे भोसड़ी के।"

पांडे चमत्कृत था। इसलिए उससे बहस करना बेकार था। उसके चेहरे पर वही भाव था जो ग्रैविटी का आविष्कार करने पर न्यूटन के चेहरे पर रहा होगा। ठीक उस समय जब उसके सिर पर सेब गिरा होगा। उसके चेहरे पर वही भाव था जो अमेरिका की धरती पर जहाज उतारने पर कोलंबस के चेहरे पर रहा होगा। उसी भाव की इंटेंसिटी के लिहाज की खातिर मैंने पांडे की बात सुनना ठीक समझा। वह कोलंबस की तरह अपनी नई खोज दिखाने-सुनाने लगा और मैं उसके साथी नाविक की तरह उसके पीछे हो लिया।

उसने बड़े उत्साह से बताया कि आयशा टाकिया दूध डेरी के मालिक छैल सिंह है। जिसने सन् 2001 में ये दूध डेरी खोली थी। छैल सिंह कहते हैं कि लोग अपने घर दुकान का नाम नाती-दारों के नाम पर ही तो रखते हैं और चूँकि दूर-दूर तक उनका कोई संगी-साथी, माँ-बाप, बेटी या बेटा नहीं था इसलिए तब इस दूध डेरी का नाम बस 'दूध डेरी' था। अगले दो तीन सालों तक उनकी दूध डेरी न फली न फूली। उन्होंने तमाम कोशिशें कर देख लीं

More Books - www.The-Gyan.in

लेकिन डेरी को लगातार नुक्सान होता रहा। छैल सिंह ए-वन क्वालिटी का दूध बेचते थे, न कोई मिलावट, न चोरी चकारी। फिर 2004 में छैल सिंह को प्यार हो गया। आयशा टाकिया से।

जब उन्होंने टकसाल सिनेमाघर में आयशा टाकिया की फिल्म 'सोचा न था' देखी तो उन्हें न जाने क्यों लगा कि उनका आयशा टाकिया से जन्म-जन्मांतर का नाता है। बस फिर क्या था। आयशा टाकिया दिन रात छैल सिंह के सपनों में आती और छैल सिंह उससे रात भर बात करते। प्रेम इतना गहरा था कि छैल सिंह रात में सोने से पहले वही सब सोचते, जिस बारे में वे आयशा टाकिया से बात करना चाहते और उन्हें रात में वही सपना आता भी। एक दिन छैल सिंह ने सोने से पहले घंटा भर बस दूध डेरी के टंटे के बारे में सोचा। गाय, बैल, गोबर, लीटर, कपिला पशु आहार से लेकर भूसा चारा तक।

टाकिया फिर सपने में आई।

छैलू ने विस्तार से टाकिया से अपना दुखड़ा रोया तो टाकिया बोली, "बस इत्ती-सी बात। सब नाम का खेल है। सब कुछ नाम से ही बिकता है। तुम्हारी डेरी का कोई नाम ही नहीं है। 'दूध डेरी' भी कोई नाम हुआ? अब अगर जो मेरा नाम बस हीरोइन होता और अभय देओल का नाम बस हीरो होता तो क्या हमारी फिल्म चलती?"

छैलू सोच में पड़ गए। टाकिया की बात सोलह आने सच थी। फिर जो टाकिया ने उन्हें आगे की बात बताई तो छैलू के पैरों तले जमीन खिसक गई। टाकिया ने छैलू को समझाया कि सलमान खान का असली नाम अब्दुल रशीद है, जैकी श्रॉफ का असली नाम जयकिशन काकू है और प्रीटी जिंटा का असली नाम प्रीतम सिंह है। और तो और रेखा का असली नाम भानुरेखा गणेशन है। इतना कहके टाकिया अपने मोती जैसे दाँतों से मुस्कुराते हुए चली गई।

अगले दिन छैलू ने सोच लिया कि अब तो दुकान का नामकरण होकर रहेगा। और उसके लिए आयशा टाकिया से अच्छा क्या नाम हो सकता है! आयशा के अलावा उनका दुनिया में है ही कौन!"

"और इसीलिए डेरी का नाम आयशा टाकिया दूध डेरी पड़ गया? पांडे क्या वाहियात कहानी है तुम्हारी! मैं चुपचाप तुम्हारी कहानी इसलिए सुन रहा था कि उसमें कुछ तो पॉइंट होगा।"

"तुम्हारे हिसाब से ये वाहियात कहानी है?" पांडे फनफना रहा था।

"और नहीं तो क्या! वाहियात भी और गप्प भी। एक नंबर का ठरकी है छैल सिंह। इसीलिए उसने दुकान का नाम ये रखा।"

"तुम्हें श्रीदेवी का असली नाम पता है?"

More Books - www.The-Gyan.in

"मेरा सर!"

"श्री अम्मा ऐयंगर ऐयप्पन।" पांडे फिर से दाँत निपोर रहा था। ये उसके लिए फिर से एक यूरेका मोमेंट था।

"देखो निशांत बाबू! छैल सिंह की कहानी सच्ची हो या झूठी लेकिन नाम में बात है सो है। नहीं मानते हो तो जरा उस दुकान का नाम खुद पढ़ लो। वो जो पान की दुकान के बगल में है।"

"बॉबी देओल हेयर कटिंग सैलून।" मुझे अपनी आँखों पर भरोसा नहीं हो रहा था। उस दुकान का नाम सच में बॉबी देओल के नाम पर था। वह शायद भारत में बॉबी देओल का पहला और आखिरी फैन रहा होगा। मालूम हुआ कि ये सज्जन 1995 में बॉबी की बरसात देखकर दीवाने हो लिए और उस दिन से वे बस बरसात के बादल जैसा बनना चाहते थे। गुप्त का साहिल, सोल्जर का विकी, बिच्छू का जीवा और दिल्लगी का राजवीर।

और मैं हैरान इस बात पर हो रहा था कि ये सज्जन बॉबी देओल जैसा क्यों बनना चाहते थे। आप कुछ भी बनने की हसरत रख लीजिए। राजेंदर कुमार, राहुल रॉय, प्रेम नाथ, जीवन, रंजीत, किरण कुमार, दीपक तिजोरी, सदाशिव राव अमरापुरकर या फिर साक्षात् आफताब शिवदासानी ही। लेकिन बॉबी देओल क्यों? कभी सुना है आपने कि जो बच्चा बड़ा होकर पायलट बनना चाहता है वह अचानक एक दिन आकर अपने पिता से बोले, "पापा-पापा! मैं एयरपोर्ट पर तलाशी लेने वाला सिक्योर्टी गार्ड बनना चाहता हूँ।" या फिर जो बच्चा बड़ा होकर स्पेस शिप से अंतरिक्ष जाना चाहता है वह अचानक से कहे कि मैं अब बड़ा होकर एक दिन चौरी चौरा एक्सप्रेस से गोरखपुर जाना चाहता हूँ।

पर ये सज्जन बॉबी देओल जैसा बनना चाहते थे। खैर...

इनकी दुकान पर दिन भर बतकही होती थी। दुनिया भर के एक-से-एक लतखोर विद्वान यहीं बैठकी जमाते थे। मैं और पांडे दुकान के बगल वाली चाय की टपरी पर बैठ गए। केंद्रीय विद्यालय के दो लड़के दसवीं का हिंदी का एग्जाम लिखकर लौटे हुए थे और परचा डिस्कस कर रहे थे।

"ई बुजरो ग्लोबल वार्मिंग पर निबंध कौन पूछता है रे। सत्रह ठो निबंध रट कर गए थे। उनमें से एक्को नहीं आया", पहले वाले ने गुस्से में बुरी तरह फायर होते हुए कहा।

"हम कहे थे कि निबंध मत तैयार करना। रटे वाला निबंध नहीं फँसता तो बहुत दिमाग खराब होता है", दूसरा लड़का मुस्कुराते हुए बोला। उसकी मुस्कराहट का गूढ़ अर्थ यह था कि अबे हमें तो पहले से ही पता था भाई जी, हमारी बात नहीं सुनोगे तो घुस जाएगी।

"अरे यार भाई जी! इतना घोटे थे। नारी शिक्षा, दूरदर्शन के लाभ और हानियाँ, जीवन के उद्देश्य, कम्प्यूटर के चमत्कार, प्रदूषण, लड़का-लड़की एक समान, विज्ञान एक वरदान

More Books - www.The-Gyan.in

या अभिशाप, होली हमारा राष्ट्रीय पर्व और न जाने क्या क्या। साला निबंध पूछा भी तो ग्लोबल वार्मिंग पर।" पहले ने उँगलियों पर पूरी लिस्ट गिनाते हुए कहा।

"हम तो लिख दिए", उसने समोसा चाँपते हुए कहा।

"लिख दिए?" पहले वाले ने समोसा दोने में वापस रखते हुए, आश्चर्य चकित होते हुए पूछा।

"लिख दिए क्या लिख मारे एकदम!"

"कैसे बे? तुम ग्लोबल वार्मिंग समझते हो?"

"उसमें समझना क्या है! निबंध का एक सिंपल उसूल है। जैसे-तैसे शुरू कर दो। उसके बाद अंताक्षरी की तरह लपेटते जाओ।"

"अंताक्षरी?"

"हाँ। जैसे अंताक्षरी में एक गाना जहाँ से खतम हो, अगला गाना उसकी पूँछ से शुरू होता है। सावन का महीना, पवन करे शोर। रमैया वस्ताविया, मैंने दिल तुझको दिया। यम्मा, यम्मा, यम्मा, यम्मा। वैसे ही निबंध भी। जैसे कि— ग्लोबल वार्मिंग गरम होती है। गरम तो असली मई जून में पड़ती है। जून में पिछली बार हम नानी के घर गए थे। नानी एक नंबर की झक्की औरत हैं। औरत ममता की मूरत होती है। मूरत देखनी है तो खजुराहो जाइए। खजुराहो बड़ी अश्लील जगह है। अश्लील तो भोजपुरी फिल्में भी होती हैं। फिल्मों में लेकिन आजकल वो बात नहीं रही। बातें तो शिल्पा चौरसिया करती थी। चौरसिया लोग पान भंडार खोल लेते हैं। पान खाने गर्मियों में नहीं निकलते। गर्मी ग्लोबल वार्मिंग की वजह से बढ़ी है।"

दूसरा लड़का एकदम रुआसा हो रहा था। उसके चेहरे पर बस एक ही भाव था— 'यार पहले क्यों नहीं बताया!' इस भाव में कितना दुख, कितनी पीड़ा थी उसे मैं शब्दों में बयाँ नहीं कर सकता था। हाँ इतना जरूर कह सकता हूँ कि उसकी पीड़ा की इंटेंसिटी और हमारी छूटने ही वाली हँसी की इंटेंसिटी में कोई फरक नहीं था। ये तो बस उसके दुख का लिहाज और थोड़ी सी भलमनसाहत थी कि हम हँस नहीं रहे थे।

"पैसा देबा?" चाय वाले ने ज्ञानी लड़के को डपटते हुए कहा।

"हाँ देई। भाग थोड़े रहे हैं। दे देब।"

"बुजरो के! जैसे तुम्हारे लच्छन हैं तुमको फेल होके अगले साल भी इधरी चाय-समोसा खाने आना है। पैसा दो नहीं तो रसीद काट देंगे तुम्हारी हमेशा के लिए।"

"भरोसा रखो बे। जुबान के पक्के हैं।"

"जुबान? जुबान अपनी लपेट के धर लेओ जेब में। जेब तुम्हारी खाली भी है और फटी भी। फटी तो तुम्हारे पिता जी करती थी जब हम उनसे पैसा माँगा करते थे। पैसा चीज ही

More Books - www.The-Gyan.in

ऐसी कुत्ती है। कुत्ती पना मत करो। करो तो नकद करो उधार नहीं। उधार के नाम से हमको बुखार आ जाता है। बुखार तो साहब सन सत्तर में फैला था पूरे बनारस में। बनारस एक पावन शहर है। पावन शहर को तुम्हारे जैसे हरामी लोग ही बदनाम करते हैं", चाय वाले ने जुबान पर निबंध सुनाया।

"ले पैसा। साला भिखारी!" उसने गुस्से में कहा और समोसा वापस रखकर आगे बढ़ गया। फिर उसे लगा कि जब पैसा दे ही दिया है तो समोसा क्यों बर्बाद हो और वो वापस समोसा उठाकर रुखसत हो गया।

***

बनारस आपको खुद-ब-खुद रास्ता बताते हुए लिए चलता है। जैसे आप अपने ननिहाल जाएँ और आपके छोटे भाई आपकी उँगली पकड़कर आपको पूरा गाँव दिखा लाएँ। आपको इस बात की फिक्र न करनी हो कि देखने लायक जो जगहें हैं वो कौन-कौन सी हैं। उनके लिए रास्ता कहाँ से है। यहाँ गलियाँ नहीं गलबहियाँ हैं। बस शर्त इतनी है कि कस के गले मिलना होगा। पांडे के साथ-साथ अब मैं भी इससे गले मिलना सीख रहा था।

हम आगे पहुँचे तो मुमुक्षु भवन किसी पुराने बरगद की तरह खड़ा मिला। मैं शायद मुमुक्षु भवन के लिए तैयार नहीं था क्योंकि ये अभी तक के मजेदार बनारसी हैंग ओवर के लिए नमक-नींबू की काट की तरह जबान पर उतरा। पांडे ने बताया कि मुमुक्षु भवन बनारस के उन तीन गेस्ट हाउस में से एक हैं जहाँ लोग मौत की इच्छा लिए चेक-इन करने आते हैं। इसके अलावा काशी में ऐसे ही दो और गेस्ट हाउस हैं। 'गंगा लाभ भवन' और 'मुक्ति भवन'। बनारस का अपना होटल-डेथ। भैरव नाथ शुक्ल पिछले 44 साल से यहाँ के मैनेजर हैं। अमीर, गरीब, बड़े, छोटे, बूढ़े, जवान, यहाँ सब उनकी शरण में आकर, हौले-हौले मौत के आने का इंतजार करते हैं क्योंकि ऐसा माना जाता है कि काशी में मरने वालों को मोक्ष नसीब होता है।

भैरव नाथ शुक्ल ने मोक्ष की इच्छा लिए आए, कुल जमा बारह हजार मुमुक्षुओं को, यहाँ मरते देखा है। बारह हजार एक छोटा नंबर नहीं होता। इतनी सारी मौत देखने वाला यमराज ही कहलाएगा। उनसे बातें करते हुए पहले-पहल ही दिल बैठने लगता है। वे झूठ-मूठ ये नहीं कहते कि मौत एक कविता है क्योंकि मौत कविता नहीं हो सकती। मौत रूमानी नहीं होती। मौत का कुल जमा-जोड़ सच बस इतना है कि जब जिंदगी नहीं होती तो मौत होती है। भैरवनाथ सबको यही सिखाते हैं कि अपने हिसाब की मौत पाने के लिए अपने तरह वाली जिंदगी को त्यागना बहुत जरूरी है।

मुझे न मालूम क्यों उनसे डर-सा लग रहा था फिर भी मैं उनके पास तक गया। वे पांडे को पहचान लिए। 'आओ पंडित' बोलकर फिर टीवी में मशरूफ हो गए। रूआसे से लग रहे

More Books - www.The-Gyan.in

थे। मैंने पास जाकर देखा कि टीवी में ऐसा क्या है कि यमराज भी उसमें मशरूफ हैं। यमराज भी रूआसे हैं!

"क्या देख रहे हैं भैरव नाथ जी?" पांडे ने पूछा।

"तुम भी देखो", भैरव नाथ जी ने कहा, "मेंहदी हसन की गजल का एक पुराना वीडियो है। मेंहदी किसी प्राइवेट महफिल में गा रहे हैं। आधे लोग रूआसे हैं और आधे रो रहे हैं। मेंहदी खुद भी गम-ए-आफता हैं। अहमद फराज का नाम लेकर आलाप शुरू कर रहे हैं। देखो। 'आ फिर से मुझे छोड़ के जाने के लिए आ' मेंहदी कहते हैं, और एक महिला, जिनकी आँखों के कोर पर कब से एक आँसू जब्त हो रहा था, टप से ढुलक जाता है। अपने बोझ से गालों से सरक रहा है। वो मेंहदी को एक टुक देख रही है और दाँतों में जोर से आँचल कुतर रही है। महफिल में सबको पता है कि अहमद फराज की सब बातें झूठी हैं लेकिन सब अपने महबूब को याद करके रो रहे हैं। वो भी रो रहे हैं जिनके महबूब नहीं हैं। वो भी, जिनका दिल दुखाने के लिए कोई भी नहीं है, वो 'आ फिर से दिल ही दुखाने के लिए आ' के काफिये पर रो देते हैं।

अब ऐसी महफिलें कहाँ होती हैं! ऐसी गजलें कहाँ होती हैं! शायरी और गजल-नवाजों से ऐसे मरासिम कहाँ होते हैं! ऐसे सुनने वाले भी कहाँ ही होते हैं जो गजल या कविता को वहाँ तक समझ लें जहाँ से रुलाई निकल आती है!" उन्होंने गमछे के पीछे आँसू छिपाते हुए कहा।

"अभी भी ऐसे लोग होते हैं", पांडे डरते-डरते कहता है, जैसे कुछ गलत न बोल गया हो।

"अब भी हम झूठी बातों पर रोते हैं क्या? पूनम की रात कब थी? याद है क्या? जब किसी को याद करते छत पर लेटकर तारे मिलाते थे। एक खटोला जो पहले आसमान में बन जाता था, अब टूट गया क्या? अहमद फराज जो कभी अमर थे, मर गए क्या?" कहते-कहते भैरव नाथ जी सूफियाना हो गए।

मैं चुपचाप भैरव नाथ जी को सुन रहा था। यमराज इस तरह से बात करते हैं मुझे पता नहीं था। मुझे लगता था कि यमराज मौत देख-देखकर निष्ठुर हो जाते हैं लेकिन भैरव नाथ रो रहे थे। उसी महिला की तरह।

"तुम्हें पता है यहाँ बहुत सारे लोग हैं जो सालों से मौत का इंतजार कर रहे हैं फिर भी उनको मौत नहीं आती?"

"क्यों?" इस बार मैंने डरते-डरते पूछा।

"क्योंकि या तो उन्होंने किसी से मुहब्बत नहीं की या फिर उनसे किसी ने मुहब्बत नहीं की।"

More Books - www.The-Gyan.in

भैरव नाथ जोर से हँसे। जैसे यमराज हँसते हैं। हू-ब-हू। मैंने पांडे की तरफ देखा जैसे मैं यहाँ से जाना चाहता हूँ।

भैरव नाथ बोले, "तेईस नंबर कमरे में रघुबीर सहाय रहते थे। कल जाके मौत आई है। सालों से रास्ता देख रहे थे। भाई से पुराना झगड़ा था। एक दिन बोले कि मेरे छोटे भाई को खबर कर दी जाए कि मैं परसों शरीर त्याग रहा हूँ। उससे आखिरी बार मिलना चाहता हूँ। भाई को खबर की गई और वह अगले ही दिन रघुबीर से मिलने आ गए। रघुबीर ने छोटे भाई से क्षमा-याचना की। कहा कि उनके और छोटे भाई के घर के बीच उन्होंने जो दीवार बनवाई थी उसे गिरा दी जाए। तभी वे देह छोड़ पाएँगे। दोनों एक-दूसरे के गले लग के घंटों रोए। अगले ही दिन रघुबीर को मोक्ष मिल गया।"

"वो क्या था जो आपको यहाँ ले आया भैरव नाथ जी?" मेरे दिमाग में अगला सवाल यही था।

भैरव नाथ अपने चश्मे को कुर्ते के छोर से साफ करने लगे। और बोले, "मौत के इंतजार में। मौत नहीं आ रही न! कब से इंतजार कर रहे हैं। मौत का भी और उनका भी।" भैरव फिर से मेंहदी हसन की गजल में मशगूल हो गए। गुनगुनाने लगे, "रंजिशें सही, दिल ही दुखाने के लिए आ" और फिर से यमराज जैसी हँसी।

मैं और पांडे एक-दूसरे से बिना कुछ कहे वहाँ से भारी मन से अस्सी घाट की ओर आगे बढ़ गए। शाम ढल चुकी थी। हम दोनों चुपचाप घाट की सीढ़ियों पर बैठ गए। एक-दूसरे से कहने को जैसे अधिक कुछ नहीं था। बस बैठे गंगा जी को देख रहे थे। गंगा जी उदास लग रही थीं। शायद इसलिए क्योंकि हम उदास से थे। गंगा जी सब को वैसे ही लगती हैं जैसे वो खुद होती हैं। उदास के लिए उदास। थके हारे के लिए थकी। खुशमिजाज के लिए खुश। कमले के लिए कमली।

लोग गंगा जी को दीया देने आ रहे थे। कोई दीया यूँ ही तैरा दे रहा था तो कोई उसे आखिरी सीढ़ी पर रख जाता था। कुछ दीए तैर जाते थे तो कुछ डूब जाते थे। मैं यह सोच रहा था कि हम भी तो ऐसे ही हैं। कुछ तर जाते हैं, कुछ डूब जाते हैं। गंगा जी के आँचल से तमाम सारी नावें बँधी हुई थीं। पांडे एक नाव पर लेट गया था। उँगलियों से तारे मिला रहा था शायद। उसकी देखा-देखी मैं भी तारे मिलाने लगा। मैं खटोला खोज रहा था लेकिन आज आसमान में खटोला नहीं मिला। बचपन में जल्दी मिल जाता था। खटोले के पैर से तीन तारों की पूँछ बँधी होती थी और पूँछ के छोर पर ध्रुव तारा।

उसकी खोज में मैंने इस ओर से उस छोर तक देखा। फिर दाएँ-से-बाएँ। बाएँ एक प्यारी-सी लड़की दीया लिए हुए बैठी थी। मैं भूल गया कि मैं क्या खोज रहा था। मेरी इच्छा हुई कि मैं तारा खोजना छोड़कर अपना सब कुछ उस पर टिका दूँ। आँख बंद किए हुए वह

More Books - www.The-Gyan.in

कुछ-कुछ बुदबुदा रही थी और दीये की लौ में उसका चेहरा दीया हो रहा था। लाल रंग की उजास में, मैं यह पढ़ने की कोशिश कर रहा था कि वो खुद से क्या बातें कर रही है। प्रार्थना तो नहीं कर रही थी। खुद से ही कुछ कह रही थी शायद। या शायद गंगा जी से। उसके होंठ गोल होकर गठरी हो रहे थे और कुछ कहते हुए वापस खुल जाते थे। जैसे उसके होंठ गंगा जी की ही कोई मछली हो।

मेरी इच्छा हुई कि मैं ये मान लूँ कि वह दुनिया की सबसे सुंदर लड़की है और मैं शायद ही उससे सुंदर लड़की दुबारा कभी देख पाऊँगा। तीखे नैन-नक्श। झक गोरा रंग। बड़ी-बड़ी आँखों पर पलकें यूँ कि जैसे किसी छत्रपति की शमशीर हों।

लंबे, काले, सुंदर, घुँघराले बाल, टेलीफोन के तारों से उलझे हुए।

उसके बालों की खूबसूरती समझाने के लिए उसके बाल 'घुँघराले' कहे जा सकते हैं लेकिन सिर्फ इतना कह देने से इजहार-ए-खूबसूरती कुछ कच्ची-सी रह जाएगी। उसके बालों को और क्या कहूँ? घने, काले, बादलों जैसे बाल? घुमड़ आई घटाओं जैसे बाल? खिले-खिले-मतवाले बाल? मजा नहीं आता ना! ऐसा लगता है जैसे किसी तेल कंपनी के एडवरटीजमेंट के लिए एक टैगलाइन लिख रहा हूँ। खैर छोड़िए। बस यूँ समझ लीजिए कि उसे देखते रहने से सुकून मिल रहा था। दिमाग से भैरव नाथ, मेंहदी हसन और मौत के लाख टके के सवाल का कुहासा छट रहा था। वो इंच-इंच अंदर आती थी और ये सब इंच-इंच बाहर जा रहे थे।

मैं उसे एक टक देख रहा था। पहले कभी किसी लड़की से प्यार-व्यार क्या इन्फैचुएशन तक नहीं हुआ था इसलिए समझ नहीं पा रहा था कि भीतर क्या चल रहा है। लेकिन इतना जरूर समझ आ रहा था कि साँस भारी होकर आ रही है और हल्की होकर छूट रही है, थोड़ी हरारत हो रही है, फिर भी सुकून मिल रहा है। उँगली के पोर पर नाखून चुभाने से अच्छा लग रहा था।

"लो चली गई। तुम देखते ही रह गए", पांडे बोला।

"चली गई?" मेरी जान निकलने को थी।

"माल थी न!" पांडे की हरकत वापस आ रही थी। वापस हँस रहा था।

"ज्यादा माल-वाल न करो पांडे। तुम खाली आयशा टाकिया से मतलब रखो।"

"आए हाए निशांत बाबू! शाखा प्रभारी, चिर ब्रह्मचारी जी के जीवन में महिला की एंट्री हुई और माल कहने से कष्ट भी हो रहा है। शिव शिव शिव! आओ बे पिछियाते हैं, ज्यादा दूर नहीं गई होगी।"

"अरे नहीं यार। मार खिलवाओगे क्या? पीछा क्यों करेंगे?"

More Books - www.The-Gyan.in

“देखो निशांत! इस उमर में जो मजा लड़की का पीछा करने में है वो लड़की को पा लेने में भी नहीं है।”

“पा लेने में क्यों नहीं है?”

“यार अब ये सब नहीं पता। बस ये पता है कि जो लड़की मिल नहीं सकती उसी को चाहने में मजा है। जैसे हमको आयशा टाकिया बहुत अच्छी लगती है। मिलेगी नहीं पर शायद वो मिलने वाली लड़की होती तो इतनी करारी चीज नहीं होती कि यहाँ बनारस में आयशा टाकिया दूध डेरी होती।” पांडे फिर से ऐसे हँस रहा था जैसे शाम की शुरुआत में हँसा था। मैंने बुरा नहीं माना क्योंकि पांडे तमाम देर बाद हँसा था।

More Books - www.The-Gyan.in

मुलायम सिंह, मोहनजोदाड़ो और बम-भोले-नाथ

महीना भर की क्लासेज, क्लास टेस्ट्स और असाइनमेंट्स ने बत्ती लगा रखी थी। उस पर सीनियर के असाइनमेंट्स और फाइलें निपटाना अलग। प्रोफेसर के लेक्चर डीकोड करना, मुलायम सिंह यादव के भाषण को डीकोड करने से कहीं अधिक जटिल हो रहा था। उन्हें सुनकर लगता था कि इनके मुकाबले तो मुलायम सिंह यादव भी कितना साफ बोलते हैं। 'अकलेस' माने 'अखिलेश'। 'उत्ता पदेस' माने उत्तर प्रदेश। 'समावाई पाटे' माने समाजवादी पार्टी। 'अमे सीं' माने अमर सिंह। सब कुछ कितना साफ था। क्रिस्टल क्लियर।

पंकज मिश्रा की क्लास में कबाड़ी की कही बात याद आती थी— "क्लास में इनका आधा बात इसलिए नहीं समझ आएगा क्योंकि नाक से बोलते हैं और आधा बात इसलिए नहीं समझ आएगा क्योंकि नाक अधिकतर जुकाम से जाम रहती है। भद्दर गर्मी में भी वही हाल रहेगा। इसीलिए नोट्स लेने की कोशिश न करना।" मैं फिर भी नोट्स लेता था। वे बोर्ड पर जो लिख दें, मैं हू-ब-हू उतार लेता था। अक्षर समझ आया तो अक्षर मान के, नहीं तो डिजाइन समझ के बना लेता था।

"साला इससे साफ तो हड़प्पा, मोहन जोदाड़ो वाले ईंटा पत्थर पे लिखते रहे होंगे। ई बुजरो के साफ बोल नहीं पाते तो साफ लिख तो दें कम-से-कम। लेकिन न! आज ही एक नई लिपि का आविष्कार करेंगे ये सपोला नंद।" प्रसाद बोला।

"अबे प्रसाद साले हँसाओ मत। अगर हम पकड़ा गए तो बहुत मारेंगे तुमको। कसम बता रहे हैं", मोहित दोनों हाथ से कस के मुँह दबाते हुए हाथ के अंदर से बोला।

"ए जी उठो तुम। क्यों हँस रहे हो?" पंकज मिश्रा ने मोहित को चाक फेंक कर मारी।

'एं ई टो। यों अन अएं ओ', हम सबको इतना ही समझ आया।

"जी सर?" मोहित ने कातर निगाहों से लगभग गिड़गिड़ाते हुए पूछा।

"उठो। सुनाई नहीं दिया क्या?" पंकज मिश्रा गुस्से में तमतमा रहे थे।

'टो। उआई नें इया', हमने समझा।

More Books - www.The-Gyan.in

"ये सपोला नंद के आगे गोलमाल का तुषार कपूर भी जीनियस लगे", प्रसाद मुँह टेढ़ा करके, मुँह के कोने से बोला। आसपास के सारे लड़कों की हँसी छूट गई। मोहित कबूतर के बच्चे जैसा दयनीय मुँह बनाए हुए था और हम सबसे बिना कहे ही विनती कर रहा था, "सालो, चुप हो जाओ। काहे पंकज मिश्रा के ताप को और हवा दे रहे हो सालो!"

पंकज मिश्रा गुस्से से पागल हो रहे थे। उन्होंने दो-तीन और लोगों पर चाक फेंकी। कुछ-कुछ बड़बड़ाए पर चूँकि हम समझ नहीं पा रहे थे इसलिए गुस्से में बोर्ड पर बड़ा बड़ा लिखा—

यू गेट आउट। सस्पेंडेड फॉर टेन डेज।

मोहित बेचारा प्रसाद को घूरता हुआ क्लास के बाहर चला गया। पंकज मिश्रा का गुस्सा ठंडा हुआ और उनको वापस साँस आने लगी। पंकज मिश्रा दुबारा ब्लैक बोर्ड रंगना शुरू हो गए। ऐसा लगता था कि उनके पास कोई सुपर पावर है कि ब्लैक बोर्ड पर जिधर खाली जगह देखेंगे उधर माइक्रो इलेक्ट्रानिक्स के महामंत्र लिख मारेंगे। उनके जवाब में मैंने भी ये सुपर पावर हासिल कर ली थी कि मैं बोर्ड पर जो भी लिखा देखूँगा उसे कॉपी पर हू-ब-हू छाप दूँगा।

यदि वे डाक्टर जैकाल थे तो मैं शक्तिमान। वे राका थे तो मैं साबू। वे नागदंत थे तो मैं नागराज। वे दुर्गति थे तो मैं कैप्टन व्योम। हार नहीं मानूँगा, रार नहीं ठानूँगा का मंत्र दिमाग में जपते हुए मैं भड़ाभड़ फोटोकॉपी करते जाता था। एक के बाद एक टीचर बदलते जाते थे लेकिन मेरी कलम रुकती नहीं थी।

मुझसे उलट, पांडे ने कॉपी पेन लाना छोड़ दिया था और वह भी अब सोलह नंबर वाले लड़कों की संगत में आवारा हो रहा था। ये सोलह नंबर कमरे वाला ग्रुप न तो किसी क्लास में नोट्स बनाता था और न ही रेगुलर क्लास आता था। मोहित, प्रसाद, विवेक, अखिल और पांडे। हालाँकि वे आवारागर्दी को कूल-नेस कहते थे।

मैं प्रैक्टिकल्स, लेबौरट्री, इंजीनियरिंग ड्राइंन, मशीन ड्राइंन, वर्कशॉप्स और लाइब्रेरी के चक्रव्यूह में अभिमन्यु होने की भरसक कोशिश में कट मर रहा था। एक तरफ डिपार्टमेंट वाले सिग्नल्स, ट्रांजिस्टर और लिफ्ट सिमुलेशन के प्रैक्टिकल करवाते थे और दूसरी ओर कारपेंट्री-फाउन्ड्री की वर्कशॉप। हम हैरान थे कि अगर हमें मिट्टी के साँचे और लकड़ी के औजार ही बनाने थे तो हम यहाँ क्यों आए हैं? हमें नासा जाना है? या फिर बढ़ई बनना है या फिर कुम्हार? या फिर लुहार?

पांडे कहा करता था, "बैक अप प्लान तैयार करवाया जा रहा है। नौकरी-उकरी नहीं लगी तो भूखे न मरें इसलिए सब सिखा देंगे। IIT बीएचयू का इंजीनियर होना मजाक बात है भला! इंजीनियर्स का सबसे बड़ा रोना यही है कि वे जब भी घर जाते हैं और बत्ती चली जाए

More Books - www.The-Gyan.in

तो मम्मियाँ अभी तक ताना देती हैं कि तुमको इंजीनियरी पढ़ाने का क्या फायदा हुआ? न कटिया मारना आता है, न फ्यूज चेंज करना। पंखा खड़खड़ाने लगे तो उसको भी नहीं सुधार सकते। कुछ पढ़-लिख रहे हो कि हमारा पैसा डुबा रहे हो? अभी भी ये नहीं पता कि अर्थिंग कहाँ से है और न्यूट्रल कहाँ है। बिजली बिगड़ जाए तो पड़ोसी के लड़के को ही बुलाना पड़ता है जो लोकल कॉलेज से पढ़ा है। उसकी अम्मा अलग चुटकी लेती है कि हमारा लड़का तो बचपन से ही प्रैक्टिकल नॉलेज में तेज था। वो तो स्कूल के मास्टर हरामी थे जो नंबर नहीं देते। लड़का दिमाग से तेज है, बस पढ़ने में मन नहीं लगाता है।"

इंजीनियरिंग ड्राइंग एक अलग मिस्ट्री हो रखी थी। कभी-कभी खीझ होती थी कि जब किसी स्ट्रक्चर का सीधा वाला ड्राइंग बना हुआ है तो उसका टॉप व्यू क्यों बनाना है? एक तो बिल्डिंग बनाना इतना मुश्किल काम उस पर उसका आड़ा वाला व्यू, तिरछा वाला व्यू। पैंतालिस डिग्री से देखने वाला व्यू, नीचे से झाँकने वाला व्यू। बिल्डिंग न हो गई नई बहू हो गई। पूरा मुहल्ला उसको हर एंगल से देखेगा। उस पर मकेनिकल के निर्दयी टीचर। ये हद दर्जे के महा-सैडिस्ट लोग थे। जब तक दिन के चार लड़के और दो लड़कियों को असाइन्मेंट में जीरो देकर, फेल कर देने का डर दिखाकर रुला न लें, इनको रात की खाई हुई तरोई और रोटी पचती नहीं थी।

काले खान समूचे मकेनिकल के सबसे अधिक निर्दयी प्रोफेसर माने जाते थे। अल्लाह जाने इन्हें लड़कियों को रुलाने में क्या सुख मिलता था! खासतौर पर सुंदर लड़कियों को। कबाड़ी कहता था, "पैंतालिस के हो गए हैं, आज तक कँवारे हैं। इसी बात का बदला निकाल रहे हैं महिलाओं की सारी जमात से। शकल से बनच्चर लगते हैं। जवानी के दिनों में गर जो रिश्ता लेकर लड़कियों को देखने भी गए तो लड़कियाँ इनको देखकर उबकाई लेने लगती थीं, एक महिला तो इनको साक्षात् देखकर चीख ही पड़ीं— हाय अल्ला ये क्या है— बस इसी का बदला निकाल रहे हैं।"

***

मैं जैसे-तैसे जूझ रहा था। कोशिश करता था कि हिम्मत रखी जाए, पर कभी-कभार सरेंडर करने का जी होता था।

इंजीनियरिंग ड्राइंग के सरप्राइज टेस्ट में मुझे सी ग्रेड आया और सोलह नंबर के समूचे गैंग को ए प्लस लगा। मैं हैरान था। ये वे लोग थे जो अमूमन क्लास ही नहीं आते थे। पांडे शान से अपना चार्ट पेपर और ड्राफ्टर नाचते हुए किसी सामुराई योद्धा की तरह चला आ रहा था।

"कितना ग्रेड लगा?" पांडे ने मुझसे पूछा।

More Books - www.The-Gyan.in

"सी लग गया यार", मैं लगभग रुआसा था।

"अरे कोई बात नहीं बे। ये टेस्ट का वेटेज वैसे भी 5% ही होगा। अगले में निकाल लेना।"

"ई.डी. समझ नहीं आ रही यार। काले खान फेल न कर दे।" मेरी रुलाई छूट गई। पांडे जैसे इसका ही इंतजार कर रहा था।

"अरे तुम लोड जादा लेते हो। कमरे में घुसे रहोगे, सो अलग। थोड़ा बकर काटो। नंबर तो खुद्दे आ जाते हैं। तुम सोलह नंबर से दूर से ही कट लेते हो, उधर सबका ए प्लस लगा है। आया करो। आओ आज तुमको बियर पिलाएँगे। काले खान को भूल जाओगे।"

"मैं दारू नहीं पीता हूँ। तुम लोग पियो।"

"अच्छा पीना नहीं। आ तो जाओ। सब लोग पूछते रहते हैं कि पांडे तुम्हारा कनपुरिया रूममेट कहाँ है? इधर काहे नहीं आता।"

मैं बहुत दुखी था लेकिन सोलह नंबर सिर्फ इसलिए जाना चाहता था कि मालूम हो, ये कौन लोग हैं जो न क्लास आते हैं, न पढ़ते-लिखते हैं, दारू सिगरेट का रट्टा अलग पाले हैं, फिर भी हर टेस्ट में टॉप कर रहे हैं, और मैं इतना घिस-घिसकर भी सी ग्रेड से आगे बढ़ ही नहीं पा रहा। एक तो पढ़ाई में हालत बुरी थी, तिस पर दिन-रात दिमाग में घाट पर दिखी उस प्यारी-सी लड़की का जिक्र था। घाट पर उसे देखने के बाद से जैसे वो दिल-ओ-दिमाग में छप-सी गई थी। मैं खुद को कोसता रहता हूँ कि क्यों मैंने पांडे की बात नहीं मान ली और हम लोग उसका पीछा करते तो शायद ये जान पाते कि वह कहाँ रहती है।

मेरी हालत 'अच्छा सिला दिया तूने' के किशन कुमार जैसी हो रखी थी। कोई सैड सॉग बजा दे और बस रो पड़ूँ। इच्छा हो रही थी कि पांडे दारू पीने के लिए चार बार इंसिस्ट कर दे तो मैं पहले तीन बार न नुकुर करूँ और चौथी बार में उसकी दोस्ती का वास्ता लेकर दारू पी ही लूँ और काले खान को जी भर गरिया लूँ। उन्हें बता सकूँ कि मेरी बत्ती लगी हुई है यार, कोई मदद कर सके तो कर दो।

***

मैं सोलह नंबर से सौ कदम दूर खड़ा था। सोच रहा था कि लक्ष्मण रेखा लाँघ जाऊँ या उलटे पाँव लौट जाऊँ? अभी भी देर नहीं हुई है। बचपन की एक घटना याद आ रही थी। जब दसवीं क्लास में हल्ला हुआ था बायोलॉजी की किताब में आठवाँ चैप्टर 'बड़ा वैसा सा है'। अकेले में पढ़ना। मैंने मन में दो बार तौबा कहा था और डेस्क के भीतर पेज नंबर 118 खोला था। 'रिप्रोडक्टिव सिस्टम' का बयाना था। मुझे बुखार-सा महसूस हुआ था। कान तप रहे थे।

वही बुखार आज सोलह नंबर की दहलीज लाँघने से पहले मसहूस हुआ। अंदर रॉयल स्टैग की तीन बोतलों को पंद्रह लड़के घेरकर बैठे थे। जैसे जब आदिम काल में आग का आविष्कार हुआ होगा तो पूरा कबीला आग से चमत्कृत होकर उसको घेरकर बैठता होगा, घूरता होगा। नजारा हू-ब-हू वैसा ही था। अखिल और विवेक कबीले के बड़े-बूढ़े की तरह कुर्सी पर थे और बोतलें उनकी कस्टडी में। मोहित, प्रसाद और पांडे सेकेंड-इन-कमांड की तरह चखना, सोडा, भोजपुरी प्ले लिस्ट और प्लास्टिक के गिलास तैयार कर रहे थे। इसकी वजह ये थी कि कमरे में कुल जमा पंद्रह लोगों में से यही पाँच लोग थे जिन्होंने पहले कभी दारू पी रखी थी और बाकी लोग आज पहली बार जबान तर करने आए थे।

"अरे पांडे तुम्हारा कनपुरिया रूम मेट आ गया" अखिल बोला।

"काहे बे डरते हो हम लोग से? बिगाड़ नहीं देंगे तुमको", विवेक बोला।

मुझे पांडे की बात याद आई। वह और प्रसाद सबसे अधिक इंप्रेस्ड अखिल से थे क्योंकि उसने नाइंथ क्लास में सेक्स कर लिया था और उसके बाद विवेक से क्योंकि विवेक रॉक सुनता था (असली रॉक)।

"डरता नहीं हूँ। मैं वैसे दारू-वारू नहीं पीता। बस इसलिए नहीं आ रहा था", मैंने खुद के डिफेंड करते हुआ कहा, जैसे मैं बचपन में बड़े भाई से कहता था, कि मैं भूत-वूत से नहीं डरता, वो असली थोड़े होता है।

"क्यों नहीं पीते?" अखिल ने पूछा।

"बस इसी तरह। कोई वजह नहीं है।"

"वजह तो जरूर होगी। दारू न पीने की कोई वजह न हो ऐसे तो हो नहीं सकता", अखिल ने पूछा।

"बस नहीं है। तुम लोग क्यों पीते हो? किसी वजह से पीते हो?"

"और नहीं तो क्या! हाई होने के लिए। खुश होने के लिए।"

"हाँ तो मुझे हाई होने के लिए ये सब नहीं चाहिए। मैं वैसे ही हाई हूँ", मैंने यूँ ही कह दिया।

"हाई ऑन लाइफ!" अखिल जोर से हँसा, "अबे इसका पेग बड़ा बनाओ बे। सबसे ज्यादा दारू की जरूरत इसी को है। बाकी लोग का भी बनाओ और जल्दी से चियर्स करते हैं।"

मैंने बहुत देर ना-नुकुर की। पांडे ने तीन बार जबरदस्ती की। मैंने तीन बार मना कर दिया। पांडे ने चौथी बार जबरदस्ती नहीं की और मैं सूखा गला ही बैठा रहा। तब तक बाकी लोग पहला पेग चढ़ा चुके थे। "बम भोले नाथ", सबने कहा और एक साँस में पहला पेग गले

More Books - www.The-Gyan.in

के पार तर किया गया। मिनट भर भी नहीं बीता होगा कि नौ सीखिए लोग ऐसे चकरा रहे थे जैसे पूरी बोतल पार कर चुके हों। इतनी जल्दी दारू चढ़ जाती है क्या? मैं सोच रहा था। मैं चुपचाप सब को ऐसे देख रहा था जैसे किसी अजायब घर में आया हूँ। हैरतअंगेज चीजें देखने।

पाँच-दस मिनट हुआ होगा और बतकही की लाइन लग गई।

"तुम साले नाइंथ में सेक्स कर लिए अखिल", प्रसाद बोला।

"झूठा है ये बुजरो का! घंटा सेक्स किया होगा ये नाइंथ में", पांडे ने प्रसाद की बात काटी।

"क्यों? हो सकता है कर ही लिया हो। तुम आज तक पहिला बेस भी नहीं पहुँच पाए तो क्या कोई दूसरा मैदान नहीं मार सकता", मोहित प्रसाद से भिड़ गया।

"अबे लॉजिकल बात करो बे मोहित! नाइंथ में तो मूँगफली जितना होता है। सेक्स कैसे किया होगा उससे!"

"हाँ तो मूँगफली ही सही। रहीम दास जी ने कहा है, जहाँ काम आवे सुई, क्या करे तलवार। तुम सरउ बस मूसल कूटते रह जाना। कोई लड़का बढ़कर कुछो हासिल किया है तो लगे सब उसको डीमोरलाइज करने", प्रसाद ने मोहित का समर्थन किया।

"साले तुम लोग को मेरा लाइफ में इतना इंटरेस्ट क्यों है! एक पेग पिए नहीं और लगे गोल-गोल नाचने", अखिल चिल्लाया।

"सेक्स सब कुछ नहीं होता। प्यार असली चीज है", विवेक ने बीच में बात काटी। वह दार्शनिक की तरह गिलास में झाँक रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे गिलास के अंदर से आकाशवाणी हुई हो— 'कंस देवकी का पुत्र जन्म ले चुका है जो तुम्हारा विनाश करके रहेगा।'

"हाँ! बोले पितामह। छह साल से एक ही लड़की से कटवा रहे हैं। आज तक आई लव यू भी नहीं बोल पाए और लगे ज्ञान देने। तुम साला जिस कोर्स में एडमीशन भी नहीं लिए हो उसके प्रोफेसर काहे बन रहे हो।" अखिल ने बिलो-द-बेल्ट वार किया।

"हम उससे ट्रू वाला लव करते हैं", विवेक ने ट्रू पर जोर दिया। इतना कि उसका पेग फैल गया।

"हाँ तो हम लोग क्या प्रेम चोपड़ा या गुलशन कुमार हैं कि हर लड़की को हवस की नजर से देखते हैं! यहाँ साला सबको यही लगता है कि खाली उसी का लव ट्रू वाला है। और ट्रू लव करते ही हो तो बोल दो। जब तक लड़की से बोलोगे नहीं कि तुम उससे प्यार करते हो तब तक उसको पता कैसे चलेगा। ये साला आठवीं क्लास से कुमार सानू के गाने सुन-

More Books - www.The-Gyan.in

सुनकर उससे ट्रू वाला लव कर रहे हैं। जैसे कुमार सानू के पास एक दिन में सबसे अधिक (28) गाने रिकॉर्ड करने का रिकॉर्ड था, इनके पास एक दिन में सबसे अधिक लव लेटर (28) लिख मारने का रिकॉर्ड है। लेकिन इनमें और सानू में एक बुनियादी अंतर यह है कि सानू के सभी गाने मार्किट में आए लेकिन इनके दिल-ए-बेकरार के सभी 28 अफसाने डायरी में ही रह गए। अबे उसको बोलोगे नहीं तो क्या उसको सपना आएगा कि इलेक्ट्रानिक्स फर्स्ट इयर में कोई चूतिया उसके लिए कब से रिलायंस का सिम लेके बैठा हुआ है जिसमें नाइट कॉलिंग ऑलरेडी एक्टिभेटेड है", अखिल ने लंबा मोनोलॉग दिया।

"अरे यार तुम ये सब आशिकी, साजन, सड़क, फूल और काँटे वाले मामले नहीं समझते हो", विवेक ने कहा।

"हाँ तो हमको ये सब चूतियापंती में डिप्लोमा करना भी नहीं है। इनको हमारी दूर से ही नमस्ते है। लेकिन इतना जरूर समझ लो कि हमारे पास तुम्हारी सब बीमारी का इलाज है। भगंदर से लेकर एड्स तक। तुम्हारे विषय में हम हकीम उस्मानी हैं। और कान खोल के सुन लो। हमारी कोई अन्य शाखा नहीं है।"

"हाँ तुम मेरे भाई हो। आई लव यू। लेकिन हम किरन कपूर को अपने दिल का बात नहीं बता सकते", विवेक अखिल से लिपट गया था। कमरे में भाईचारे की लहर दौड़ गई थी। प्रसाद और मोहित ने भी गलबहियाँ डाल ली थीं।

"देखो! हमारी बात मानो, तुम्हारे लिए हम वही हैं जो कुमार सानू के लिए नदीम श्रवण था", अखिल ने वैभव को चूमते हुए कहा।

"नदीम और श्रवण दो आदमी थे, एक आदमी नहीं", विवेक ने वापस अखिल को चूमते हुए कहा।

"हाँ तो कुमार और सानू भी तो दो मेला थे", अखिल ने कहा।

"तुम न, रहने दो", विवेक ने चूमा हुआ गाल, हाथ से पोंछते हुए कहा। "हम कभी भी किरन को ये नहीं बताएँगे कि हम उसे कितना चाहते हैं। क्योंकि जिस दिन हमने किरन से अपने प्यार का इजहार किया, रहा सहा फितूर भी कंडम हो जाएगा। इजहार न करना इजहार कर देने से कहीं बेहतर मुकाम है। रिजेक्ट हो जाने जाने की टेंशन नहीं रहती। जैसे अगर बीटेक की चार साल की पढ़ाई में साला कोई एग्जाम ही न हो तो कॉलेज के चार साल जन्नत हैं जन्नत! किरन को प्रपोज करना फाइनल वाइवा से भी अधिक खतरनाक है।"

"छह साल हो गए हैं। हम अभी भी समझा रहे हैं कि उसे प्रपोज मार दो", अखिल ने कहा।

"मुझमें और किरन कपूर में कुछ भी तो सेम नहीं है। सब अलग-अलग ही है। रिजेक्ट कर देगी।"

More Books - www.The-Gyan.in

"अबे वो भी इंसान की औलाद है और तुम कौन सा बनरा के पूत हो। बोल दो।"

"उसकी फेवरिट फिल्म टाइटेनिक है। और हमारी फेवरिट फिल्म है सपने साजन के।"

"हाँ तो?"

"हाँ तो हम दोनों में कुछ भी सेम नहीं है। रिजेक्ट कर देगी", विवेक ने कहा।

"कर बुजरो के अभी फोन कर।" अखिल ने गुस्से में विवेक को फोन पकड़ाया और उसे पटक कर गिरा दिया। जैसे नरसिंह भगवान ने हिरन्यकश्यप को अपनी गोद में लिटा लिया था और उन्होंने उसकी छाती चीर दी थी। सब लोग विवेक के चारों ओर खड़े हो गए। "फोन कर।" सबने कहा।

अब तक मैंने भी चुपचाप एक पेग लगा लिया था। "हाँ कर फोन भोसड़ी के", मैं थोड़ा ज्यादा जोर से चिल्ला पड़ा।

"अरे निशंतवा भी सुटुक लिया।" प्रसाद लगभग चहक रहा था। "अबे ये साला गाली दिया", पांडे ने कहा। मेरे गाली देने पर वह इतना खुश था कि आप इसका अंदाजा नहीं लगा सकते। इतना खुश तो मेरे माँ-बाप तब भी नहीं हुए होंगे जब मैंने तोतली जबान में, बचपन में, पहला शब्द बोला होगा। यदि आप इंजीनियर हैं तभी आप इस सुख को समझ पाएँगे, कि जब आपका पक्का दोस्त बिगड़ जाता है, तो दुनिया में उससे अधिक सुखद कुछ भी नहीं है।

"अब तो फोन करना ही पड़ेगा। विवेक साले फोन लगाओ किरन को और उससे अपने दिल की बात फौरन जाहिर करो।" मेरे गाली देने और पेग सुटुक लेने से सोलह नंबर कमरे में क्रांति की लहर दौड़ गयी। "हर-हर महादेव। फोन कर बे!" सब चिल्लाए।

आनन-फानन में विवेक ने किरन को फोन मिलाया। फोन लगते ही, वह ऐसे चिंहुक उठा जैसे फोन गरम कोयले में बदल गया हो। "लग गया बे लग गया।" उसके हाथ कबूतर के पंख जैसे फड़फड़ा रहे थे। "हाँ तो अब लगाए हो लगेगा ही न। कर न बात भोसड़ी के", मैं फिर से चिल्लाया। बाकी भी मेरे साथ हो लिए।

"किरन, मैं विवेक बोल रहा हूँ", उसने कहा। उसके चेहरे से घबराहट गायब हो रही थी और उसकी जगह मुस्कराहट पसर रही थी।

विवेक फोन लेकर कमरा फाँद गया और मैदान की ओर निकल गया। हम सब गैलरी में बैठे उसे मुस्कुरा-मुस्कुराकर बातें करता देख रहे थे और अनुमान लगा रहे थे कि वह किरन से क्या बातें कर रहा होगा। क्रिकेट मैच की तरह कमेंट्री शुरू हो गई थी।

"आपको क्या लगता है मनिंदर, लड़की लड़के से क्या कह रही है?" प्रसाद बोला।

"यशपाल लड़के के चेहरे की मुस्कराहट को देखकर तो यही लगता है कि लड़की ने लड़के का प्रणय निवेदन स्वीकार कर लिया है", मोहित ने कहा।

More Books - www.The-Gyan.in

"मनिंदर मेरा भी यही खयाल है। ये घड़ी-घड़ी जिस तरह अपने पायजामे का क्रीज एडजस्ट कर रहे हैं, ऐसा या तो सचिन तेंदुलकर किया करते थे या मेरे दूर के मामा विजय सिंह।"

"यशपाल कहीं ये वही विजय मामा तो नहीं हैं जो बे-इंतहा ठरकी थे और चार बार गर्ल्स कॉलेज के सामने से गिरफ्तार किए गए थे!"

"बिलकुल ठीक पहचाना आपने मनिंदर। मेरे ठरकी मामा विजय सिंह कलाई के जादूगर थे। उनकी कलाइयाँ मामा के पायजामे के भीतर वैसा ही जादू करती थीं जैसा ये लड़का कर रहा है।"

"यशपाल हमारे दर्शकों में जिस किस्म का उत्साह है वो देखते ही बनता है। मुझे याद आ रही है उन्नीस सौ चौरासी की वो हसीन शाम जब हम लोग वेस्ट इंडीज के खिलाफ फाइनल मैच खेल रहे थे", मोहित प्रसाद की ओर देखकर मुस्कुराया।

"अबे चुप करो बे दू कौड़ी के कमेंट्रेटर। विवेक आ रहा है। लग रहा है बन गई बात", अखिल ने कहा और हम सब विवेक की ओर भागे। वह ऐसे शरमा रहा था जैसे नई बहू गौने के बाद पहली बार मायके आई हो और उसकी सहेलियाँ सैयाँ जी के बारे में सारी कहानी सुनने उसकी ओर दौड़ी चली आ रही हों।

"क्या हुआ बे, पट गई?" अखिल ने कौतूहल से पूछा।

"यार पटी का तो पता नहीं लेकिन ये जरूर बोली कि वो भी मुझे पसंद करती है। कह रही थी पहले क्यों नहीं बताया। तुम तो मुझे स्कूल टाइम से क्यूट लगते हो", विवेक बोला।

"माई लार्ड! तुम सब लोग गवाह हो। अगर लड़की पट गई तो पहले चुंबन पर हमारा ही अधिकार होगा। काहे से लड़की मेरी वजह से ही पटी है। बाद में मुकर मत जाना विवेक", अखिल ने विवेक का हाथ अपने हाथों में ले लिया था।

"अबे खुद तो नाइंथ में सेक्स कर लिया है और अब किसी और का सीन सेट हो रहा है तो ससुर वहाँ भी टाँग अड़ा रहा है। कितना हरामी है ये लड़का!" पांडे अपना पेग गुटुकते हुए बोला।

"तुम साले अभी तक वहीं अटके हुए हो। नाइंथ में किए हैं तो अपनी मेहनत से किए हैं। कौन-सा तुम्हाई मेहरारू उड़ा ले गए थे जो चिर रही है तुम्हाई।" अखिल और पांडे उलझ पड़े।

"चुप करो बे! सेक्स कर लिया तो क्या उखाड़ लिया! पहले प्रेम करना सीख लो। प्रेम करना समझते हो?" मैं चार पेग डाउन था और पूरी तरह से दार्शनिक हो रहा था।

"हाँ बिलकुल समझते हैं। जैसे हमको आयशा टाकिया से प्रेम है। सच्चा प्यार करते हैं

More Books - www.The-Gyan.in

उससे।" पांडे बोला। "सिर्फ और सिर्फ आयशा टाकिया से। जाने कितनी लड़कियाँ आईं और गईं लेकिन हमारा प्यार तो आयशा टाकिया के लिए ही रिजर्व है।"

"अबे ये सच्चा प्यार होता कैसे है बे तुम लोग को!" प्रसाद बोला। "हमको तो प्यार कितना बार हुआ है लेकिन सच्चा वाला कभी नहीं हुआ। प्यार दस्त की तरह ही होता है, कभी भी किसी को भी लग जाता है, कितनी बार भी लग सकता है और और जब लगता है तो जब तक इंसान को निचोड़ नहीं लेता तब तक छोड़ता नहीं है। फिर सीधे आत्मा निकाल के मानता है।" प्रसाद दार्शनिक हो रहा था।

"आजकल लड़कियों को अच्छे लड़कों की कदर कहाँ होती है!" मोहित ने कहा। या शायद रॉयल स्टैग ने कहा होगा। अब सबके अंदर से रॉयल स्टैग ही बोल रही थी।

"ये रोतलू सिंह तो बस रोते फिरेंगे हर बात में। कदर का कद्दू खाओगे क्या? जो मिल रही है उसी के पीछे लग लो। कल को अगर कोई लड़की चुम्मा दे रही होगी तो गाल आगे करोगे या फिर सवाल करोगे— बहन ये सब बाद में, पहले ये बताओ कि तुम मेरी कदर करती हो या नहीं।" अखिल मोहित से उलझ गया।

"तुम तो हर चीज को चुम्मा से जोड़ देते हो। प्रेम निष्काम होता है। निष्काम समझते हो तुम लोग? घंटा समझते होगे। मतलब जो बिना किसी चाह, बिना किसी इच्छा और प्रयोजन से किया गया हो।" मैं पूरी तरह से आउट हो चुका था। मैं तखत पर अपना पेग हाथ में लेकर खड़ा हो गया था और नीचे सारे लड़के पालथी मारकर बैठ गए थे। मुझे गिलास में वही प्यारी लड़की दिख रही थी जो मुझे घाट पर दिखी थी। गिलास में झाँककर मैं उससे बातें कर रहा था। "जो प्रेम निष्काम नहीं है वो प्रेम नहीं है। वो बस शरीर की चाह है। गोपियों और कृष्ण का प्रेम निष्काम है। मीरा का प्रेम निष्काम है।"

"मेरा और आयशा टाकिया का प्रेम निष्काम है।" पांडे कन्विक्शन से बोला।

"अबे चलो बे। बड़े आए निष्काम वाले। निष्काम प्रेम जब होता है तो अंदर से आवाज आती है।"

"घंटा!"

"आती है।"

"क्या आवाज आती है?"

"कुछ इस तरह से।" "होआ...." मैं उलटी कर रहा था। जमीन पर गिरा पड़ा था और लगातार उबकाई आ रही थी।

"ये लो जी। इनका निष्काम प्रेम निकल आया। बाहर लिटाओ साले को गैलरी में।" पांडे और अखिल ने भले आदमियों की तरह मुझे बाहर तखत पर लिटा दिया और मेरा सर

More Books - www.The-Gyan.in

तखत पर किनारे टिकाकर एक करवट सुला दिया।

"इसको साले को किससे निष्काम प्रेम हो गया है पांडे?" अखिल ने पूछा।

"है एक लड़की। घाट पर दिखी थी हम लोग को। है बड़ी सुंदर। इतनी प्यारी है कि माल कहने का मन नहीं होता। पाप लगेगा। हम तो कबाड़ी से कहकर फोन नंबर भी निकलवा लिए हैं। और पूरा हिस्ट्री जोग्रेफी। यहीं मेटलर्जी ब्रांच में है। शुभ्रा नाम है।" पांडे बोला।

"अबे नंबर निकलवा लिए हो! चलो निशंतवा के फोन से मैसेज डाल देते हैं और छह आठ मिस काल। सुबह उठेगी तो निशंतवा की चिरेगी।"

"अबे नहीं बे। फालतू में बिचारा सीधा-साधा लड़का निपट जाएगा।"

"पांडे तुम न। रूममेट रहो उसके। पापा न बनो। क्या पता साले का सीन ही सेट हो जाए। ऐसे निष्काम प्रेम करके तो जिंदगी झंड करवाता फिरेगा। बैरागी लोग खाली कटवाते फिरते हैं, भोगी लोग मजा करते हैं। हम लोग तो एहसान कर रहे हैं इसके ऊपर। देखो जैसे विवेक के ऊपर एहसान किए हैं। लाओ फोन दो इसका।"

"अबे निशंतवा के साथ बकचोदी मत करो बे।"

"पंडी जी। बकचोदी ने जाने कितने लोगों की लाइफ बना दी है। सीरियसली घंटा कुछ हुआ है।"

अखिल ने पांडे के हाथ से मेरा फोन छीन कर शुभ्रा को दस-बीस छोटी-छोटी मिस्ड काल छोड़ दीं और निष्काम प्रेम का मेरा सारा ज्ञान छोटे-छोटे मैसेजेस में भेज दिया। 'आई लव यू' अलग चेंप दिया। रात के दो बज रहे थे इसलिए तुरंत-के-तुरंत कुछ हल्ला नहीं हुआ। जो हुआ अगली सुबह ही हुआ।

More Books - www.The-Gyan.in

सैंयाँ तेरे प्यार में, लुट गए रे बाजार में

अगले दिन यह छोटी-सी बात एक नैशनल एजेंडा जितनी बड़ी हो गई थी। रात तक यह सिर्फ मेरे और शुभ्रा के बीच की बात थी और अगले दिन शाम होने तक समूचे बीएचयू के काँख की खुजली बन गई। जिसका मन किया, खुजा के चला जा रहा था। खुजली बढ़ के खाज हो गई और खाज बढ़कर दाद। लंका सुलगाने की शुरुआत करने में जो भूमिका हनुमान जी की पूँछ की रही होगी, वही भूमिका इस घटना में श्रद्धा सिंह की रही।

श्रद्धा सिंह एक तथाकथित फेमिनिस्ट लड़की थी। थर्ड इयर मेटलर्जी में पड़ती थी। IIT BHU की लड़कियों से फेमिनिज्म की नमस्ते भी उसी ने करवाई थी, अन्यथा उनके पास भतेरे इंट्रेस्टिंग और बेहतर काम पड़े थे। श्रद्धा सिंह की बड़ी बहन JNU से पढ़ी हुई थी और उसकी छत्रछाया में छोटी भी BHU में फेमिनिज्म का झंडा बुलंद कर रही थी। ये इतने कमाल की मोहतरमा थीं कि दुनिया में किसी भी चीज को फेमिनिज्म से जोड़ सकती थीं। IIT में अफवाह थी कि श्रद्धा सिंह एक दिन फुफकारते हुए साँप की गर्दन पकड़कर कह रही थीं, "ये हिजज- हिजज क्या लगा रहा है। हिज नहीं हर बोलो। तुमको क्या लगता है कि दुनिया में एक ही जेंडर एग्जिस्ट करता है। हाउ डेयर यू इग्नोर एनदर जेंडर। इंडिया में फीमेल और मेल गिनती में बराबर हैं।"

एक और दफा श्रद्धा सिंह ने पूरे इलेक्ट्रानिक्स सेकेंड इयर को लाइन से लगाकर घंटा भर हड़काया था क्योंकि वे उसकी बात पर हँस दिए थे। वह कड़क कर कह रही थी, "आल यू मेन आर डॉग्स। यू मस्ट अन्डरस्टैंड दैट मेन एंड वीमेन आर इक्वल।" जवाब में कोई बुदबुदाया, "प्लीज ऐसा मत कहो, अगर हम लोग डॉग हैं और लड़की लोग हमारे बराबर हैं तो ये तो बड़ी भयावह बात हो गई बहन!"

गर्ल्स हॉस्टल से खतरे की खबर उड़ते-उड़ते ब्वॉयज हॉस्टल आई तो पांडे मुझसे सुबह-सुबह माफी माँगने आया।

"अबे माफ कर दो निशंतवा। रात में सब लोग दारू के नशे में भंट हो गए थे। हम लोग को लगा था कि हो सकता है इससे तुम्हाई बात बन जाए।"

"बहुत बढ़िया बात जमाई है साले। पहली बार कोई लड़की अच्छी लगी और तुम लोगों

More Books - www.The-Gyan.in

ने बीस ठो मैसेज और दस मिस्ड कॉल करके क्या सही इमेज बनाई हमारी।"

"हो सकता है बात बन ही जाए। कितना अच्छा मैसेज लिखे थे हम लोग। अगर शुभ्रा उसको दुबारा पढ़ेगी तो उसका दिल जरूर पिघल जाएगा।" पांडे कवर अप कर रहा था। उसकी आँखों में बला की आशा थी। उम्मीद की चमक थी।

"घंटा। ये अच्छा मैसेज है? मैं तुमसे निष्काम प्रेम करता हूँ शुभ्रा। न इच्छा से, न उम्मीद से, न कामना से, न वासना से। बस निष्काम प्रेम। खालिस निष्काम प्रेम। ये कोई मैसेज हुआ। साले उसको इतना डरा दिया है तुम लोगों ने। उसको भी लग रहा होगा कि मैं उतना ठरकी हूँ जितना दुश्मन फिल्म में आशुतोष राणा था।"

"पर ये तो तुमने ही कहा था निशंतवा। हम लोग खुद से एक अक्षर भी एड नहीं किए हैं। कसम से!" पांडे ने गर्दन को अँगूठे से छूते हुए, भोला चेहरा बनाते हुए कहा।

"हाँ तो हमने कहा था तो तुम भेज काहे दिए। जानते हो क्या रिप्लाई आया है?"

"अरे रिप्लाई भी आ गया!" पांडे फिर से चमक रहा था।

"हाँ आया है। पढ़ लो – आई विल किल यू, ब्लडी रेपिस्ट।"

"अरे तुम लोड मत लो, शुभ्रा नहीं लिखी है। कबाड़ी से कहकर सब पता करवा लिए हैं। श्रद्धा सिंह ने लिखा है उसके मोबाइल से। और अब सारा मामला वही डील कर रही है। फर्स्ट इयर में उसकी किसी चमची ने उस तक खबर पहुँचा दी और वो भड़क गई। बोली कि ये तो पूरे फीमेल जेंडर पर मेल जेंडर की ओर से हमला है।"

"शुभ्रा ने नहीं लिखा है?" अब मेरा चेहरा चमक रहा था।

"हाँ मेरे राजा! उसने नहीं लिखा है। लेकिन इतना खुश मत हो। ज्यादा परेशानी की बात ये है कि श्रद्धा सिंह ने अपनी टाँग अड़ा दी है। सेकेंड इयर के लौंडे बाइक पर तुमको खोज रहे हैं। कह रहे हैं जहाँ मिलोगे वहीं हौंक देंगे।"

"अबे! वो लोग क्यों हौंक देंगे? वो कहाँ से आ गए सीन में!" मेरी हवाइयाँ उड़ी हुई थीं।

"अरे यार! हैं तमाम लड़के हैं जो श्रद्धा सिंह को इम्प्रेस करना चाहते हैं। इसलिए जब भी उसकी किसी लड़के से ठन जाती है तो वो लोग ऑटोमैटिक सीन में आ जाते हैं।"

"अबे यार ये क्या लड़की है, क्या चुल्ल है उसको?"

"अब यार जो भी चुल्ल हो। जो है सो है। फेमिनिस्ट है। चमकदार फ्रेम का लाल चश्मा लगाती है, फैब इंडिया का कुरता पहनती है, कैप्स लॉक में ओपेनली फेसबुक पर पीरियड्स को न छुपाने की माँग करती है, ब्रा पहनने-न-पहनने की आजादी की वकालत करती है। द हिंदू अखबार के एडिटोरियल शेयर करती है और माया एंजेलू की कविता अलग। ब्वाय-कट बाल, चेहरे पर कतई-इंटेंस लुक और पिंक कलर से टोटल परहेज। मतलब ये भाई जी कि

More Books - www.The-Gyan.in

बहुत ही अधिक खतरनाक किस्म की फेमिनिस्ट लड़की है।"

"अब करना क्या है ये बताओ?"

"बुलाए हैं सबको। आ रहे हैं लड़के लोग।"

"किसको बुलाए हो। और जो भी आ रहे हैं वो लोग आकर क्या करेंगे?"

"अरे मैटर हो गया है भाईजी। तुम सीरियसली नहीं ले रहे हो। लड़के तुमको हौंकने के लिए घूम रहे हैं। समझ रहे हो कि नहीं?"

"हैं?"

"अरे डरो नहीं बे! ज्यादा कोई हीरो बनेगा तो अपना तो सीधा हिसाब है। मार देब, मर जाब।"

थोड़ी ही देर में प्रसाद, मोहित, अखिल, विवेक सब आ चुके थे। सोलह नंबर में आपातकालीन बैठक बुलाई गई। प्रसाद और मोहित ने अपने बनारसी दोस्तों को खबर भिजवा दी थी। हॉकी-वॉकी लेकर कुछ गुंडे छाप लड़कों को तैयार करने को कहा गया था। मैं अभी तक नहीं समझ पा रहा था कि बात इतनी कैसे बढ़ गई है। डर लग रहा था सो अलग। सुसुवाही, लंका और पांडेपुर से लड़के आना भी शुरू हो गए थे। एक-एक करके बाइक और साइकल हॉस्टल गेट पर आ रही थीं।

इलेक्ट्रॉनिक्स फर्स्ट इयर के लड़कों को मास बंक लगाने के लिए बोल दिया गया था। जो दो-चार लोग बंक के लिए तैयार नहीं हुए थे उन्हें डिपार्टमेंट के गेट से वापस उठवा लिया गया। और बैक टू हॉस्टल पार्सल। सुसुवाही के लड़के मैटर का जायजा ले रहे थे। ये दो सेकेंड में मोबिलाइज हो जाते थे। बस इतना पक्का हो कि अमुक जगह पर मार पिटाई होने वाली है। ये इकट्ठा हो जाते थे। फीस के नाम पर बस छोटी पेप्सी, दो समोसा और कालाजाम। इससे अधिक कुछ नहीं।

"यार तुम लोग थोड़ा ज्यादा नहीं कर रहे हो? जरूरी नहीं है कि बात इतनी बढ़ चुकी हो। क्या पता वो लोग मारने के जुगाड़ में न ही हों।" मैं डर रहा था।

"हैं? मार पीट नहीं होने वाली है?" सुसुवाही के लड़कों में से एक बिफर पड़ा। वह यूँ देख रहा था जैसे उसके साथ कोई बड़ा भारी धोखा किया गया हो। शादी-ब्याह की ग्रांड पार्टी का सपना दिखा के मुंडन में बुला लिया गया हो। "यार भाईजी टाइम मत खराब करो। जहाँ बंपर लड़ाई न होने वाली हो वहाँ हम लोग अपना टाइम खराब करने जाते ही नहीं हैं। अभी ही क्लियर कर लो। लड़ाई होएगी कि नहीं?"

"अबे रिंकू बइठो रजा! कहाँ जा रहे हो? होगी लड़ाई। मैटर हुआ है तभी तो तुम लोग को बुलाए हैं", प्रसाद ने बीच में मामला सँभालने की कोशिश की। लेकिन रिंकू हत्थे से

More Books - www.The-Gyan.in

उखड़ गया था।

"हाँ तो फिर ये लड़का काहे कह रहा है कि छोटी-सी बात ही है?" रिंकू बोला।

"अरे इसको क्या पता कि कितनी बड़ी बात है। तुम चुप रहो बे निशांत। यहाँ हम लोग मैटर सॉर्ट करने की कोशिश कर रहे हैं और तुम अलग रायता फैला रहे हो। अब ये सिर्फ तुम्हारा इशू नहीं है। पूरे बनारस का इशू है।"

"हर-हर महादेव। मार देब भोसड़ी वाले का, जउने तुम लोग की तरफ हाथ उठाइब", बनारस की इज्जत पर सवाल उठता देख रिंकू जोर से दहाड़ा।

मैंने रिंकू की ओर कातर निगाहों से देखा। उसका डील-डौल देखकर मुझे जरा भी भरोसा नहीं हो रहा था कि ये लड़का किसी को मार भी सकता है। वह ब-मुश्किल पाँच फुट चार इंच रहा होगा और एकदम पतला-दुबला था। हाँ लेकिन उसके साथ के लड़के जरूर तगड़े थे। मेरी हिम्मत उन्हीं को देखकर बँधी थी। लेकिन ये रिंकू का दोष नहीं था। दोष बनारस के उस मुहल्ले की हवा का था जहाँ वह रहता था। लंका के लौंगलत्ते का जिन्हें वह रोज शाम खाता था। पहलवान की मलइयों का था जिसे वो अभी-अभी गले के नीचे एक बड़ा गिलास धकेलकर आया था।

"अबे थर्ड इयर मेटलर्जी वाले आ रहे हैं", हॉस्टल में हल्ला उठा।

"केमिकल सेकंड इयर भी है", दूसरी तरफ से हल्ला आया।

"हैं? क्या मुसीबत है यार", मैंने कहा

"आने दो सालों को", प्रसाद बोला। "मानवेंदर होगा मेटलर्जी से। प्रवीण सिंह केमिकल से होगा। ये साले दो साल से श्रद्धा सिंह को पटाने की जुगाड़ में हैं। उनको लगता हैं कि लड़की फ्रैंक है। ओपन है। दिल्ली से है। इम्प्रेस हो जाएगी तो एक दिन दे ही देगी।"

"देगी क्या?" रिंकू ने उत्सुकता से पूछा। वह आगे बढ़ते-बढ़ते रुक गया था।

"अबे रिंकुआ, तुमको जिस काम के लिए बुलाया गया है तुम चुप-चाप वो करो। ये देने-दिलाने वाली नेतागीरी मत करो", प्रसाद बोला।

"यार हम कब मना किए हैं मारने को। जिस चीज के लिए हम लोग आए हैं वो तो होगा ही। तसल्लीबख्स काम होगा, उसकी चिंता मत करो गुरु। फिर भी ऐसे ही पूछ रहे हैं। सुने हैं कि IIT बीएचयू की लड़कियाँ काफी फ्रैंक होती हैं।"

"मुँह देखे हो अपना?"

"क्यों? क्या खराबी है। स्मार्ट तो हूँ", रिंकू ने दोनों हाथ कमर पर अटकाते हुए कहा। चेहरा जमीन से तीस डिग्री पर उठाकर। किसी विजनरी की तरह क्षितिज में देखते हुए। अपलक। मूर्तिवत। वो खड़े-खड़े स्मारक हो गया था।

More Books - www.The-Gyan.in

"अबे बुजरो के! अउकात में रहो तो बेहतर होगा", प्रसाद ने उसका गौरवशाली स्मारक छिन्न-भिन्न करते हुए कहा।

"हाँ तो फिर लड़ लो तुम ही लोग। बउचट साले। जा रहे हैं हम लोग। कह रहे हैं कि मुँह पे मत जाओ। साला तुम IIT वालों को लगता हैं कि अच्छा कॉलेज से क्या पढ़ लिए हो तो दुनिया भर पे तुम्हीं लोग कलक्टरी करोगे। यहाँ साला तुम लोग के लिए हम लात भी खाएँ और बेज्जती भी कराएँ। अब जाओ खुदई कूट लेओ सबको।"

रिंकू जाने लगा। आनन-फानन में सुसुवाही के सभी लड़के मोटर साइकिल स्टार्ट करने बढ़े। मेरी जान सूख रही थी। मैंने प्रसाद की तरफ देखा कि वह उसे रोक ले, लेकिन प्रसाद ने भी बात अपनी इज्जत पर ले ली थी। वह रिंकू को रोकने-मनाने के लिए एकदम तैयार नहीं था। मैं कातर निगाहों से एक-एक करके सबकी तरफ देख रहा था। पांडे, मोहित, अखिल, विवेक, सब मेरी तरह ही क्लू-लेस नजर आ रहे थे। मैंने अपनी सारी आशा पांडे पर टिका दी। पांडे दूसरी तरफ देखने लगा। मैं चाह रहा था कि कम-से-कम उसे अपराधबोध ही करा दूँ। उसे अहसास हो कि ये सारा रायता उसी का फैलाया हुआ है इसलिए इसे समेटने की जिम्मेदारी भी उसकी ही है।

"डूड! रिंकू रुको यार ब्रो", पांडे ने कहा। रिंकू ठिठका।

"ब्रो अभी आपस में लड़कर क्या होगा। तुम्हारे रहते, ये साले दिल्ली के 'हिप' लड़के बनारस के 'ठेठ' लड़कों को पीट जाएँगे तो कितनी शरम की बात होगी। डूड सुन न", पांडे ने आखिरी दाव खेला।

रिंकू रुक गया। और उसकी मोटरसाइकल भी। ये एक नाजुक मौका था। यहाँ पर या तो 'डूड' और 'ब्रो' का कूल-सा संबोधन काम कर गया था या फिर 'बनारस बनाम दिल्ली' से उपजा ठेठ बनारसी भाईचारा। मैंने प्रसाद को कोहनी मारी उसने आगे बढ़कर रिंकू से हाथ मिलाया। "हर-हर महादेव!" रिंकू चिल्लाया।

"हर-हर महादेव! मार देब, मर जाब", पांडे ने छौंका लगाया। भाईचारे की लहर दौड़ गई।

हम सब रिंकू के पीछे हो लिए और हॉस्टल के बाहर निकले। मानवेंदर और प्रवीण सिंह, सात-आठ लड़कों के साथ अपनी बाइक खड़ी कर रहे थे। रिंकू ने आव देखा न ताव और उनमें से एक लंबे बाल वाले लड़के को बिना अल्टीमेटम तीन चार कंटाप रसीद दिए।

"अबे उसको क्यों मार रहे हो! वो फर्स्ट इयर का है। हमारी ब्रांच से", प्रसाद चिल्लाया।

"अबे तो किसको मारना है, पहिले से बोलो न", रिंकू चीखा।

"अबे विजय तुम किनारे हो", विजय डरकर तुरंत किनारे लग लिया। वह जड़वत खड़ा

More Books - www.The-Gyan.in

था। गाल सहलाते हुए प्रश्नवाचक आँखों से हमारी ओर देखते हुए। पूछता हुआ। समझता हुआ। सुबुकता हुआ।

"हाँ अब बाकी सबको मारो", प्रसाद ने उँगली से इशारा किया।

मैं यह देखकर हैरान था कि रिंकू इतना दुबला-पतला होकर भी मानवेंदर को अकेले मार ले रहा था। ऐसा लग रहा था कि साक्षात् बनारस, दिल्ली पर चढ़ बैठा है। पाँच मिनट की संक्षिप्त लड़ाई में समझ आ गया था कि मेटलर्जी और केमिकल वाले आज कस के कुटने वाले हैं। ब्रांच के सभी लड़के जो पहले चैनल के पीछे दर्शक बने छुपे हुए थे, मौके का फायदा उठाकर लड़ाई में कूद पड़े और अब ये एक टिपिकल हिंदुस्तानी लड़ाई बन चुकी थी।

टिपिकल हिंदुस्तानी लड़ाई वह खास किस्म की लड़ाई होती है जिसमें कमजोर आदमी तब तक शामिल नहीं होता हैं जब तक यह पक्का नहीं हो जाता कि पलड़ा किसका भारी है और जीतने की सारी प्रोबेबिलिटी किस टीम की है। और जैसे ही जीतने का सीन क्लियर हो जाता है, लड़ाई में वे सारे लोग भी शामिल हो जाते हैं जिन्होंने जीवन में आज तक किसी पर हाथ न छोड़ा हो। यहाँ भी वैसा ही हुआ। चूँकि रिंकू एंड पार्टी जीत रही थी, पूरा इलेक्ट्रोनिक्स फर्स्ट इयर इस लड़ाई में शामिल हो गया। सबके हाथ अलसा रहे थे। खुजा रहे थे।

मैं दावे के साथ कह सकता हूँ आज यदि यहाँ से मोहनदास करमचंद गाँधी भी गुजर रहे होते तो वे सत्य और अहिंसा की प्रतिज्ञा भूलकर प्रवीण सिंह और मानवेंदर को दो लाठी पेल चुक होते। गाँधी जी की देखा-देखी अन्ना हजारे भी पिल पड़े होते और हाथ छोड़ देते। गाँधी जी और अन्ना हजारे से प्रेरणा लेकर मैं भी लड़ाई में कूद पड़ा और मैंने जमीन पर पड़े एक दुबले-पतले लड़के को कालर पकड़ कर वापस खड़ा किया और एक दम भर चमाट लगाई।

"सही शॉट मारे हो डूड। नाइस ब्रो", रिंकू ने शाबाशी दी। "जियो रजा जियो! थूर दो साले बउचट को।"

मैं एकदम से पीछे हो लिया जैसे उस दुबले-पतले लड़के के कान ने करंट मारा हो। मेरा हाथ कल्ला रहा था। मैंने अपना हाथ जेब के भीतर डाल दिया। दुबला-पतला लड़का मुझे गुस्से में घूर रहा था। मैं वापस आगे बढ़ा और उसे फिर से कंटाप रसीद दिया—

"साले अपनी ये सब नेतागीरी कहीं और जाकर करना। मेरे और शुभ्रा के मामले में दुबारा घुसे तो जिंदगी भर पछताओगे। आई समझ?" मैंने कड़क आवाज में हिदायत दी।

पतले लड़के ने नजरें नीचे कर लीं और वह अपना गाल रगड़ रहा था। यह मेरे लिए एक ऐतिहासिक जीत थी। ऐसा पहली बार हुआ था मैं किसी की आँखों में झाँककर घूर रहा था और उसने डरकर नजरें झुका ली थीं। मैं अमेरिका हो गया था और वह अदना-सा

More Books - www.The-Gyan.in

जापान। मेरा कंटाप उसके गाल पर लिटिल ब्वॉय एटम बम बनकर गिरा था। मैं उसे दो-तीन कंटाप और धर देना चाहता था कि अचानक हल्ला हुआ— "अबे पूरा मेटलर्जी फर्स्ट इयर आ गया है।" जरा-सी देर में सत्तर लड़के हॉस्टल के गेट पर हमें मारने के लिए तैनात थे। हमने पलट कर रिंकू की तरफ देखा। जवाब में रिंकू ने हमें ऐसे देखा जैसे कि वह कहना चाह रहा हो, कि सालों मुझे क्यों देख रहे हो?

"ब्रो! मेटलर्जी वाले आ गए हैं। अब तुम ही बचा सकते हो डूड!" मैंने रिंकू से कहा।

रिंकू आगे बढ़ा। मेटलर्जी फर्स्ट इयर से रोहित आगे बढ़ा। रिंकू हमारी उम्मीद था और रोहित मेटलर्जी फर्स्ट इयर वालों की। यहाँ पर भिड़ जाने का मतलब था कि एक बड़ी लड़ाई होने वाली है। न भिड़ने का मतलब था कि हार मान ली गई है। रिंकू हार मान लेने वालों में से नहीं था।

"क्या बे! मारोगे? हाथ लगा के दिखाओ", रोहित चीखा।

"अबे तुम हाथ लगा के दिखाओ। अभी यहिएँ तोड़कर रख देब", रिंकू चिल्लाया।

"हाँ तो तुम मार के दिखाओ न। मारो! फट रही है क्या तुम्हारी?"

"अबे लड़ने तुम लोग आए हो इतना दूर से दनदनाते हुए। हम लोग तो यहाँ पहिले से गेम कर रहे थे। आए हो तो हाथ चला के दिखाओ न!"

"अबे तुम्हारी अन्टी में दम हो तो तुम हाथ छोड़ो न। लेकिन गुरु ये याद रखना कि दुबारा किसी पे हाथ छोड़ने के काबिल न रहोगे। काहे से हाथ तो तुम्हारा हम उखाड़ ले जाएँगे आज।"

"लो बेटा। ये रहा हमारा हाथ। उखाड़। हम भी देखें कितना दम है तुम्हारे।"

"भाई जी मारना नहीं था तो यहाँ क्या पंजीरी बटोरने आए थे!"

हम लोग समझ गए थे कि अब यह लड़ाई कहीं जाने वाले नहीं थी। बस ले-देकर भीड़ इकट्ठा हो रही थी। मेटलर्जी फर्स्ट इयर वाले इसलिए भी आए थे क्योंकि उनके मुताबिक फर्स्ट इयर की सबसे सुंदर लड़की पर अगर किसी का हक था तो वह बस उनका था। वे कतई बर्दाश्त नहीं कर सकते थे कि दूसरी ब्रांच का कोई लड़का उसे लाइन मारे। इसलिए यह लड़ाई कम और रसम अदाएगी अधिक बन गई थी।

"बुजरो के! पवन कुमार मिश्रा प्रॉक्टर को लेकर आ रहा है। भागो यहाँ से नहीं तो अभी सब के सब एक्सपेल कर दिए जाओगे", कबाड़ी अपनी साइकिल पर बोरी रखे चला आ रहा था।

"दो-चार महीना हुआ नहीं कॉलेज आए हुए और लगे लऊँडियाबाजी के चक्कर में मार-पीट करने। अबे जब लाठी घलेगी पिछवाड़े पे तब सारी आशिकी चुआते फिरोगे पूरे

More Books - www.The-Gyan.in

मैदान में। अच्छा रिंकू जी भी आए हुए हैं! बड़े खूबसूरत लग रहे हैं नजर के काले चश्मे में। कहाँ से लिए हैं?"

"का बे! तुमको क्या मतलब कहाँ से लिए हैं साले कबाड़ी", रिंकू ने विरोध दर्ज किया।

"छिनरो के। कबाड़ी यदि हम हैं तो हमारी कबाड़ की दुकान से बीन के, तुम जो चश्मा फिरी में उठा ले जाते हो, उससे तुम सलमान खान नहीं हो जाओगे। अभी चिट्ठी-पतरी खोलने लगे तो इतना देर में जितना इम्प्रेसन जमाए हो, सब कंडम हो जाएगा। दो किलो बियर का बोतल तउलवा के तुम्हारे बाप हर महीने जो बीस रुपिया कमा पाते हैं, उसी पैसे से तुम बॉबी देओल हेयर कटिंग सैलून से इस्पेसल फेसियल और कटिंग करा पाते हो। अब दफा हो जाओ इहाँ से नहीं तो अगर हम साइकल स्टैंड पर लगा दिए तो फिर भागने भी न पाओगे।"

रिंकू अपनी लट समेटते हुए और दाँत पीसते हुए वहाँ से सरक लिया। पीछे-पीछे सुसुवाही के उसके सारे दोस्त भी दफा हुए। कबाड़ी ने साइकल स्टैंड पर लगाकर उसके कैरियर पर बँधी बोरी खोल ली। जमीन पर बिछाई और बैठ गया। हम समझ गए कि हम लोग अब लंबा पेले जाएँगे। बोरी बिछ जाने का मतलब होता था कि कबाड़ी फुरसत में है। या फिर भाँग की गोली गले के नीचे ठेले हुए अधिक समय नहीं हुआ है। वह पालथी मारकर बैठ गया और इस तरह से लंबी साँस लेने लगा जैसे अभी प्राणायाम करना शुरू कर देगा।

"देखो! ये रिंकू-फिंकू जैसे लड़कों के चक्कर में मत पड़ो तुम लोग। अभी तुम लोग पेप्सी और कालाजाम खिला रहे हो तो तुम्हारी तरफ से चौधराहट कर रहा है। कल को मेटलर्जी-केमिकल वाले छोटी गोल्डफ्लेक का डब्बा बढ़ा देंगे तो उनकी तरफ से लड़ जाएगा। घर का हगा घर में ही लीपना चाहिए, उसके बाहर मत फैलाओ। और प्रसाद तुम बड़का तीरंदाज बने फिर रहे हो, बहुत क्रांति फूट रही है शरीर में, तो खुद्दे हाथ चला लो। और मानवेंदर तुम? छिनरो के अब तो श्रद्धा सिंह को पिछियाना छोड़ दो। कुछ नहीं मिलने वाला। कुच्छो नहीं! लिख के ले लो। तुम्हारे जैसे चालीस बकलोल पिछले तीन साल से इसी आस में कटवाते फिर रहे हैं। वो बहुते हाई फाई लड़की है, तुम लोग के बस की नहीं है। और वह यहाँ चाहे जितना महिला महामंडल चला ले, दिल्ली में उसके चार पर्सनल ब्वायफ्रेंड हैं और एक भावी शौहर अदद। इससे पहले कि पवन कुमार मिश्रा प्रॉक्टर को लेकर यहाँ पहुँचे तुम सब दूसरे हॉस्टल जाके दुबक लो। शाम में लौटना तो सबके हाथ में किताब, चार्ट पेपर, ड्राफ्टर हो और कंधे पर बैग वगैरह टँगा हो।"

हम सब फटाफट यहाँ-वहाँ सरकना शुरू हो गए। कबाड़ी ने हॉस्टल के गार्ड को समझा दिया था कि पवन मिश्रा आएँ तो यही कहना कि सर आपको कोई गलतफहमी हुआ है, यहाँ तो कोई लड़ाई-उड़ाई नहीं हुआ। बाहर से दो-चार लड़के आम तोड़ने जरूर आए थे तो हम उनको भगा दिए। गार्ड ने ताश की नई गड्डी की डिमांड जाहिर की और बात सील की गई।

More Books - www.The-Gyan.in

दस मिनट के बाद वैन में पवन कुमार मिश्रा, प्रॉक्टर के एन सिंह, श्रद्धा सिंह और छह-आठ सिक्योरिटी के साथ आए भी पर हॉस्टल इतना शांत और हसीन नजर आ रहा था जैसे यहाँ अभी-अभी बसंत ऋतु का आगमन हुआ हो।

श्रद्धा सिंह ने गार्ड को लंबे से लपेटा लेकिन वो टस-से-मस नहीं हुआ। बहन, माँ, भौजाई और पत्नी की शक्लें याद करने का वास्ता दिया गया लेकिन ढाक के तीन पात। गार्ड ये मानने को कतई तैयार नहीं था इस घटना का हजार सालों से महिलाओं पर होते आ रहे अत्याचारों, पुरुष-प्रधान भारतीय समाज, लड़कियों के कच्ची उमर में स्कूल छोड़ देने की मजबूरी और भारत देश के तीसरी दुनिया से बदतर होने से सीधा-सीधा संबंध है। पवन मिश्रा ने गार्ड को चेतावनी दी कि यदि इस घटना में कुछ भी सच्चाई रही होगी तो उसे नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा लेकिन गार्ड उनकी बात को अनसुना करता हुआ खुली आँख से मेस कर्मचारियों के साथ ताश की नई, चिकनी गड्डी से तीन-दो-पाँच और दहिला पकड़ खेलने का सपना देख रहा था।

हम पीछे के रास्ते से धनराजगिरी हॉस्टल की तरफ बढ़ रहे थे। मैं रास्ते भर पांडे को गरिया रहा था कि साले मुझे सोलह नंबर तरफ जाना ही नहीं चाहिए था, तुम लोग ने दारू तो पिलाई ही और गुंडई से नमस्ते भी करवा डाली। पांडे माफी माँग रहा था कि तभी शुभ्रा के फोन से मैसेज आया—

"आई एम सॉरी। प्रॉब्लम में फँस गए तुम लोग। आर यू फाइन? लगी तो नहीं न! कल शाम को चार बजे घाट पर पिजेरिया कैफे में मिलो। आई शुड अपोलोजाइज।"

मैंने वह मैसेज चालीसों बार पढ़ा। दिल बल्लियों उछल रहा था। एक-एक शब्द, एक-एक लव्ज, स्पेलिंग, मात्रा, लिखावट, फॉन्ट, चालीस-चालीस बार। पांडे से भी पढ़वा के कंफर्म किया कि मैं ठीक पढ़ पा रहा हूँ। बार-बार पढ़ने से ऐसा लगता था कि वो शुभ्रा खुद बोल-बोल कर सुना रही है। "पिजेरिया कैफे में मिलो।" "निशांत कल चार बजे।" "तुम्हें लगी तो नहीं निशांत?" प्यार से पूछ रही है। हालाँकि मैंने उसे बोलते हुए नहीं सुना था लेकिन मैं उसकी आवाज की कल्पना कर सकता था। उसकी आवाज झेलम के बहने की आवाज जैसी थी। मैंने मैसेज एक और बार पढ़ा। शुभ्रा की आवाज अभी-अभी तोड़कर लाए गए ताजे शहद-सी मीठी थी, पॉलिश वाली सफेद शक्कर-सी बनावटी मिठास से एकदम अलग, जबान पर चिपक जाने वाली शहद की मिठास लिए हुए। सब लोगों से नजर बचाकर, धीरे से कान में कही हुई बात जैसी हल्की सी आवाज। "तुम्हें लगी तो नहीं निशांत?"

More Books - www.The-Gyan.in

मछलियाँ, तारे, बिंदी, बाली और कंकड़

मैं शुभ्रा से मिलने जाने के लिए तैयार हो रहा था। या यूँ कह लें कि वैशाली की नगरवधू की तरह तैयार किया जा रहा था। प्रसाद, पांडे और अखिल मुझे घेरकर खड़े थे और टहल-घूमकर ऐसे देख रहे थे गोया चकले पर नया माल पसंद करने आए हों। दुनिया भर की हिदायतें, टिप्स, पिक अप लाइन्स, डूज एंड डोंट्स, तहजीब-तमीज, पहनने-ओढ़ने-खाने के तरीके का क्रैश कोर्स दिया जा रहा था। पांडे मुझे डीयोड्रन्ट से ऊपर से नीचे तक नहला रहा था प्रसाद इंटरनेट पर बैठ कर मारू पिक अप लाइन्स पढ़कर सुना रहा था।

"अबे ये सही है निशंतवा। शुभ्रा से कहना – Hey by the way, did it hurt when you fell from heaven? Cause girl, you look like an angel to me – कसम बता रहे हैं लड़की सुनते ही सेट हो जाएगी।

"अरे ये वाला तो और भी सही है। बता रहे हैं, लिख लेओ – "You look quite familiar, oh yes, now I recognize. You look exactly like my future wife – वाइफ थोड़ा जादा हो जाएगा। वाइफ को बदल कर गर्ल फ्रेंड कर देना", प्रसाद ने पूरी गंभीरता से कहा।

"सही है न। सेट हो जाएगी बॉस। ये वाला तो और भी कतल है – Is your dad a preacher? Cause girl you're a blessing – अरे वाह! यही वाला यूज कर लो। लिख के ले लो बेटा जी। ये एकदम छू काली कलकत्ते वाली पिक अप लाइन है। खाली जा ही नहीं सकती।" प्रसाद अपनी ही बात के तिलिस्मात में बिंध गया था और अट्टहास करते हुए ऐसे झूम रहा था जैसे उसे माता चढ़ गई हो। ताली बजा रहा था। गोल घूम रहा था। जैसे ये पिक अप लाइन उसकी जिंदगी की सबसे बड़ी खोज थी।

"अबे निशंतवा तुम इसकी बात मत सुनो। इतना भी चेंप वाला लाइन नहीं बोलना चाहिए। साला पहली मुलाकात में ये सब कौन कहता है। कुछ सेफ-सा कह दो ताकि उसे ये न लगे कि तुम उसको अपनी गर्लफ्रेंड मान बैठे हो, जैसे कि – Roses are red violets are blue. I didn't know what perfect was, until I met you – सिम्पल भी है और काम भी करता है। हाथ ऊपर करो। ये लो, काँख में डीओ ढंग से छिड़क लो। दूर तक

More Books - www.The-Gyan.in

महकना चाहिए।"

"माफ कर दो भाई। तुम लोग की मदद नहीं चाहिए। एक बार कर चुके हो। अभी तक तो तुम लोग का फैलाया ही समेट रहे हैं। निष्काम प्रेम का रायता। और हम कोई माला लेकर उसे ब्याहने नहीं जा रहे हैं। सॉरी बोलेंगे और हाल-चाल पूछेंगे बस। अधिक नाराज हुई तो चरण चाप लेंगे। यहाँ वैसे ही गहराई तक चिरी हुई है और तुम लोग लगे हो उसमें हल्दी और कडुआ तेल मलने।"

"यार निशंतवा! तुम न प्रेशर ले लिए हो। बस एक ही बात पर अटक गए हो। हम लोग मैसेज न भेजे होते तो बात यहाँ तक भी नहीं पहुँचती। लेकिन आज की तारीख में कोई एहसान माने तब न। तुम्हार सीन सेट करने के लिए ही हम लोग मेहनत कर रहे हैं। हम लोग को थोड़े ही कुछ मिल रहा है", पांडे ने कहा। वो डीयो लेकर मेरी ओर बढ़ा लेकिन मेरी हालत देखकर पीछे छिटक गया और उसने डीयो का ढक्कन बंद कर दिया।

"यार बहुत जोर से फट रही है", मैंने कहा, और मैं जमीन पर बैठ गया, सिर पकड़ लिया। मैं आज तक कभी किसी लड़की से मिलने अकेले बाहर नहीं गया था। और आज जब मौका लगा तो मुझे उस लड़की से मिलने जाना था जिससे शायद मैं दिल लगा बैठा था। मेरी हालत सर्कस के उस प्रतियोगी-सी हो रही थी जिसने आज तक मुहल्ला लेवल पर भी एक छोटे से नाले के ऊपर मोटरसाइकिल न कुदाई हो और आज उसे सीधे दर्शकों से खचाखच भरे स्टेडियम के एक छोर से दूसरे छोर तक मोटर कुदाने के लिए औचक ही भेज दिया गया हो। हेलमेट अलग छीन लिया गया हो।

काश शुभ्रा ये समझ पाती कि मैं बचपन से शिशु मंदिर, विद्या मंदिर और सनातन धर्म के स्कूलों में पढ़ा हुआ था जहाँ लड़कियों का नाम-ओ-निशान नहीं होता था! स्त्री जाति के नाम पर स्कूलों में हमने या तो आया देखी थी या फिर अग्रेंजी की महिला टीचर। इन स्कूलों के लड़के इतने उत्साही और आशावान हुआ करते थे कि मोहल्ले में यदि कोई लड़की इनकी तरफ मुस्कुरा कर देख भर ले तो ये मन ही मन उसे अपनी धर्मपत्नी मान लिया करते थे और उनके समस्त दोस्त लड़की को तब तक भाभी कहकर बुलाते थे जब तक कि वह कहीं और सेट नहीं हो जाती थी।

सनातन धर्म स्कूल में हमें सिखाया जाता था कि प्रेम का मतलब स्त्री और पुरुष के बीच का प्रेम कतई नहीं होता है बल्कि आत्मा और परमात्मा के बीच का प्रेम होता था। हमें एक से एक कामुक प्रेम कविताएँ भी ऐसे पढ़ाई जाती थीं कि प्रस्तुत कविता में, प्रेमिका आत्मा का प्रतीक है और प्रेमी परमात्मा का प्रतीक है, रूपक अलंकार के माध्यम से कवि यह कहना चाहता है कि आत्मा परमात्मा में विलीन होना चाहती है। काश! वो समझ पाती कि निष्काम प्रेम की सारी चरस मैंने नहीं बोई थी बल्कि ये पिछले बीस सालों के तालीम की उपज थी।

More Books - www.The-Gyan.in

मैं जैसे-तैसे हिम्मत करके वापस उठा और बाइक चालू करके घाट की ओर बढ़ा। दोस्तों ने रिंकू से उधार माँगकर पल्सर दिला दी थी। मैं रास्ते भर अपने दिमाग में यह पक्का कर रहा था कि मैं क्या बोलकर बात शुरू करूँगा। क्या कहना है, क्या नहीं कहना है। कैसे बैठना है, कैसे उठना है। पैर नहीं हिलाना है। जाते ही शुभ्रा को कॉम्प्लीमेंट करना हैं कि वह अच्छी लग रही है और मैं उसे थैंक यू कहूँगा क्योंकि उसने बात का बतंगड़ बनने से रोक लिया।

मैंने घाट पर मोटरसाइकल खड़ी की और हाँफते-हाँफते पिजेरिया पहुँचा। वहाँ शुभ्रा नहीं थी। मैं पसीना-पसीना हो रखा था, इसलिए मुझे लगा कि शुभ्रा के आने से पहले एक बार और डीयो लगा लिया जाए। मैंने स्प्रे मारा ही था कि शुभ्रा एक प्रश्न की तरह यूँ सामने खड़ी थी जैसे एक दफा युधिष्ठिर के सामने यक्ष आ गया था। सवालों के साथ। युधिष्ठिर ने गलत जवाब दिया नहीं कि बदले में मौत मिलेगी।

"तुम मुझसे निष्काम प्रेम करते हो?" शुभ्रा ने सख्त आवाज में पूछा। उसका चेहरा देखकर मेरी घिघ्घी बँध रही थी। मैं ये सोचकर आया था कि वह मुझे सॉरी कहेगी और मैं कहूँगा कि अरे इसकी क्या जरूरत है, दोस्ती में नो सॉरी, नो थैंक्स।

"बोलो! ये निष्काम प्रेम का क्या ड्रामा लगा रखा है?"

"नहीं। वो तो दोस्तों ने लिख दिया था। मैं तुमसे कोई निष्काम प्रेम-व्रेम नहीं करता हूँ", मैं रिरियाने लगा। बगलें झाँक रहा था। दिमाग में गणित कर रहा था कि कहाँ से भाग सकता हूँ।

"मतलब नहीं करते हो? फिर दोस्तों ने ऐसे क्यों लिखा था?"

"नहीं मतलब तुम पसंद तो हो। लेकिन निष्काम प्रेम थोड़ा ज्यादा हो गया।"

"ये होता क्या है निष्काम प्रेम?"

"मने जो प्रेम बिना किसी कामना, इच्छा या वासना से किया जाए वो निष्काम होता है।"

"अच्छा तो तुम्हारा प्रेम निष्काम नहीं है। माने किसी इच्छा, कामना और वासना से प्रेम करते हो?"

"अरे नहीं। मेरा वो मतलब नहीं था। मुझे तुमसे कोई इच्छा या कामना, या फिर वास... माने... वो नहीं है। तुम तो बात पकड़कर बैठ गई।"

"अजीब आदमी हो जी। जब इच्छा और कामना ही नहीं है, तो प्रेम क्यों करते हो? जाकर लूडो और साँप-सीढ़ी खेलो। फालतू टाइम खराब करने के लिए पिज्जेरिया बुलाया। मैं इतना तैयार होकर आई थी।"

More Books - www.The-Gyan.in

"अरे तुम नाराज क्यों होती हो! माने ऐसा भी नहीं है कि कोई इच्छा और कामना नहीं है। वो तो हर लड़के में होती है।"

"अच्छा। तो क्या इच्छा है तुम्हारी। क्या करना चाहते थे?" शुभ्रा ने डाँटते हुए कहा।

"यार सॉरी यार! गलती हो गई लेकिन ये मैंने नहीं किया था। ये सारा मेरे दोस्तों का किया-धरा है। अब दुबारा ऐसा कभी नहीं होगा लेकिन मैं कभी तुम्हारा दिल नहीं दुखाना चाहता था", मैं लगभग रुआसा हो रहा था। मुझे रुआसा देखकर शायद शुभ्रा का दिल पसीज गया होगा और वह हँसने लगी।

"अरे इट्स ओके। मैं तो तुम्हारी टाँग खींच रही थी। तुम रोने लग गए क्या? अरे बाबा मैं तो खुद सॉरी कहने आई थी।"

"नहीं सॉरी मुझे कहना चाहिए। ये सब मेरी गलती है। कितना बवाल मच गया!"

"अरे इट्स ओके। मैं सच में मजाक कर रही थी। मैं सच में तुम्हे सॉरी बोलने आई थी। ये देखो, तुम्हारे लिए चॉकलेट भी लाई थी। आई एम सॉरी। तुमने तो दिल पे ले लिया यार। मुझे लगा तुम क्यूट से लड़के हो तो थोड़ा-सा परेशान किया जाए तुमको।"

"यार मैं आलरेडी इतना नर्वस था। अब ऐसे बोलोगी तो कोई भी डर जाएगा। मैं ऐसे हर रोज डेट पर थोड़ी आता हूँ!"

"एक्सयूज मी! हु टोल्ड यू दैट वी आर ऑन अ डेट", शुभ्रा ने फिर सख्ती से कहा।

"अरे मेरा वो मतलब नहीं था", मैं फिर रिरिया रहा था।

"तुम लड़कों की प्रॉब्लम क्या हैं यार? किसी ने मिलने क्या बुला लिया तुमने उसे डेट मान लिया!"

"आई एम सॉरी शुभ्रा। मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था पर मेरा वो मतलब नहीं था।"

"अरे रिलैक्स यार। तुम इतनी जल्दी डर जाते हो। मैं फिर से मजाक कर रही थी।"

"ऐसे थोड़ी होता है यार। बोलने से पहले बताना चाहिए न। कब गुस्सा हो, कब मजाक कर रही हो। मालूम ही नहीं चलता। तुम्हें पता है मैं कितना डरा हुआ हूँ। मैं आज तक कभी किसी लड़की से डेट करने, मेरा मतलब है मिलने, नहीं गया। नर्वस हूँ यार। फटी पड़ी है।"

"क्यों?" शुभ्रा जोर से हँस रही थी। खिलखिला रही थी। "तुम्हारे स्कूल में कोई तो दोस्त रही होंगी तुम्हारी!"

"नहीं। मैं बॉयज स्कूल से पढ़ा हूँ और कानपुर से हूँ। लड़कियों को पास से देखते ही बुखार आ जाता है। हरारत होने लगती है।"

"क्यों? बॉयज स्कूल के लड़के प्यार नहीं करते?" शुभ्रा खिलखिला रही थी और वो

More Books - www.The-Gyan.in

खिलखिलाते हुए बहुत सुंदर लग रही थी। उसे हँसता हुआ देखकर मैं भी मुस्कुराने लगा।

"करते हैं। लेकिन दिल ही दिल में करते हैं। बेशुमार प्यार करते हैं, बस उनके प्यार का कुछ होने नहीं पाता। इन फैक्ट बॉयज स्कूल के लड़के तो हर लड़की से प्यार कर बैठते हैं। बस कोई लड़की एक बार प्यार से हमारी तरफ देखे तो।"

"अच्छा तो यही है तुम्हारा निष्काम प्रेम!"

"कह सकती हो।"

हम दोनों हँस रहे थे। मैं उसे देख रहा था और वह मुझे। शायद मैं कुछ अधिक देर आँखों में देखता रहा और वह शरमाकर नीचे देखने लगी। थोड़ी देर के लिए हम दोनों चुप से हो गए। इतना कि आसपास की आवाजें मुखर हो गईं। हम सब सुन सकते थे। जैसे कि पीपल के पत्ते ताली बजा रहे थे, दूर घाट पर कोई आरती की घंटी बजा रहा था, एक साधू पूजा के मंत्र बुदबुदा रहा था, मेरी छाती के भीतर कुछ धड़क रहा था, दिल रहा होगा शायद। "कुछ ऑर्डर भी कर दीजिए भैया जी" – पिजेरिया का वेटर कुटिल मुस्कान में कह रहा था, "घाट के उस पार तक घूमिएगा बाबू जी" – मल्लाह पूछ रहा था, "भौकाल चाट, बनारस की पेशल भउकाल चाट", चाट वाला चिल्ला रहा था।

यह वह अजीब-सा क्षण होता है जब आपके शरीर का एक-एक हिस्सा यह सोच रहा होता है कि इस असहज मौन को क्या बोल के खतम कर दिया जाए लेकिन बहुत सोचकर भी आपको कुछ नहीं सूझता और मौन लंबा होता जाता है। आप कुछ भी कह सकते हैं और यह अनकम्फर्टेबल साइलेंस टूट जाएगा लेकिन कहा नहीं जाता। मैं कह सकता था कि क्या खाओगी, कुछ ऑर्डर कर दूँ, तुम हँसती हो तो सुंदर लगती हो, कॉलेज कैसा जा रहा है, घर पर कौन-कौन है, BHU कैसा लग रहा है, या फिर कुछ भी लेकिन मैं बस बुक्का फाड़े शुभ्रा को देख रहा था और यह बस ये सोच रहा था कि क्या कहूँ।

सोचते-सोचते मैं देख रहा था कि उसके माथे पर छोटी-सी, सुंदर-सी बिंदी थी, जो शायद उसने पेन से बनाई थी। सफेद सलवार सूट पर नीले रंग की चुन्नी थी जिसमें माथे की बिंदी की तरह ही छोटी-छोटी छींटें थीं। गंगा जी को आँचल की तरह ढकने वाले नीले आसमन पर भी वैसी ही छींटें थीं। तारे थे शायद। तारे पेन से नहीं बनाए गए थे। उसने कानों में बड़ी-सी बाली लटकी हुई थी जो उसके इधर-उधर देखने से हिल रही थी। बाल की एक लट थी जो उस बाली में अटक जाती थी, मेरा जी किया कि उसे बाली से निकाल दूँ और वह हवा में उड़ने लगे। हैरानी में उसके होंठ गोलाई में खुल रहे थे जैसे गंगा जी में मछलियाँ होंठ खोलकर साँस ले रही थीं। शरमाने से उसकी आँखों में पुतलियाँ दाएँ-बाएँ छिटक रहीं थीं। जैसे सामने आकाश में चंद्रमा भटक रहा था।

अब मुझे उससे डर नहीं लग रहा था। मैं उसको देखता ही जा रहा था और वह मुझसे

More Books - www.The-Gyan.in

अभी तक नजरें बचा रही थी।

"नीचे घाट पर गंगा जी के पास बैठें?" मैंने कहा।

"हाँ चलो", वो मेरी बात खतम होने से पहले ही उठ गई और घाट की सीढ़ियाँ उतरने लगी।

"मैंने तुम्हें पहली बार गंगा जी पर ही देखा था। तुम उस वाली सीढ़ी पर बैठी हुई थी", मैंने उँगली से शुभ्रा को वो जगह दिखाई।

"तुमको यहाँ आना अच्छा लगता है?" मैंने पूछा।

"हाँ। मन शांत हो जाता है", उसने कहा।

"बस यहाँ बैठने भर से?"

"हाँ। गंगा जी में कंकड़ फेंका है कभी?"

"नहीं। हाँ। मतलब फेंका ही होगा। ये सोचकर नहीं फेंका कि चलो कंकड़ फेंकते हैं।"

"मुझे गंगा जी में कंकड़ फेंकना और उसे डूबते हुए देखना बहुत अच्छा लगता है। वहाँ जो भी फेंको, बिला जाता है। जैसे पहले कभी था ही नहीं। बस गोल-गोल लहरें निकल आती हैं। जैसे गंगा जी खिलखिला कर हँसी हों और तुम्हारा बोझ उन्होंने स्वीकार कर लिया हो।"

हम कुछ देर के लिए फिर शांत हो गए और गंगा जी में कंकड़ फेंकते रहे। मैं शुभ्रा को कंकड़ बीनकर दे रहा था और वह उसे घुप्प से पानी में डाल देती थी। मैं उसकी आखिरी कही हुई बात को बार-बार सोच रहा था। "गंगा जी में जो भी फेंको, बिला जाता है। जैसे पहले कभी था ही नहीं।" गौर से देखने पर सचमुच ऐसा लगता था कि वह मुस्कुरा रही थीं।

"निष्काम प्रेम... निष्काम प्रेम!" पीछे से आवाज आई। "निष्काम प्रेम... निष्काम प्रेम!" फिर से आवाज आई। आवाज किसी दैवीय आकाशवाणी की तरह घाट पर गूँज रही थी। यह समझना अधिक मुश्किल नहीं था कि पांडे, प्रसाद, मोहित वगैरह मेरा पीछा करते हुए घाट तक आ गए हैं और आसपास ही तफरी काट रहे हैं।

"तुम्हारे दोस्त हैं!"

"हाँ। चैन नहीं है उन्हें", मैंने शर्मिंदा होते हुए कहा।

"अरे एम्बैरेस मत हो। इतने प्यारे दोस्त कहाँ मिलते हैं!" शुभ्रा ने कहा।

"निष्काम प्रेम... निष्काम प्रेम!" पीछे से फिर से आवाज आई।

"निष्काम प्रेम!" जवाब में शुभ्रा ने भी जोर से आवाज लगाई।

जवाब में पीछे से कोई आवाज नहीं आई।

More Books - www.The-Gyan.in

"निष्काम प्रेम!" शुभ्रा ने फिर से जोर से आवाज लगाई।

सन्नाटा। अस्सी घाट से चलकर उसकी ही आवाज मणिकर्णिका घाट, दशाश्वमेध घाट, प्रयाग घाट, तुलसी घाट तक गूँजकर अस्सी घाट वापस आ गई।

"अरे कहाँ गए तुम्हारे दोस्त? कितना मजा आ रहा था!" शुभ्रा ने कहा।

"डर गए होंगे", मैंने कहा।

"एक बात पूछूँ?"

"पूछो।"

"तुम मुझे सच में पसंद करते हो?"

"हाँ!"

"क्यों?"

"बस ऐसे ही।"

"ऐसे ही? बताओ न!"

"किसी को पसंद करने या प्यार करने की कोई वजह होना जरूरी है?"

"बिलकुल जरूरी है। बिना वजह के कोई किसी को कैसे प्यार कर सकता है?"

"प्यार दुनिया की सबसे अच्छी बात है ही इसलिए क्योंकि उसके पीछे कोई वजह नहीं होती। कोई लॉजिक नहीं होता। जो बातें समझ आ जाती हैं वो साधारण हो जाती हैं। क्योंकि उनमें कोई रहस्य या मिस्ट्री शेष नहीं रहता। सम्मोहन नहीं रह जाता। इसीलिए बाकी बातें उतनी सुंदर हो ही नहीं सकतीं जितना कि प्यार। जिस दिन इंसान ये समझ गया उसे प्यार क्यों होता है, प्यार भी मैथ्स की थ्योरम की तरह बोरिंग हो जाएगा।"

"तुम कितने अनरोमैंटिक हो। झूठ-मूठ ही कह देते कि तुम ऐसी हो। तुम वैसी हो। इसलिए तुम मुझे पसंद हो।"

"झूठ नहीं कहूँगा पर सच ये है कि मैं एक दफा तुम्हें यहीं बैठकर तमाम देर देखता रहा था। बस उसी वक्त तुम मुझे अच्छी लग गईं। बिना किसी वजह के।"

"ऐसा भी होता है क्या?"

"बिलकुल होता है। मुझे तो लगता है कि ऐसा ही होना चाहिए। मैं हमेशा से ऐसा मानता था कि यदि कल कोई मुझे कोई लड़की पसंद आएगी तो बस यूँ ही, पहली दफा देखते ही, वो मुझे हमेशा के लिए अच्छी लग जाएगी।"

"फिल्में बहुत देखते हो तुम?"

More Books - www.The-Gyan.in

"फिल्में तो बहुत नहीं देखता लेकिन स्कूल में जब प्रेम की कविताएँ पढ़ाते थे तो उसमें हमेशा यही होता था। अक्सर ऐसा लिखा जाता था कि किसी को कोई अच्छा लग गया तो जैसे आसपास सब रुक-सा जाता था और उसे समझ आ जाता था कि उसे प्रेम हो गया है। उस दिन तुमको देखकर ऐसा ही लगा। ऐसा पहले कभी नहीं लगा था। जब मैंने तुम्हें वहाँ, उस सीढ़ी पर बैठे देखा था तो तुम दीया लिए हुए बैठी थी और मैं ध्रुवतारा खोज रहा था। तुम्हें देखते ही मैं भूल गया कि मैं क्या खोज रहा था। तुम कुछ-कुछ बुदबुदा रही थी और दीये की लौ में तुम्हारा चेहरा दीया हो रहा था। लाल रंग की उजास में मैं ये पढ़ने की कोशिश कर रहा था कि तुम खुद से क्या बातें कर रही हो। प्रार्थना कर रही थी शायद। या खुद से ही कुछ कह रही थी। या शायद गंगा जी से। मैं तुम्हें एकटक देख रहा था। पहले कभी किसी लड़की से प्यार-व्यार क्या इन्फैचुएशन तक नहीं हुआ था इसलिए समझ नहीं पा रहा था कि भीतर क्या चल रहा है, लेकिन इतना जरूर समझ आ रहा था कि मुझे पहले कोई भी लड़की तुम्हारे जैसी नहीं लगी।"

"तुम बहुत अजीब हो।"

"क्यों?"

"ऐसे कौन बात करता है? ऐसे तो किताबों-किस्सों में ही बात करते हैं।"

"अजीब होना बुरा है?"

"नहीं लेकिन किसी को बिना जाने कैसे पसंद कर सकते हैं?"

"जानकर पसंद करने के लिए दिमाग लगाया जाता होगा। बिना जाने पसंद करने के लिए दिल लगाते हैं।"

"मुझे लगा था कि तुम बहुत शाई हो। शुरू-शुरू में तो तुम कितना शरमा रहे थे और डर रहे थे!"

"हाँ, क्योंकि शुरू-शुरू में तुम मुस्कुरा नहीं रही थी न। फिर तुम हँसने लगी। तुम्हें मुस्कुराता हुए देखकर ऐसा लगता है कि दुनिया में डरने के लिए कुछ भी नहीं है।"

More Books - www.The-Gyan.in

पेन डाउन मूवमेंट, एग्जाम्स, मीडिया

जैसे फिल्मों में हीरो की जिंदगी में विलेन आते हैं। इंजीनियर की जिंदगी में एक दिन यूँ ही अचानक सेमेस्टर एग्जाम आता है। जैसे भगवान ने आग के लिए पानी का डर बनाया, शादीशुदा आदमी के लिए बीवी का डर बनाया, नौकरीशुदा आदमी के लिए मंडे का डर बनाया, वैसे ही विधाता ने एक इंजीनियर के लिए फेल हो जाने का डर रचा। ताकि वह उसे काबू में रख सके। नहीं तो इतिहास गवाह है कि एक खाली इंजीनियर उतना ही बेकाबू होता है जितना बनारस की सड़कों पर टैम्पो, गलियों में साँड़ और सावन के मौसम में कुत्ता।

सबकुछ इतना अच्छा चल रहा था कि दुनियादारी की सुध-बुध नहीं थी। दिन भर सोलह नंबर में पत्ते खेले जा रहे थे। तीन-दो-पाँच, ट्वेंटीनाइन, दहिला पकड़, छकड़ी। मनोहर कहानियाँ, नॉटी अमेरिका, माई फर्स्ट टीचर से पढ़ाई। घंटों लिम्बडी कॉर्नर पर चाय, सुट्टा और छोला समोसा। रात में लंका पर ऑमलेट और लिट्टी चोखा। हर मिनट शुभ्रा से मैसेज पर बात। बियर के नशे में इलेक्ट्रिकल लैब में ट्रांसफॉर्मर की डिजाइन। मेस के बुरे खाने के बीच हर तरह के चावल की ख्वाहिश। कुकर चावल, जीरा चावल, दही चावल, पुलाव का चावल, सादा चावल और मूड खराब हो तो माँ-बहन चावल। हम दुनियादारी को वैसे ही भूल गए थे जैसे राजपाट पाकर खुशी के अतिरेक में, वानरराज सुग्रीव भगवान राम को दिया, सीता माता को खोज निकालने का वचन, भूल गए थे।

सुग्रीव को औकात में लगाने के लिए भगवान राम ने हवा में भीषण बाण छोड़ा था। जोर की आवाज हुई थी। वैसे ही हॉस्टल में कोई चीखा, "अबे सेमेस्टर एग्जाम की डेट आ गई।"

आनन-फानन में सब डिपार्टमेंट की ओर भागे। डेट शीट की खुजैया हो रही थी। डिपार्टमेंट के मस्तक पर जहाँ बड़ा-बड़ा 'इलेक्ट्रानिक्स अभियांत्रिकी विभाग' लिखा हुआ था, उसके बाजू में परचा चस्पा था। 21 जून – माइक्रोइलेक्ट्रानिक्स और सिग्नल्स एंड सिस्टम्स, 22 जून – इलेक्ट्रिकल और एंटीना। आगे पढ़ा नहीं गया। "अबे पहले दो दिन में चार पेपर है", पांडे चिल्लाया। "तीन दिन में सात हैं", प्रसाद चीखा। बगल में लैब असिस्टेंट खड़ा था। उसके चेहरे पर विजयी मुस्कान थी।

More Books - www.The-Gyan.in

“हमारी अटरिया पे आओ रे सजनवा, देखा देखी तनिक हो जाए”, उसने कहा। अधिकतर लड़के तमाम दिनों से डिपार्टमेंट नहीं गए थे। असिस्टेंट को पता था कि कल से, इन एग्जाम्स की वजह से, वे पूरे डिपार्टमेंट के सबसे महत्वपूर्ण आदमी हो जाएँगे।

“अंदर एक और परचा लगा है, जरा उधर भी नजरें इनायत हों बाबू साहेब”, उसने और भी कुटिल मुस्कान बिखेरते हुए कहा।

“अबे क्लास टेस्ट के रिजल्ट आ गए क्या!” कोई चीखा और एक और दफा क्रांति आ गई। देश का भविष्य औचक ही मोबिलाइज हो गया।

अधिकतर सब्जेक्ट्स में तीन क्लास टेस्ट और अटेंडेंस के हिसाब से जोड़-जाड़कर चालीस में छह-आठ नंबर से अधिक नहीं बन रहे थे। सेमेस्टर साठ नंबर का था। उसमें पैंतीस चालीस नंबर लाने से ही नैया पार हो सकती थी। चालीस फीसदी नंबर लाने की कीमत जितना देश का इंजीनियर समझता है उतना शायद ही कोई और समझता होगा। उँगलियों पर हिसाब लगाने से मोटा-मोटा अंदाजा लगाया जा सकता था कि तीन-चार सब्जेक्ट्स में लटकना तो पक्का ही समझा जाए।

गौरतलब है कि ये IIT के लड़के थे जो जीवन में पहले कभी फेल नहीं हुए होंगे। जिनसे उम्मीद की जाती है कि वे देश का भविष्य है। एक दिन नासा जाएँगे। कोई नया-सा प्लैनेट खोज देंगे। एटम के अंदर घुस कर मेंढक की तरह उसकी चीर-फाड़ कर देंगे। सुपर कम्प्यूटर बना देंगे। पानी, हाइड्रोजन, गोबर गैस ही क्या कड़ुआ तेल से चलने वाली कार बना देंगे। कुछ नहीं तो एक करोड़ सालाना का पैकेज ही फोड़ लेंगे।

IIT के वही लड़के हैरान-परेशान-भौचक्के से मारे-मारे फिर रहे थे।

“लोड मत लो बे। अनिरबन दास आज तक किसी को फेल नहीं किया है। तो एक सब्जेक्ट तो अइसहे कम हो गया”, प्रसाद बोला।

“और कर दिया तो क्या उखाड़ लोगे बे उसका?” पांडे बोला।

“पंडी जी हम लोग बनारसी हैं। BHU में बचपन से रह रहे हैं। बोले हैं न कि वो फेल नहीं करता है!”

“और पंकज मिश्र भी आज तक किसी को फेल नहीं किया। सीनियर लोग से कन्फर्म कर लिए हैं”, प्रसाद ने किसी से फोन पर बात करते हुए आधिकारिक और प्रमाणिक सूचना की तरह बताया।

“हाँ वो पंकज मिसिरवा एग्जाम के बाद की छुट्टी में कांफ्रेंस वगैरह का जुगाड़ लगवा कर आस्ट्रेलिया निकल जाता है। इसीलिए किसी को फेल नहीं करता। फेल कर देगा तो इधर ही रुककर उसको सप्लीमेंट्री का पेपर सेट करना पड़ता है। बहुत पहले एक लड़के को फेल

More Books - www.The-Gyan.in

किया था तो उसका फॉरेन ट्रिप कंडम हो गया था। मास्टराइन जी ने जो पेला उसको। तब से उसने ये फेल-वेल का टंटा छोड़ दिया है। कॉपी पूरा खाली भी छोड़ आओगे तो भी पास कर देता है", मोहित ने प्रसाद की बात पर मोहर लगाई।

"और जो इस बार उसका कांफ्रेंस का प्लान ही न हुआ तो?" पांडे ने सवाल किया। सवाल जायज था।

"पंडी जी उखाड़ तो तुम पढ़ के भी कुछ न लोगे। इसलिए जो बता रहे हैं वो सुन लो। बकवास तो ऐसे कर रहे हो जैसे पढ़ लोगे तो डिस्टिंक्शन ले आओगे", प्रसाद ने पांडे पर लगाम कसी।

"अबे तुम हम दोनों का हर बात काटते हो", मोहित ने हमेशा की तरह प्रसाद को सपोर्ट दिया। साथ ही साथ बनारस को भी। वह किसी भी वक्त बनारसी इन्टेलेक्ट पर सवाल बर्दाश्त नहीं करता था।

"मुझे साले सोलह नंबर में घुसना ही नहीं चाहिए था", मैंने रुआसे होकर कहा।

"अबे चुप हो जाओ भोसड़ी के। फिर से तुम्हरा सोलह नंबर वाला राग शुरू हो गया। सोलह नंबर में नहीं घुसते तो कौन-सा बनारस के कलेक्टर बन जाते! बड़का तेज बन रहे हैं। सर मत चाटो", प्रसाद बोला।

"21 जून को माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स और सिग्नल्स एंड सिस्टम्स का पेपर है। एक में मेरा चालीस में तीन नंबर बन रहा है और दूसरे में साढ़े पाँच। साला 'ये बनारस है रजा, ये मौज वाली जगह है', बोल बोल के बहका दिए। दो कौड़ी का बनारस है तुम्हारा।"

"अबे वो देख। अंतरी जा रही है न। हाफ पैंट में है। सिविल की लड़कियाँ हैं। चलो पिछियाते हैं", पांडे ने नया प्रस्ताव रखा। जिसका न सेमेस्टर से लेना-देना था और न ही मेरे दुःख से। पांडे ने साइकल दौड़ाई।

"अरे ये बम आज किस पर फटेंगे", प्रसाद चिल्लाया और हम सब पेड़ के पीछे छुप गए।

"हरे भरे नेम्बुआ, कसम से गोल-गोल", मोहित ने पेड़ के पीछे से भोजपुरी गाना गाकर संगत दी।

सड़क पर सिर्फ पांडे था और सिविल की लड़कियाँ। हम पेड़ के पीछे थे।

"ब्लडी चीप्सटर!" अंतरी ने कहा और पांडे ने साइकिल वापस दौड़ा ली।

"ए रुक!" अंतरी दुबारा चीखी और पांडे सारा जोर लगाकर, साइकिल खींचता हुआ फरार हो गया।

हम हॉस्टल पहुँचे और तय हुआ कि साढ़े छः बजे कबाड़ी की अध्यक्षता में

More Books - www.The-Gyan.in

आपातकालीन बैठक बुलाई जाएगी। कबाड़ी से बेहतर कोई और नहीं बता सकता था कि कौन से सब्जेक्ट में फेल होने की कतई आशंका नहीं है और कौन से सब्जेक्ट में डेंजर भरपूर है। कबाड़ी के इंतजार में कुछ सुट्टे सुलगा लिए गए और सोलह नंबर कमरे में ट्वेंटी नाइन के लिए पत्ते पीस दिए गए।

इस समय हॉस्टल में कुल-जमा तीन तरह के लड़के थे। एक वे जो सब कुछ छोड़-छाड़कर पढ़ने में लग गए थे और इस समय उन्हें दुनियादारी से कोई मतलब नहीं था। वे छाती ठोककर पढ़ सकते थे और उन्हें इस बात से कोई शर्मिंदगी नहीं थी। इन्हें 'बाबा', 'घिस्सू' और 'मग्घू' जैसे बे-गैरत नामों से कोई परहेज नहीं था। कुफ्र नहीं था।

दूसरे किस्म के लड़के वे थे जो पढ़ना चाहते थे क्योंकि उनकी अंदर तक चिरी हुई थी लेकिन इसलिए नहीं पढ़ते थे क्योंकि अगर कोई उन्हें पढ़ता देख लेता तो उनकी इज्जत और 'कूल इमेज' का फालूदा हो जाता। ये कमरे में नोट्स और किताबें इस कदर छुपाकर रखते थे जैसे औरतें छतों पर जब ब्रा और पैंटी सुखाती हैं तो उन्हें मर्दों के कुर्ते और पायजामे के नीचे छुपा देती हैं। खुले में पढ़ना और खुले में शौच करते हुए पकड़े जाना एक बराबर था। इनके कूल गैंग का कोई कूल लड़का यदि इन्हें एग्जाम के लिए तैयारी करते हुए देख लेता तो वह 'ला हौल वा ला कुव्वत – इलला बी अल्लाह' पढ़ने लगता। इनके कमरे का दरवाजा यदि बंद मिले तो ये 'पढ़ाई कर रहा था' का गुनाह स्वीकार लेने के बजाय, 'यार मूड गया था, पॉर्न देख रहा था' का फर्जी कुबूलनामा कर लेते थे।

तीसरे किस्म के लड़के वे थे जिन्हें अच्छी तरह पता था कि वे पढ़कर भी क्या ही उखाड़ लेंगे। इसलिए ये या तो पत्ते खेल रहे होते थे, या फिर काउंटर स्ट्राइक, वारक्राफ्ट और एज ऑफ एमपायर्स का सर्वर बनाने का जुगाड़ कर रहे थे या फिर चालीस एमबी पर सेकेंड से इंटरनेट की चरस सूँघ रहे थे। पढ़ाई-लिखाई में इनकी श्रद्धा उतनी ही थी जितनी आमतौर पर लोगों की स्वच्छ भारत अभियान, देश बदलने के आंदोलन और वोट डालने जैसे कामों में होती है। 'एक अकेला आदमी क्या उखाड़ लेगा' का महामंत्र इनको इतने दुविधा भरे माहौल में जीवंत बनाए रखता था।

मैं जब BHU आया था तो पहले किस्म का लड़का था। महीने भर में दूसरे किस्म के लड़के में तब्दील हो गया था। प्रसाद, मोहित, पांडे, अखिल, विवेक तीसरे किस्म के लड़कों में आते थे।

शाम हुई तो कबाड़ी आया। उसने चेहरे पर अपनी टाट की बोरी जैसा कोई गूढ़ भाव ओढ़ रखा था। यह भी हो सकता था कि वो अफीम फाँक कर आया हो लेकिन साइकिल चलाने के सधे हुए अंदाज को देखकर ऐसा नहीं लग रहा था कि वह हाल ही में भोले बाबा की शरण में था।

More Books - www.The-Gyan.in

“तैयारी चल रही है?” कबाड़ी ने साइकिल को स्टैण्ड पर लगाते हुए, बोरी बिछाकर पूछा।

“फटी पड़ी है”, भीड़ में से आवाज आई।

“काहे?”

“अरे! समझ नहीं आ रहा कि शुरू कहाँ से करें। बस शुरुआत बता दो”, परेशान फर्स्ट इयर ने सवाल किया।

“काहे? सुहागरात पर जा रहे हो?”

“वही समझ लो कबाड़ी बाबा। ठुकाई-पढ़ाई एक बराबर”, भीड़ ने कहा।

“मत पढ़ो। पेपर कैंसिल होने वाला है”, कबाड़ी ने कहा और पुड़िया फाड़कर हथेली में तंबाकू रगड़ने लगा।

“मतलब? कौन कैंसिल कर रहा है?”

“तुम लोग।”

“हम लोग?”

“हौ!”

“क्यों?”

“कल तक अटेंडेंस की लिस्ट निकल जाएगी। भाईस चांसलर पवन कुमार मिश्रा इस बार 80 परसेंट का रूल लगा रहा है। जिसका भी अटेंडेंस 80 परसेंट से कम है उसे इग्जाम में बैठने नहीं दिया जाएगा। दू सौ लड़का लोग तो कम-से-कम इसी चक्कर में निपट जाएगा। बाकी IIT में 90 परसेंट का रूल लगता है। और उसको भी चरस है कि हम लोग किसी IIT से कम थोड़े हैं। तो इसका मतलब ई हुआ कि तुम लोग को एग्जाम देने को ही नहीं मिलेगा। फेल होने का सौभाग्य तुम लोग की किस्मत में है ही नहीं”

“फिर? 80 परसेंट अटेंडेंस किसका होता है। यहाँ तो प्रॉक्सी वगैरह मिलकर 60 भी नहीं बन रहा होगा।”

“हाँ तो इसीलिए हम कह रहे हैं कि बॉयकाट करो। क्रांति लाओ साला। पेन डाउन मूवमेंट करो। ऐसी-तैसी में जाए पवन कुमार मिश्रा। अगर एक भी लड़का इग्जाम देने चला गया तो तुम लोग फिर फर्स्ट इयर रिपीट करना। मोबिलाइज करो लड़कों को। फर्स्ट इयर, सेकेंड इयर, थर्ड इयर, फाइनल इयर। सब। ‘बाबा’, ‘घिस्सू’ और ‘मग्घू’ लौंडों की जमात पर खास ध्यान रहे। ये साले आखिरी टाइम पर धोखा दे सकते हैं।”

“यार प्रॉब्लम क्या है उसको। अचानक से अटेंडेंस का रूल कैसे लगा सकता है?”

More Books - www.The-Gyan.in

“अरे उसके कहने से क्या होता है! वो भाईस चांसलर है तो अपने घर में अपने घर में चांसलरी दिखाए। ये BHU है और BHU कबाड़ी के चलाए चलता है। पवन कुमार मिश्रा के चलाए नहीं।”

“हर-हर महादेव!” पांडे भीड़ में से बोला।

“अरे पूरी बात तो सुन लो बे पंडित। कावड़ निकालने जा रहे हो? हैं? कांवरिए हो? क्रांति की बात उठी नहीं कि हर-हर महादेव शुरू। पूरा प्लानिंग करना पड़ेगा, नहीं तो भोले बाबा भी कुछ नहीं कर पाएँगे। एक-एक लड़का तैयार होगा तब जाके कुछ होगा। कोई एग्जाम लिखने नहीं जाएगा। कल से कोई क्लास भी नहीं जाएगा। चार कैटेगिरी के लोगों से खास सावधान रहो— क्लास के टॉपर्स से, लड़कियों से, 90 परसेंट अटेंडेंस वालों से और कमजोर दिल के फट्टू लड़कों से। अब बोलो हर-हर महादेव!”

“हर-हर महादेव!” भीड़ में से आवाज आई।

“कबाड़ी बाबा, एक बात पूछनी है”, पांडे कबाड़ी के साथ-साथ हॉस्टल के गेट की ओर चलने लगा। मैं भी पांडे के पीछे हो लिया क्योंकि मुझे इस प्लान के सफल होने की गारंटी चाहिए थी।

“हाँ बोलो पंडित। क्या दुविधा है?” कबाड़ी साइकिल पर बोरी बाँध रहा था।

“ये अंतरी का कोई ब्वॉयफ्रेंड है क्या?” पांडे ने बड़ी ही मासूमियत से सवाल पूछा।

“क्यों? मान लो जो हो तो?”

“अब होगा तो थोड़ा ज्यादा टफ हो जाएगा। खैर। अब लड़की पसंद आ गई है तो ब्वॉयफ्रेंड हो या न हो, क्या फरक पड़ता है!”

“पंडित उसके पास पोस्ट पेड फोन है।”

“हाँ तो?”

“और तुम हर दू-चार दिन में बीस-चालीस वाला छोटा टॉक टाइम डलवाने लंका जाते हो।”

“तो?”

“मतलब ये कि प्रीपेड फोन कनेक्शन वाले वाले लड़के और पोस्ट पेड फोन रखने वाली लड़की का कनेक्शन कभी नहीं हो सकता।”

कबाड़ी पांडे को ब्रह्म ज्ञान देकर साइकल पर सरपट निकल गया। पांडे जाते हुए कबाड़ी को देख रहा था और मैं कहीं नहीं जाते हुए पांडे को।

“पांडे तुम आयशा टाकिया को धोखा दोगे?” मैंने पूछा।

More Books - www.The-Gyan.in

"यार उस दिन उसको एकदम करीब से देखा था। अंतरी एकदम आयशा टाकिया जैसी ही है", पांडे ने मीठी-सी आह भरते हुए कहा। "आयशा टाकिया तो कभी मिलने से रही। अधिक-से-अधिक, दूध देरी पर उसका पोस्टर देख आएँगे। उससे ज्यादा करीब से तो उसको कभी नहीं देख पाएँगे। लेकिन अगर कभी अंतरी से कुछ हो गया तो साला यहाँ फेल-वेल भी हो गए तो कोई गम नहीं।"

"यार तुम्हारा तो नहीं पता। मेरी बहुत फट रही है। चलो मूवमेंट सफल कराने। देर-सबेर एग्जाम में बैठने को मिल जाए और हम पास हो गए तो अंतरी से तुम्हारा टाका भिड़वाने खुद जाएँगे। अभी लेकिन चलो सबको मोबिलाइज करने।"

***

हम वापस सोलह नंबर की तरफ बढ़े। इस उम्मीद में कि वहाँ अब तक क्रांति का केंद्र स्थापित हो चुका होगा। लेकिन वहाँ कोई और ही बयार बह रही थी। प्रसाद गृह शोभा से 'मन की उलझन' पढ़ रहा था और छः-आठ लड़के न मालूम क्यों जमीन पर पालथी मारे उसे सुन रहे थे। "अबे ये वाला सवाल बहुत मस्त है। ये सुनो", प्रसाद ने कहा।

"मैं 24 साल की शादीशुदा औरत हूँ। तीन साल गुजरने के बाद भी मेरी कोई औलाद नहीं हुई है। इसी बीच मुझे पड़ोस के एक लड़के से प्यार हो गया है। उसके साथ हमबिस्तरी करने से मैं पेट से हूँ। इस बात से मेरे पति मुझसे नाराज हैं जबकि वह लड़का चाहता है मैं पति के सामने उससे बात करूँ। क्या यह ठीक रहेगा", प्रसाद ने 'मन की उलझन' से सवाल पढ़ा।

"अब इसका जवाब सुनो। डॉक्टर टोपा साला लिखता है— दूसरे के जरिए पेट से होना कोई तारीफ वाली बात तो है नहीं। पति का नाराज होना जायज है। अपनी कमजोरी के चलते ही पति चुप है। अब आपको अपनी आवारगी बंद कर देनी चाहिए। बच्चे को बेशक जन्म दें पर पति के सामने उस छिछोरे से बात न करें। ये बातें छिपी ही रहें।"

"यार मैं क्यों आता हूँ सोलह नंबर में। तुम लोग को बकचोदी के अलावा कोई काम धाम नहीं है क्या! ये दो कौड़ी की मन की उलझनें बाद में सुलझा लेना। अभी चलो बाकी ब्रांच के लड़कों से बात करनी है। उसके बाद सेकेंड इयर, थर्ड इयर, फाइनल इयर सब से", मैंने कहा।

दरवाजे पर खड़ा मैं आपे से बाहर हो रहा था। मेरे लिए ज्यादा परेशानी वाली बात यह नहीं थी कि प्रसाद इस वक्त गृहशोभा से 'मन की उलझन' पढ़ रहा था, बल्कि यह बात अधिक परेशान कर रही थी कि बाकायदा आठ वेल्ले लड़के पालथी मारे प्रवचन की तरह उसे सुन रहे थे और एक छोटी गोल्डफ्लेक चक्कर में घुमा रहे थे।

More Books - www.The-Gyan.in

“आ गया। आ गया। दोस्तो, आपने पहचाना इसे?” प्रसाद ने मेरी तरफ उँगली से इशारा किया।

“पहचाना। यही है उस 24 बरस की शादीशुदा महिला का पति”, मोहित ने उँगली दिखा के मेरी शिनाख्त की।

“बिलकुल ठीक पहचाना आपने। ये इतना बोरिंग और मरियल किस्म का आदमी है कि इसके साथ यही होना चाहिए। यदि मैं डॉक्टर होता तो उस महिला को लिखता, ग्रेट जॉब बेबी। कीप इट अप”, प्रसाद बोला।

“यार हाथ जोड़ता हूँ तुम्हारे। चल लो”, मैं रिरियाया।

“अबे नहीं होगा एग्जाम। काहे इत्ता लोड लेते हो। तुम एक इंजीनियर को एग्जाम में न बैठने का फ्री में आप्शन दे रहे हो। उसको कुत्ता काटा है कि वो एग्जाम देगा? और ये घिस्सू लड़कों का एकदम लोड न लो। ये साले सबसे पहले धरने में आएँगे क्योंकि इनको पढ़ने के लिए जितना भी टाइम दो कम ही पड़ता है। बीस दिन और मिल गया तो इतने में तो ये लोग सीधे टेन पॉइंटर फोड़ देंगे। देख लेना, शाम तक कम-से-कम हजार लोग वाइस चांसलर के ऑफिस पर पहुँच जाएँगे।”

पता नहीं क्यों मुझे प्रसाद की बात में दम मालूम हुआ और भरोसा जगा कि एग्जाम का बॉयकाट हो ही जाएगा। या फिर मुझे यह लगा कि अगर एग्जाम होने न होने की बागडोर इन लड़कों के हाथ में है तो फिकर करके के भी कुछ नहीं हो सकता। मैं भी चुपचाप कमरे में आठ लड़कों के गोले में शामिल हो गया और गोल्ड फ्लेक के लिए दो उँगली की कैंची बनाकर बढ़ा दी।

“हाँ तो आगे सुनो। ये वाली मन की उलझन और गजब है”, प्रसाद गृहशोभा से पेज पलटते हुए बोला। “डॉक्टर साहब मेरे पति मुझे सेक्स के दौरान कुछ ऐसी चीजों के लिए बाध्य करते हैं जो मुझे बिलकुल पसंद नहीं है। वो कहते हैं कि अरे पगली ये तो प्यार है और इससे कोई नुकसान नहीं होगा”

मैं सवाल अधूरा छोड़कर कमरे से बाहर निकल आया। प्रसाद और बाकी लड़के मन की उलझनें सुलझाते रहे। मैंने परेशान होकर शुभ्रा को फोन लगाया तो पता चला कि गर्ल्स हॉस्टल में भी बॉयकाट की बात पूरी तरह फैल चुकी है और सब लड़कियाँ वीसी ऑफिस पहुँच रही हैं।

***

शाम तक देखने लायक नजारा था। कुछ डेढ़ हजार लड़के-लड़कियाँ वीसी के दफ्तर के बाहर धरना दे रहे थे। होली-दीवाली वाला माहौल था। कोई यहाँ से नारा उछालता था, उधर

More Books - www.The-Gyan.in

कोई उसे लपक के और ऊँचा उछाल देता था। बे-सिर-पैर के नारे लगाए जा रहे थे, जिनका क्रांति से कोई लेना-देना नहीं था पर, चूँकि हर आंदोलन की शुरुआत नारे से ही होती है इसलिए रस्म-ओ-रिवाज की लाज रखने के लिए नारे उछाले जा रहे थे।

"लइया बड़ी करारी है, ओ लैय्या चुरमुर वाली है। वीसी जिस कुर्सी पे बैठा, टूटन वाली है"

"खच्च खचर, खच्च खचर, हू हा, हू हा, वीसी के दफ्तर में छोड़ो चूहा, चूहा"

साफ था कि किसी को घंटा आइडिया नहीं लग रहा था कि क्रांति होगी कैसे। सबको बस इतना पता था की क्रांति होनी जरूरी है, नहीं तो इयर बैक लगना पक्का है। इस लिहाज से यह क्रांति देश की बाकी सभी क्रांतियों, आंदोलनों और जुलूसों जैसी थी। परेशानी में, मैं शुभ्रा को SMS करके उससे यह दिलासा ले रहा था कि क्रांति सफल हो जाएगी। उधर पांडे एक नया सिम कार्ड ले आया था और अंतरी को SMS भेज रहा था। 'हाय बेब्स, वान्ना फ्रैंडशिप' का जवाब मिल जाने के बाद उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था और वह माय बेस्ट फ्रेंड पर पूरा निबंध लिखने का मूड बना चुका था।

कबाड़ी स्टूल पर खड़ा होकर गला खखार रहा था, जिससे कि उसकी आवाज पीछे तक जा सके।

"बच्चो, क्रांति की शुरुआत आसान होती है लेकिन उसे बरकरार रख पाना एकदम आसान नहीं होता। पवन कुमार मिश्रा पहले तुम लोगों को डराएगा, उसके बाद लालच देगा, लेकिन तुम लोग औजार मत डालना। ऊ इतना हरामी है कि साम दाम दंड भेद सब पेलेगा लेकिन तुम लोग डिगना नहीं। मुझे याद आ रही है 25 जून 1975 की वो काली रात जब इंदिरा गाँधी ने देश में अमरजेंसी लगा दी थी। देशवासियों पर नाना परकार के अत्याचार हुए। मुझे याद आ रहे हैं संजय गाँधी। उन्होंने आदेश दे डाला कि गाँव-गाँव में सबकी नसबंदी कर दी जाए। बनारस में भी आदेश हुआ। हमने सबको मोबिलाइज किया कि इसके खिलाफ क्रांति हो। रातों-रात यूथ इकट्ठा हुआ और क्रांति हो भी गई। लेकिन फिर संजय गाँधी ने घोषणा कर डाली कि नसबंदी करवाने वाले को बोलने वाला रेडियो, एक दर्जन संतरे, गुलूकोज और ग्यारह रुपिया भरपाई के लिए मिलेंगे। जानते हो फिर क्या हुआ?" कबाड़ी ने धाराप्रवाह भाषण के बीच पुड़िया फाँकने के लिए बहाने से सवाल पूछा।

"नहीं कबाड़ी बाबा", जनता से जवाब आया।

"क्रांति गई बाबा जी की लंगोटी में और मूर्खों ने एक रेडियो के लिए नसबंदी करवा ली। अब समझे?"

"हाँ", भीड़ में से जवाब आया।

"क्या समझे?"

More Books - www.The-Gyan.in

"यही कि पवन कुमार मिश्रा कितना भी रेडियो बाटे, हम लोग नसबंदी नहीं करवाएँगे"

"बिलकुल ठीक। एग्जाम कैंसिल होके रहेगा। तुम लोग डटे रहना।"

इतना कहते-कहते कबाड़ी ने अपने निचले होंठ के अंदर कमलापसंद की पूरी पुड़िया और छटाक भर चूना भर लिया। इसी के साथ उसके चेहरे पर गौतम बुद्ध की चिर-परिचित मुस्कान फैल गई और वह किसी दूसरी दुनिया में पहुँच गया। वहाँ न पवन कुमार मिश्रा पहुँच सकते थे और न इंदिरा गाँधी। वहाँ न संजय गाँधी थे और न उनका रेडियो। वहाँ बस कबाड़ी था, उसकी साइकिल थी, टाट की बोरी थी और कमलापसंद की खाली पुड़िया थी।

इधर बीच न मालूम कहाँ से कुछ बनारस के छुटभैये अखबार वालों को खबर लग गई कि IIT BHU में लड़कों ने वाइस चांसलर ऑफिस का घेराव कर लिया है। 'शंखनाद' और 'वीर भूमि' अखबार के तीन-चार संवाददाता और फोटोग्राफर भीड़ में जासूसों के माफिक स्टूडेंट्स के साथ बैठकर आंदोलन की पूरी कवरेज और तफ्तीश कर रहे थे।

"भाई जी, एक बात बताइएगा?" रिपोर्टर ने पूछा।

"फर्स्ट इयर में हो?" प्रसाद ने पूछा।

"हाँ। फर्स्ट इयर में ही हैं। अटेंडेंस शार्ट है। डर लग रहा है कि इयर बैक न लग जाए।"

"अरे ऐसे कैसे इयर बैक लग जाएगा। अभी देखना पवन कुमार मिश्रा बिलबिलाता हुआ आएगा।"

"जरा ये बताइएगा कि पवन कुमार मिश्रा यदि आप लोग की माँग नहीं मानेगा तो आप लोग क्या करेंगे?"

"कैसे नहीं मानेगा बुजरो वाला! इतना सुतली बम मारेंगे कि ऑफिस पवित्तर हो जाएगा उसका।"

"मतलब बम से ऑफिस उड़ाने का प्लान है?"

"अबे गजब घोंचू आदमी हो? सुतली बम से ऑफिस उड़ जाएगा क्या? अधिक-से-अधिक यही होगा कि धुआँ भर जाएगा और कमरा गंधा जाएगा।"

"हाँ लेकिन आग भी तो लग सकती है। वाइस चांसलर मर भी सकता है।"

"दुनिया में कौन आदमी सुतली बम से मरा है बे। सुंदरपुर का पूरा रावण भी नहीं जला था पिछले साल। कौन ब्रांच में हो?"

"अच्छा एक फोटो खिचवा लीजिए। ए फोटो खीच बे राहुल", रिपोर्टर फटाफट रिकॉर्डर बंद करके झोला समेटने लगा और उतनी ही देर में राहुल कैमरामैन ने प्रसाद की फोटो उतार ली।

More Books - www.The-Gyan.in

"ए फोटो काहे खींच रहे हो बे? और ये रिकॉर्डर कहे लिए है?" प्रसाद चिल्लाया।

"अबे ये अखबार वाला है बे। कल अखबार में हम लोग का फोटो छाप देंगे तो पापा चप्पल ही चप्पल बजाएँगे। पकड़ो साले को भागने मत दो", मोहित चीखा।

मोहित और प्रसाद अखबार वालों के पीछे भागे और इधर पवन कुमार मिश्रा के ऑफिस से उनका क्लर्क बाहर आया। उसने घोषणा की, कि अटेंडेंस वाला रूल वापस लिया जा रहा है। सभी लोगों को एग्जाम में बैठने दिया जाएगा और एग्जाम अपने तय समय पर, पाँच दिन बाद होंगे। क्लर्क सूचना सुनाकर ऑफिस वापस चला गया। इधर जनता में हाहाकार मच गया कि ये तो पूरा प्लान ही चौपट हो गया। सबने सपने देखने शुरू कर दिए थे कि पवन कुमार मिश्रा लड़कों की ऐसी गैर-वाजिब माँग नहीं मानेगा और इसी बहाने दो तीन हफ्ता क्लास सस्पेंड रहेगी। तब तक एग्जाम की तैयारी का वक्त भी मिल जाएगा और अटेंडेंस वाला मामला भी निपट जाएगा। लेकिन पवन कुमार मिश्रा ने कबाड़ी की सुलगाई हुई आग से चिढ़कर अपना मास्टरस्ट्रोक खेल दिया और एग्जाम अपने तय समय पर ही घोषित हो गए।

अब जैसा कि मैंने बताया था कि एग्जाम के समय किसी भी इंजीनियरिंग कॉलेज में कुल जमा तीन तरह के लड़के होते हैं— एक वे जो एग्जाम आने पर सब कुछ छोड़-छाड़कर पढ़ने में लग जाते हैं और उन्हें दुनियादारी से कोई मतलब नहीं होता, दूसरे किस्म के लड़के वे, जो पढ़ना चाहते हैं, लेकिन इसलिए नहीं पढ़ते क्योंकि अगर कोई उन्हें पढ़ता देख लेता तो उनकी इज्जत और 'कूल इमेज' का फालूदा हो जाता, तीसरे किस्म के लड़के वे जिन्हें अच्छी तरह पता होता है कि वो पढ़कर भी क्या ही उखाड़ लेंगे— अब आंदोलन फेल हो जाने के बाद IIT BHU में इस खास वक्त पर बस एक ही तरह के लड़के बचे थे। और ये सभी लड़के वे थे जिन्हें अब न होश था और न सुध-बुध। ये अगले चार-पाँच दिनों तक किताबों में घुसे रहने वाले थे।

***

एग्जाम खतम होते-होते, आने वाले दस दिनों में IIT BHU में एक से एक काबिल-ए-गौर कहानियाँ बनीं।

सबसे मशहूर कहानी यह हुई कि, गलती से, प्रसाद को बीटेक के पर्चे के बजाय, एमटेक का पर्चा बट गया। इस सब से अनजान, प्रसाद, तल्लीनता से भनाभन एग्जाम लिखता रहा, क्योंकि लिखना तो उसे वही था, जो उसे आता था, उसका इस बात से कोई ताल्लुक नहीं था कि पर्चे में पूछा क्या गया है। एग्जाम खतम होने से आधे घंटे पहले जब इनविजिलेटर को अपनी गलती का अहसास हुआ तो उसने परचा वापस माँगा लेकिन प्रसाद परचा बदलने के लिए तैयार ही नहीं हुआ। आन्सर बुक से ऐसे चिपटकर बैठ गया जैसे वह

More Books - www.The-Gyan.in

उनके हक में लिखी हुई वसीयत है और मास्टर उसे ना-हक ही छिनाए लिए जा रहा है। मास्टर भी यह समझ पाने में असमर्थ था कि प्रसाद एमटेक का पर्चा सॉल्व करने के पीछे क्यों पड़ा हुआ है। और उसने अपनी आंसर शीट, जाँघों के बीच में क्यों दबा ली है। ज्यादा जोर जबरदस्ती की जाती, तो शायद प्रसाद परचा ही खा जाता।

दूसरी मशहूर कहानी के मुताबिक इलेक्ट्रॉनिक्स फर्स्ट इयर में माइक्रोइलेक्ट्रॉनिक्स के पर्चे में उन सभी लड़कों को B ग्रेड लगा जो, 'मेरा जीवन, कोरा कागज, कोरा ही रह गया' की तर्ज पर, पर्चा पूरी तरह खाली छोड़ आए थे। हालाँकि उन्हें शून्य आया। लेकिन निगेटिव मार्किंग और रिलेटिव ग्रेडिंग के हिसाब से तमाम सारे लड़कों को माइनस में नंबर आए और उन्हें D, E और F ग्रेड लगा। मैं भी उन खुशनसीब लड़कों में से था जो शून्य लाकर भी B ग्रेड पा सके। उस दिन के बाद से मेरा स्वच्छता, ईमानदारी और शून्य पर भरोसा और अधिक मजबूत हो गया।

पांडे तीन सब्जेक्ट में फेल हुआ। प्रसाद और मोहित भी दो-दो सब्जेक्ट्स में फेल हुए। मेरा सिर्फ एक सब्जेक्ट में बैक आया। पांडे इस बात से बेहद हैरान था कि मैं इतने सस्ते में कैसे निपट गया। उसे तीन बैक आने का उतना दुःख नहीं था जितना कि मेरा मात्र एक बैक खाने का दुःख था। कुछ दिन दोस्ती का लिहाज करने का बाद, आखिरकार उसने एक दिन पूछ ही लिया,

"अबे तुम सिर्फ एक बैक कैसे खाए?"

"भगवान जाने! मैं तो सबमें निबंध ही लिखकर आया हूँ। भले ही सवाल जो कुछ रहा हो, मैं तो वही लिखकर आता था जो मैंने पढ़ा हो। माने अगर सवाल ये था कि डायोड क्या होता है, 250 शब्दों में एक्सप्लेन करें, तो मैं वहाँ ट्रायोड की कहानी लिखकर आता था, क्योंकि मुझे तो भाई ट्रायोड ही आता है।"

"साले तुम गुरु हरामी हो गए हो!"

"तुम ही से सीखा है। और उन लड़कों से जो हमें घाट पर मिले थे।"

"कौन?"

"अरे वे ग्लोबल वार्मिंग के निबंध वाले लड़के। याद है? जब हम घाट घूमने गए थे। आयशा टाकिया दूध डेरी के बाद बॉबी देओल हेयर कटिंग सैलून गए थे। वहीं जो दो लड़के मिले थे।"

"हाँ याद है। केवी के लड़के जो ग्लोबल वार्मिंग पर ऐसा कुछ निबंध लिखे थे कि ग्लोबल वार्मिंग गरम होती है। गरम तो असली मई-जून में पड़ती है। जून में पिछली बार हम नानी के घर गए थे। नानी एक नंबर की झक्की औरत हैं। औरत ममता की मूरत होती है", पांडे ने याद किया।

“हाँ वही दो लड़के”, मैंने पांडे को आगे का निबंध याद दिलाया। “मूरत देखनी है तो खजुराहो जाइए। खजुराहो बड़ी अश्लील जगह है। अश्लील तो भोजपुरी फिल्में भी होती हैं। फिल्मों में लेकिन आजकल वो बात नहीं रही। बातें तो शिल्पा चौरसिया करती थी। चौरसिया लोग पान भंडार खोल लेते हैं। पान खाने गर्मियों में नहीं निकलते। गर्मी ग्लोबल वार्मिंग की वजह से बढ़ी है।”

“मतलब तुमने यही गुरुमंत्र चेंप दिया!”

“हाँ। दो सब्जेक्ट्स तो शायद इसी से निकल गए। कबाड़ी ने कहा था न कि शांतनु मुखर्जी कभी कॉपी चेक नहीं करता। खाली अच्छी रायटिंग और पन्ने भरने के नंबर देता है। तो बस। वही किया मैंने।”

पांडे ठगा-सा खड़ा था। जैसे वह मेरी वजह से फेल हो गया हो। उसका दुःख और बढ़ गया था। मेरा दुःख कुछ हल्का हो गया था। उस दिन मैंने सीखा कि दोस्त अगर आपसे अधिक सब्जेक्ट्स में फेल हो गया हो तो आपको अपने फेल होने का दुःख नहीं होता।

More Books - www.The-Gyan.in

रौनित राय, जान तेरे नाम और महिला महाविद्यालय

प्रसाद कमरे में ऐसे घुसा जैसे घंटों से दौड़ रहा था, और अगर अभी तुरंत बैठने-सुस्ताने को नहीं मिला तो मुँह से झाग फेंक देगा। वह हाँफ रहा था। सीने में धौंकनी चल रही थी। लग रहा था जैसे उसने क्रॉस कंट्री मैराथन का आखिरी लैप अभी-अभी पूरा किया हो और उसके साथ धोखा किया गया हो। न ग्लूकोज दिया गया हो न और न संतरे की फाँकें। पानी की गिलास भी छिना लिया गया हो।

"रोहित", प्रसाद बोला।

"रोहित", प्रसाद बुदबुदाया।

"अबे रोहित", प्रसाद सकपकाया।

"क्या हो गया? कोई चप्पल सूँघाओ इसको नहीं तो मिर्गी आ जाएगा इसको। शरीर अकड़ के गठरी हो जाएगा", पांडे ने कहा।

"रोहित लड़की के साथ", प्रसाद ने साँस बटोरकर बोलने की कोशिश की। हम एक ही लाइन में रोहित के साथ लड़की लव्ज सुनकर भौंचक्के हो गए। जैसे एक ही लाइन में 'राहुल रॉय' और 'सुपरहिट' साथ नहीं हो सकते, 'इंजीनियर' और 'नहाना' नहीं हो सकते, 'नौकरी' और 'सुकून' नहीं हो सकते, वैसे ही, 'रोहित' और 'लड़की' लव्ज का साथ में उपयोग किया जाने का सीधा मतलब था कि मामला संगीन है।

"मैंने रोहित को वीटी पर MMV की चपसंट माल लड़की के साथ कोल्ड कॉफी पीते हुए देखा। नेहा मिश्रा और वह एक गिलास में एक ही स्ट्रॉ घुसेड़कर नैन मटक्का कर रहे थे। रोहित, नेहा मिश्रा की लट सुलझा रहा था।"

"अबे रोहित?" अब पांडे को मिर्गी आ रही थी।

"हाँ रोहित। वो नेहा मिश्रा को पटा लिया है।"

"अबे रोहित? वो तो जब बोलता है तो मुँह से लार चुआता है", पांडे ने बुनियादी सवाल उठाया।

More Books - www.The-Gyan.in

"हाँ वही रोहित। अब समझ आया मेरा ऐसा हालत क्यों हो रहा है?"

"अबे रोहित? वो जो स्पाइडरमैन का मूवी देखकर कमरे में लगे मकड़ी के जाले में उँगली घुसा रहा था? ताकि उसे मकड़ी काट ले और वो भी कलाई से जाला छोड़ने लगे?" मोहित ने कहा।

"अबे वो मंदबुद्धि कनपुरिया कैसे लड़की पटा लिया! साला कानपुर में कलक्टरगंज जैसी टोपा जगह रहने वाला लड़का इतनी माल लड़की भिड़ा लिया?" अखिल ने कहा।

"कनपुरिया तो निशांत भी है। वो भी तो लड़की पटा लिया न!" प्रसाद ने कहा।

"हाँ बे। जब से निशांत की गर्लफ्रेंड बनी है तब से वो हम लोग को भाव ही नहीं दे रहा। जबकि हम लोग ही उसका सीन सेट करवाए थे। दुनिया में इंसानियत नाम की कोई चीज ही नहीं है। अब तो वो हॉस्टल में दिखाई ही नहीं देता। या तो शुभ्रा के साथ घूम रहा होता है या फिर सुसुवाही चला जाता है मेस वर्कर्स के बच्चों को पढ़ाने के लिए", पांडे ने कहा।

"अभी निशांत की बात छोड़ो। मुद्दा ये है कि रोहित ने गर्लफ्रेंड बना ली और हम लोग रंडुए घूम रहे हैं", प्रसाद ने कहा।

"हाँ लेकिन रोहित! उसकी फेसबुक प्रोफाइल पर उसका नाम है डीजे रोहित रॉक्स। वो लड़की कैसे पटा सकता है!" अखिल बोला।

"तुमको काहे मिर्ची लग रही है तुम खुद तो 9th में सेक्स कर चुके हो", प्रसाद ने कहा।

"अबे तुम हर बात में 9th में सेक्स को क्यों ले आते हो?"

"क्योंकि झाँट जलता है मेरा। पूरी दुनिया को लड़की मिल रही है और हमको लड़की नहीं मिल रही", प्रसाद रुआसा हो रहा था।

"मेरी भी", मोहित ने स्वीकार किया।

"हाँ यार मेरी भी", पांडे ने कन्फेस किया।

"जब मैंने रोनित रॉय की जान तेरे नाम देखी थी, मेरा तब से सपना था कि कॉलेज में मेरी भी गर्लफ्रेंड होगी", प्रसाद ने कहा।

"हाँ उसमें जब वो गाना आता है— कल कॉलेज बंद हो जाएगा, तुम अपने घर को जाओगे— कसम से मेरी दिली इच्छा थी कि एक दिन शोर्ट स्कर्ट में फरहीन की तरह कोई लड़की मेरे लिए भी ये गाना गाएगी", पांडे ने कहा।

"मेरा तो IIT निकालने का मोटिवेशन ही यही था कि एक बार IIT निकल गया तो लड़कियाँ तो ऐसे पटेंगी", प्रसाद ने चुटकी बजाई। चुटकी से आवाज नहीं आई। प्रसाद ने कमीज पर अँगूठा और उँगली पोंछकर वापस चुटकी बजाई, चुटकी फिर फुस्स हो गई।

More Books - www.The-Gyan.in

"यहाँ तो कुल-मिलाकर पूरे बैच में सात लड़कियाँ हैं। और गर्लफ्रेंड की बात तो छोड़ ही दो, हम लोग कर क्या रहे हैं? क्या-क्या सपने देखे थे कि कॉलेज में कितनी कूल लाइफ होगी और यहाँ हम लोग एक-दूसरे का ही हिला रहे हैं। क्या खाक कॉलेज लाइफ है? साला तुम लोग के चक्कर में बस रंडुआगिरी कर रहे हैं। कल साला आठ किलोमीटर साइकिल चलवाकर तुम लोग हाइवे पर आहार-विहार ढाबा में कढ़ाई चिकेन खिलवाने ले गए थे। हाँफते-गिरते पहुँचे, तो वहाँ जाकर पैसा कम पड़ गया था। पिछले हफ्ते रोडीज देखके तुम लोग को कुछ कूल करने का चस्का चढ़ा तो क्लास के बाद भटकते-भटकते पैदल कैंट स्टेशन लिवा ले गए और वहाँ से बिना टिकट गाजीपुर की ट्रेन पकड़ ली थी। रेलवे पुलिस से थप्पड़ खाए सो अलग। यही कूल है तुम लोग का? ऐसे ही परसों कुछ कूल करने की सनक आई थी तो हम लोग भाँग खा लिए थे। अभी तक माथा घूम रहा है, रह-रह के उलटी आ रही है। लग रहा है सर सुंदरलाल अस्पताल में भर्ती होना पड़ेगा। क्या झंड जिंदगी है और वो साला रोहित लड़की घुमा रहा है", पांडे हत्थे से उखड़ गया था।

"पांडे यार तुम इतना बुरा मत फील कराओ, ऐसा नहीं है कि हम लोग एकदम झंड हैं, हम लोग भी लड़की पटा सकते हैं", अखिल ने कहा।

"तुम कहाँ से लाइन में लग गए? तुम तो 9th में सेक्स...", प्रसाद ने कहा और अखिल ने बात पूरी होने से पहली ही उसका गला पकड़ लिया।

"हाँ तो किए थे तो क्या, अभी फिर करेंगे। साला दिमाग मत खराब करो। 9th किए हुए चार साल हो गया। क्या बाकी जिंदगी औजार से जड़ी-बूटी कूटते रहें?" अखिल ने कहा।

"अच्छा लड़ो मत दोनों। रोहित से बात करते हैं। उसको मक्खन लगाएँगे। उससे बोलते हैं कि वो नेहा की दोस्तों से हमारा परिचय कराए। महिला महाविद्यालय की लड़कियों पर IIT का कुछ तो भोकाल काम कर ही जाएगा। वो भी तो नेहा को इसीलिए पटा पाया है क्योंकि वहाँ की लड़कियों को लगता है कि IIT के लड़के कूल होते हैं और उनकी करोड़ों की जॉब लगती है", मोहित ने हौसला दिया।

"हाँ यार। कबाड़ी ने भी इंडक्शन के टाइम कहा था कि लो सेल्फ एस्टीम वाली लड़की का पीछा करो। IIT की लड़की घंटा नहीं पटेगी। लेकिन रोहित साला हम लोग की मदद क्यों करेगा!" प्रसाद ने पूछा।

"वो अभी परसों कल्चरल फेस्टिवल में मिमिक्री किया था। इतना गंदा मिमिक्री करता है कि पूरा कॉलेज उसको हूट कर दिया। सिर्फ उसको पता होता है कि वो किसकी मिमिक्री कर रहा है, बाकी सबके लिए सस्पेंस होता है। सुनील शेट्टी का आवाज निकालेगा तो लगेगा अमिताभ बच्चन है, रजा मुराद की एक्टिंग करेगा तो लगेगा कि उत्पल दत्त है। अपन चलके

More Books - www.The-Gyan.in

उसकी तारीफ करते हैं कि यार तुम क्या गजब एक्टिंग किए थे। खुश हो जाएगा", मोहित ने कहा।

अगले ही पल तीनों रोहित के कमरे थे और उसकी तारीफों के पुल बाँधने में लगे थे। अखिल को साथ नहीं ले गए थे (क्योंकि उसने 9th में सेक्स किया हुआ था)। रोहित अभी भी मकड़ी में जाले में इस उम्मीद से उँगली कर रहा था कि वह स्पाइडरमैन बन जाए। तीनों लड़के इस वैज्ञानिक एक्सपेरिमेंट में उसकी मदद करने लगे। मोहित लकड़ी लेकर मकड़ी हाँक रहा था, और प्रसाद मकड़ी का रस्ता छेंककर उसे रोहित की ओर मुड़ जाने के लिए डाइवर्ट कर रहा था।

रोहित ने खुशी-खुशी सबकी मिमिक्री करके दिखाई। "पहचानो कौन", रोहित ने पूछा, और किस्मत से वे लोग नाना पाटेकर की मिमिक्री पहचान गए। रोहित बहुत खुश था। वह तीनों को नेहा मिश्रा की महिला महाविद्यालय वाली सहेलियों से मिलाने के लिए तैयार हो गया।

***

"अबे प्रसाद कहाँ है?" मैं गुस्से से चिल्लाते हुए 16 नंबर में घुसा। अखिल हमेशा की तरह हैरी पॉटर पढ़ रहा था। 16 नंबर में और कोई नहीं था। प्रसाद, मोहित, पांडे सब नदारद थे।

"क्या हो गया? चिल्ला काहे रहे हो?"

"मैं छोड़ूँगा नहीं साले को!"

"तुम मार-कुटाई की भाषा कब से बोलने लग गए भाई? क्या कर दिया प्रसाद ने?"

"अरे वो शांतनु मुखर्जी की क्लास में मेरा प्रॉक्सी मार दिया। मैंने उसको बोला भी नहीं था मेरी प्रॉक्सी के लिए। वो तउवा के मुझे हफ्ता भर के लिए सस्पेंड कर दिया। उल्टा मेरा पिछला अटेंडेंस अलग जीरो कर दिया। इतनी मुश्किल में तो अटेंडेंस बनता है। साला बूँद-बूँद जोड़कर सागर भी इससे अधिक आसानी से बन जाता होगा। इतना मेहनत से जोड़ा हुआ अटेंडेंस बरबाद हो गया।"

"शांतनु मुखर्जी तो इतने भले आदमी हैं। वो तो कभी ऐसा नहीं करते।"

"हाँ नहीं करते। लेकिन ये प्रसाद साला आज क्लास में चार-पाँच लोग का प्रॉक्सी मार दिया। पहले एक आदमी का प्रॉक्सी मारा, शांतनु मुखर्जी नहीं पकड़ पाए। वो उत्साह में आवाज बदल कर दूसरा प्रॉक्सी मारा और तब भी नहीं पकड़ाया। उसके बाद गधा जो-जो क्लास नहीं आया था सबका प्रॉक्सी मारता चला गया। शांतनु मुखर्जी बिचारे भले आदमी। कब तक सहन करते। फायर हो गए।"

More Books - www.The-Gyan.in

"तब क्या सबको निकाल दिया?"

"वो तो तब भी शांत थे। एकदम दुखी होकर घंटा भर पूरी क्लास को लेक्चर दिए। प्यार से समझाए। कहने लगे कि बच्चों आप लोग ये सब गलत काम क्यों करते हैं? अगर आपको क्लास आना अच्छा नहीं लगता तो मत आइए। मैं सबको पूरी अटेंडेंस दे दूँगा। लेकिन अगर क्लास आ रहे हैं तो पढ़ लीजिए। मैं अभी भी कह रहा हूँ कि जिसका भी क्लास करने का मन नहीं है वो अभी उठकर चला जाए। मैं कुछ नहीं कहूँगा लेकिन क्लास में ये सब मत करिए। उठकर चले जाइए।"

"फिर?"

"फिर क्या? उनकी बात खतम होने से पहले ही प्रसाद उनके सामने से उठकर चला गया। बेचारे रूआसे हो गए। अपनी बात रखने के लिए प्रसाद को तो कुछ नहीं बोले लेकिन दुबारा सबका अटेंडेंस चेक किए। जिसका भी प्रॉक्सी लगा था सबको सस्पेंड कर दिए। और साला प्रसाद बच गया। मोहित, पांडे, मेरा सबका प्रॉक्सी लगा दिया।"

"हाहा। जान बूझकर प्रॉक्सी लगाया है वो।"

"जान-बूझकर?"

"हाँ। उसका पांडे और मोहित से भयानक लड़ाई हो गया है।"

"किस बात पर?"

"उस दिन रोहित महिला महाविद्यालय वाली नेहा की सहेलियों के साथ इन लोग की हाय-हेलो करवाया था और इन लोग का लगा कि लड़कियों से इन लोग का सीन सेट हो गया है। तीनों लोग की खुशी देखते ही बनती थी। साला इतना खूफिया स्तर पर प्यार-मोहब्बत का कारोबार चल रहा था कि तीनों आपस में भी किसी को खबर नहीं लगने दे रहे थे। साला सावन के मौसम में कूकुर भी इतना किकियाता नहीं होगा जितना ये लोग पिछला तीन दिन में अरसा रहे थे। कमरे में भी बस कुमार सानू का चित्रहार चल रहा था, डियोड्रन्ट का बाढ़ आ गया था, उस पर भी रोज नहा के ये लोग कभी मधुबन, कभी JHV सिनेमा, कभी पिजेरिया तो कभी गंगा पार। कल रात मोहित लौटा तो आते ही प्रसाद को गले लगा के लपेट लिया, और बोला कि यार चाँदनी रात में लड़की को किस करना कितना खूबसूरत फीलिंग होता है। बातों-बातों में मोहित सुमित्रा नंदन पंत हो गया और लड़की के होंठों को गुलाब की पंखुड़ी से लेकर कमल की कली तक छायावादी तरीके से चित्रित करने लगा। प्रसाद भी मोहित को गले लगाए आधी फील ले ही लिया था कि बातों-बातों में पता चला कि दोनों एक ही लड़की की कमल कली चूम आए हैं। मार-पीट होने वाली थी कि पांडे भी रो पड़ा। उसका भी SMS और चैट पर सेम लड़की से मोहब्बत परवान चढ़ना शुरू ही हुआ था। तब से तीनों लात जूता कर लिए हैं और खार खाए बैठे हैं। अब कुमार सानू के बजाय मोहम्मद अजीज

More Books - www.The-Gyan.in

और शब्बीर कुमार का प्ले लिस्ट चल रहा है।"

"हाहा, अच्छा हुआ सालों के साथ", मैंने कहा और मैं भूल गया कि मुझे हफ्ते भर के लिए सस्पेंड कर दिया गया था। "चलो फिर मैं चलता हूँ। ये लोग तो देर-सबेर निपट ही लेंगे आपस में। देखना शाम में ही बाइक पर ट्रिपलिंग करते नजर आएँगे।"

"कहाँ चले? चलो मैं भी चलता हूँ। बोर हो रहा हूँ।"

"सुसुवाही जा रहा हूँ। बच्चों को पढ़ाने।"

"न बाबा तुम ही जाओ। मैं भी बच्चा हूँ। हैरी पॉटर पढ़ता हूँ।"

"चलो न। अच्छा लगेगा। एक बार चल कर तो देखो।"

"अच्छा चलो।"

***

सुसुवाही। यहाँ यूनिवर्सिटी की मेस में काम करने वाले वर्कर अपने-अपने परिवार के साथ रहते हैं। इनके बच्चों की पढ़ाई का खर्चा और मशक्कत IIT BHU उठाता है। यह अपने-आप में एक अलग दुनिया है। कोई अलग देश है। इंजीनियरिंग कॉलेज की चाहरदीवारी के इस पार IIT है और उस पार सुसुवाही। चाहरदीवारियाँ शायद इसी काम तो आती है। उन्हें खड़ा कर देने से इस पार और उस पार के बीच का अंतर करना सरल हो जाता है।

चाहरदीवारी से ये समझाना आसान है कि क्यों उस पार के लड़के चार साल बाद लाखों का सैलरी लेकर कॉलेज से पास आउट हो जाएँगे। और क्यों इस पार के लड़के यहीं रह जाएँगे और अगले बैच के लड़के उन्हें अभी तक सिखा रहे होंगे कि नहाना अच्छी बात है नहीं तो बाल में जूँ लग जाते हैं और शरीर खुजली करता है। अगर माँ नहाने के लिए बोले तो उसे गाली देकर भाग जाना अच्छी बात नहीं है। चाहरदीवारी है इससे यह समझाना आसान है कि क्यों उस पार के लड़के अगर चार साल बस यूँ ही भटकते भी रहेंगे तो भी देश-समाज के दिशानिर्धारक ही बनेंगे और इस पार के लड़के दिन रात मेस में कमर-तोड़ मेहनत करके, जूठन उठाके, खट-पिटके, एक बेहतर दिशा की तलाश करते-करते भी एक दिन यहीं रह जाएँगे और नहीं सीख पाएँगे कि कॉपी में 'दिसा' या 'दीसा' नहीं, बल्कि 'दिशा' लिखते हैं।

"सूरज पूर्व दिशा से उगता है, लिखो", मैंने कहा।

"'द', 'द' में छोटी 'इ' की मात्रा, शक्कर वाला 'श', और उस पर आ' – दिशा – लिखो", मैंने मेस के लड़कों से कहा।

"ब, ब में छोटा उ का मात्रा, ज, र, र में ओ का मात्र, – बुजरो – बुजरो वाले भाग यहाँ से", क्लास एक एक कोने से आवाज आई।

More Books - www.The-Gyan.in

"पूरब से निकले चाहे पश्चिम से निकले भोंसड़ी वाला", बीच में से आवाज आई।

"हरे बहुत गरम हो रे। न निकाल सूरज सरउ के", दूसरी आवाज आई।

"जो सही लिखकर दिखाएगा उसको अभी दस का नोट ईनाम में मिलेगा", अखिल ने कहा।

"अरे भिया जी ई नकल कर रहा है हरामचोट्टा, हम पहले लिख दिए", उमेश ने कहा।

"कॉपी दिखाओ", मैंने कहा।

सूरज पूर्व दिशा से उगता है, उसने एकदम ठीक लिखा था। मैंने उसकी कॉपी बार-बार पढ़ी और खिड़की से सूरज देखा। पूर्व दिशा में उगा हुआ सूरज इतना सुंदर पहले कभी नहीं लगा था। मैंने अखिल को भी दिखाया। वह भी मुस्कुराया।

"चलो अब कविता पढ़ेंगे", मैंने लड़कों से कहा।

"नहीं भिया जी। कुछ और पढ़ाइए", एक लड़का नाक भौं सिकोड़ते हुए बोला।

"क्यों जी", मैंने पूछा।

"अरे कविता सुनने से नींद आता है। मजा नहीं आता", वो जम्हाई लेते हुए बोला।

"अच्छा! ठीक तो फिर मैं एक कविता सुनाता हूँ। अगर तुम कविता सुनते हुए हँस दिए तो सात दिन लगातार नहाना पड़ेगा। बोलो मंजूर", मैंने शरारत से कहा।

"कविता सुन के कौन हँसता है। बंडल-बोर होती है कविता", वह बोला।

"ठीक है फिर सुनो। बच्चू", मैंने कहा।

"हल्लम हल्लम हौदा, हाथी चल्लम चल्लम

हम बैठे हाथी पर, हाथी हल्लम हल्लम

लंबी लंबी सूँड़ फटाफट फट्टर फट्टर

लंबे लंबे दाँत खटाखट खट्टर खट्टर

भारी भारी मूँड़ मटकता झम्मम झम्मम

हल्लम हल्लम हौदा, हाथी चल्लम चल्लम

पर्वत जैसी देह थुलथुली थल्लल थल्लल

हालर हालर देह हिले जब हाथी चल्लल।"

मैंने एक हाथ से नाक पकड़कर, दूसरा हाथ पहले हाथ की रिंग में से निकालकर, कमरे में हाथी की तरह डोलते-नाचते कविता पढ़ी। सभी लड़के पेट पकड़कर जमीन पर खिलखिला रहे थे। शर्त लगाने वाला लड़का हँसी रोकने की कोशिश में बे-इंतहा प्यारा लग

More Books - www.The-Gyan.in

रहा था। उसकी आँखें शरारत से गोल हो रही थीं और साँस रोकने से उसका पेट फूल रहा था। साफ दिख रहा था कि यदि वह दो मिनट और नहीं हँसा तो उसका पेट फट जाएगा और गाल गुब्बारे हो जाएँगे। उसने हाथों में मुँह और नाक दाब ली। अखिल आगे बढ़ा और उसे गोद में उठाकर गुदगुदाने लगा। लड़का जोर से हँसा। खिलखिलाया। बोला, "ए भिया जी ये बेमंटी है। हम खुद नहीं हँसे, आप गुदगुदी किए।"

***

रोज रात पापा का फोन किसी न्यूज बुलेटिन की तरह नियम से आता था। पापा पाँच-सात मिनट में सभी जरूरी बातें कह लेते थे। गैर-जरूरी बातें कभी-कभार रविवार को की जा सकती थीं। बाकी मौके पर पढ़ाई और सेहत की खोज-खबर ली जाती थी। पढ़ाई की खबर इसलिए क्योंकि पढ़ाई से जरूरी और क्या काम हो सकता है भला, सेहत की बात इसलिए क्योंकि सेहत ठीक न हो तो आदमी पढ़ कैसे सकेगा।

"और बेटा, कैसे हो?" पापा ने फोन पर कहा।

"प्रणाम पापा। अच्छा हूँ" मैंने कहा।

"खुश रहो। पढ़ाई कैसी चल रही है?"

"अच्छी चल रही है।"

"और। ठंड-वंड पड़ रहा है उधर?"

"हाँ! पापा। सर्दी का मौसम है। ठंड तो पड़ेगा ही।"

"स्वेटर-उटर अच्छे से पहन रहे हो?"

"हाँ! पापा।"

"और। दूध-वूध पी रहे हो?"

"हाँ! पी रहा हूँ।"

"पैसे हैं खर्चे के लिए?"

"हाँ! अभी बारह सौ बचे हैं। महीना भर का हो जाएगा।"

"मेस वाले खाना ठीक बना रहे हैं?"

"हाँ! ठीक-ठाक।"

"घर कब आ रहे हो?"

"बस अगले हफ्ते से साल खतम हो रहा है। समर इंटर्नशिप के लिए महीना भर के लिए कानपुर आ रहा हूँ।"

More Books - www.The-Gyan.in

“बढ़िया। अगले सेमेस्टर की किताबें वगैरह लेकर आना।”

“हाँ पापा।”

“और प्लेसमेंट कैसा चल रहा है कॉलेज में?”

“पापा बताया तो हम लोग का प्लेसमेंट तीन साल बाद होगा!”

“हाँ लेकिन सीनियर लोग का हो रहा होगा न। अखबार में आया था कि इधर IIT कानपुर में एक लड़के का सवा करोड़ का पैकेज लगा है। तुम लोग के उधर भी प्लेसमेंट हो रहा होगा न!”

“पापा, मैं एक सब्जेक्ट में फेल हो गया हूँ।”

“हैं?”

“हाँ! एक बैक लगा है।”

“बैक लग गया है मतलब?”

“क्लियर करना होगा। कर लूँगा।”

“अरे तो बैक कैसे लग गया?”

“पढ़ाई नहीं की थी ढंग से।”

“नहीं की था क्या मतलब?”

“बस मन नहीं लग रहा था।”

“मन कैसे नहीं लग रहा था? तुम तो हर सब्जेक्ट में बचपन से लेकर आज तक हर क्लास में टॉप किए हो!”

“हाँ! तब मन लगता था पढ़ने में। आजकल नहीं लगता।”

“तब क्या करते रहते हो?”

“कुछ खास नहीं।”

“कुछ खास नहीं का क्या मतलब है? आज क्लास के बाद क्या किए?”

“मेस वर्कर्स के लड़कों को पढ़ाने गया था। आज एक लड़के ने बिना गलती किए लिख दिया कि सूरज पूर्व दिशा से उगता है। उसके अक्षर बहुत सुंदर बनते हैं।”

“तो?”

“पापा, मैंने बाइक चलाना भी सीख लिया है।”

“क्या बोल रहे हो?”

More Books - www.The-Gyan.in

"मैं यूथ फेस्टिवल भी जा रहा हूँ। हम लोग का प्ले सेलेक्ट हो गया है। ईस्ट जोन को रिप्रजेंट करेंगे।"

"तुम घर आओ फिर बात करो हमसे। अभी मम्मी से बात करो। ए सुनो। निशांत का फोन है। देखो क्या बकवास करे जा रहा है!"

पापा ने गुस्से में फोन रख दिया। आज मैंने पापा से पहली बार फोन पर पढ़ाई, दूध, ठंड, मौसम, सेहत और खाने के अलावा किसी बारे में बात की। मैं अक्सर सोचता था कि अगर भारत में हमेशा एक जैसा मौसम होता, सब बच्चों की सेहत अच्छी होती और वे पढ़ने-लिखने में अच्छे होते तो वे अपने माँ-बाप से क्या बात करते? सोच रहा था महीना भर इंटर्नशिप की छुट्टी में पापा से क्या बात करूँगा।

***

फर्स्ट इयर खतम हो गया था और समर इंटर्नशिप के सिलसिले में, मैं कानपुर, घर, आ गया था। इंटर्नशिप तो जो हो रही थी, सो हो ही रही थी, असली दरबार, घर में पड़ोसियों और मोहल्ले वालों ने लगाया हुआ था। खालिस चरस बो दी थी। जो भी अपने नालायक बेटों से परेशान था वह उन्हें लेकर, मुझसे मिलाने, घर, ऐसे चला आ रहा था जैसे मैं कोई झाड़-फूँक वाला सिद्ध बाबा ठहरा। मंतर फेर दूँगा और उनके लड़के मुझसे इंस्पायर होकर कल ही पढ़ना-लिखना शुरू कर देंगे। मैं म्यूजियम में रखे गुलदस्ते जैसा बैठा रहता था। जिसे लोग दूर-दूर से देखने आते थे।

"अरे बेटा कुछ इसे भी समझा दो। कम से कम बैंक पी.ओ. ही निकाल ले।"

"हम तो कब से समझा रहे हैं कि आज के जमाने में अगर कोई अंगरेजी सीख ले और कम्प्यूटर का कोर्स कर ले। फिर दुनिया की कोई ताकत आपको रोक नहीं सकती।"

"वैसे आजकल इंजीनियरिंग लाइन में स्कोप तो बहुत है। आप खुद का कुछ स्टार्ट-अप क्यों नहीं करते?"

"बेटे अब आप IAS निकालिए। आप मेधावी हैं। IIT निकाल लिए तो IAS क्या चीज है!"

जो लड़के बचपन से मुझसे नफरत करते आए थे वे मुझसे और भी अधिक नफरत करने लगे थे। उल्टा घर में फेल हो जाने की वीरतापूर्ण घोषणा कर देने के बाद से पापा से कोल्ड वार छिड़ा हुआ था। वे अमेरिका हो गए थे और मैं रूस। एहतियात के तौर पर मैंने कोई भी कंट्रोवर्सियल स्टैंड लेना छोड़ दिया था। मसलन सचिन और सहवाग में बेहतर कौन है, लता और आशा में अधिक वर्सेटाइल कौन है, किशोर बेहतर थे या मुहम्मद रफी, आदमी को सरकारी नौकरी करनी चाहिए या प्राइवेट, लव मैरिज या अरेंज; इस तरह के सारे सवाल

More Books - www.The-Gyan.in

मैं डक कर रहा था।

ले-देकर बस दिन गिन रहा था।

"यार ये इंटर्नशिप कब खतम होगा बे, घर पे रहा नहीं जा रहा है", प्रसाद ने फोन पर कहा।

"मेरी भी बस लगी पड़ी है यार", मैंने कहा।

"अबे घर पे सबसे बड़ी दिक्कत ये है कि सुट्टा नहीं मार सकते। अब सुट्टा नहीं मार पा रहे हैं, तो सुबह-सुबह पखाना नहीं हो पा रहा है। घर से दू किलोमीटर दूर जाकर बंकर के अंदर छुपकर सुट्टा मारना पड़ता है और पूरे हाथ में बाँह तक चुटकी रगड़ना पड़ता है कि बाउ को महक न लग जाए। बाउ नहीं भी सूँघ पाते तो दादी घर भर में खोजने लगती हैं— अरे कहूँ गैस लीक हो रही है, कहूँ आग लग गई लागत है— ऐसी तैसी हो रखी है।"

"यार कानपुर में अलग नरक है। दिन भर पड़ोसी आकर डसते रहते हैं कि हमारे बच्चे को समझा दो। उस पर छः दिन से बत्ती नहीं आ रही है सो अलग। उसकी भी पंचायत घर आकर करते हैं कोई कहता है कि ट्रांसफार्मर फुक गया है, कोई कहता है कि जमीन के अंदर फाल्ट हुआ है। मोहल्ला रात भर अँधेरे में डूबा रहता है, मोबाइल की बैटरी फुकी पड़ी है सो अलग। लोग अलग चौधराहट करते रहते हैं, ज्ञान देते रहते हैं— 'अबे बत्ती आए कहाँ से, ये साले सपा वालों के पास कोइला हुई गया खतम। और अखलेश कह रहे हैं कि हमने तो कोयला मँगाया रहा, ये केंद्र की सरकार ने टाइम पे भेजा नहीं तो हम क्या करें। इस बार सपा सरकार घुसेगी' – बात-बात पर यही सब बकर होती रहती है। सरकारें बनाई जाती हैं और गिराई जाती हैं। पसीना चुआ-चुआ के गुस्से की सीमा पार हो रही है। उस पर अँधेरे का फायदा उठाके चोर-उचक्के अलग मौज ले रहे हैं।"

"अबे तुझसे बात करके पता नहीं क्यों अच्छा लगने लगा है। मेरी तो तब भी कम लगी पड़ी है, तेरी तो पूरी फट के चौहत्तर हो रक्खी है। चल फिर फोन रखता हूँ", प्रसाद ने हँसते-हँसते फोन काट दिया।

***

पाप ने मुझसे बात करना लगभग बंद कर दिया था। मेरे फेल हो जाने से अधिक मुश्किल उनके लिए यह पचा पाना था कि मैं फेल हो जाने से शर्मिंदा नहीं हूँ और उसके बावजूद उनसे नजर मिलाकर बात कर पा रहा हूँ। उनके लिए मैं हमेशा से उन लोगों में था जो परीक्षा में फर्स्ट न आने पर इतना शर्मिंदा और दुखी हो जाते थे कि पापा को मुझे खुद समझाना पड़ता था, "बेटा कोई बात नहीं, अगली बार बढ़िया करना।"

मैं घर पर अधिकतर समय अपनी किताबों के साथ बिता रहा था। अज्ञेय की 'शेखर

More Books - www.The-Gyan.in

एक जीवनी' पढ़ना दिल को कितना सुकून देता था। अपनी अलमारी में पुरानी किताबें उलटते हुए अपनी डायरी भी मिली। उसे पढ़ना अपने बचपने से वापस मिलने जैसा था। डायरी के सबसे पहले पन्ने पर मैंने लिखा था कि मैं पायलट बनना चाहता हूँ क्योंकि मुझे पायलट की ड्रेस बहुत अच्छी लगती थी। वे कितने रौबदार लगते थे! पेज नंबर बीस पर मैं टीचर बनना चाहता था। मुझे बच्चों को पढ़ाना बहुत अच्छा लगता था। क्योंकि मुझे अपने टीचर बहुत पसंद थे। यह बात कौतूहल पैदा करती थी कि जो सवाल मुझे इतना हैरान करते हैं, वे उन्हें चुटकी में कैसे बना देते हैं! एक दफा मैं रायटर भी बनना चाहता था। मैंने बच्चों की एक कॉमिक्स लिखी थी। पापा से जिद करता रहता था कि वो उसे छपवा दें। रंग भरवा के सजाकर। कॉमिक्स नहीं छपी। उसके बाद से मैंने डायरी लिखना बंद कर दिया था।

More Books - www.The-Gyan.in

चाय, शेषनाग, इंजीनियर और टॉलरेंस

सेकेंड इयर में आते ही एग्जाम्स, सेमेस्टर और फेल-पास अब आई-गई बात हो गई थी। कुछ-एक सेमेस्टर और आए, फेल पास की खबर लाए और चले गए। फेल होना कुछ समय के लिए दुःख देता था, और समय गुजरते हम भूल जाते थे कि फाइनल सेमेस्टर में एक और सब्जेक्ट की बैक क्लियर करनी होगी। ले-देकर हमने मान लिया था कि जब साल खतम होने को आएगा तो पिछली सभी बैक निकाल ही लेंगे। कॉलेज अपने आप में एक मजबूत किला हो गया था। कॉलेज के अंदर की दुनिया एक तरफ, कॉलेज के बाहर की दुनिया दूसरी तरफ। हमें इतना जरूर पता हो गया था कि कॉलेज के इस ओर कोई भी हमारा कुछ उखाड़ नहीं सकता, कॉलेज के बाहर भले ही हम कुछ थे या नहीं भी थे, कॉलेज के अंदर सब अपनी-अपनी दुनिया के राजा थे।

फर्स्ट इयर का जूनियर बैच आ गया था और हम सीनियर हो गए थे। सीनियर होना मतलब बेफिक्री की एक और सीढ़ी चढ़ जाना। हम क्या कर रहे थे, और क्यों कर रहे थे, ये पता नहीं था। और पता होना कोई जरूरी बात थी भी नहीं। BHU में, या देश के बाकी और इंजीनियरिंग कॉलेज में किस पर कब क्या धुन सवार हो जाए उसकी कोई वजह नहीं होती। सब अपनी-अपनी बयार में बह रहे थे।

जैसे कोई अगर लगातार सोलह घंटे सिर्फ काउंटर स्ट्राइक, डोटा और एज ऑफ एम्पायर जैसे कम्प्यूटर गेम्स खेल रहा था तो उसकी कोई वजह नहीं थी। कुछ लड़के सिर्फ गाँजा फूँक रहे थे, तो उसकी कोई वजह नहीं थी। यदि कोई सिर्फ बाल बढ़ा रहा था तो उसकी भी कोई वजह नहीं थी। जैसे फोर्थ इयर में समीर सक्सेना की जिंदगी में इस वक्त अकेला काम सिर्फ कंधों के नीचे तक के बाल उगा लेना था। आप यह सोचकर हैरान हो सकते हैं कि बाल उगाना भी कोई काम हुआ भला, क्योंकि बाल तो खुद-ब-खुद उग आते हैं और उन्हें उगा लेने में आपका क्या योगदान। पर वह बस बाल उगा रहा था और इसकी कोई वजह नहीं थी।

जैसे थर्ड इयर मेटलर्जी में अनिल रोजाना बस गर्ल्स हॉस्टल के ठीक सामने वाली पानी की टंकी की ऊँची छत पर बैठकर गर्ल्स हॉस्टल के अंदर के धुँधले नजारे निहारता रहता था

More Books - www.The-Gyan.in

तो उसकी भी कोई वजह नहीं थी। भले ही उतनी दूर से कुछ भी न दिखता हो लेकिन वह हर रोज, नियम से, किसी पक्के नमाजी की तरह टंकी पर इबादत पढ़ने जरूर जाता था।

जैसे एक दिन सेकेंड इयर के फर्स्ट सेमेस्टर के पहले एग्जाम के दिन प्रसाद और मोहित भाँग के नशे में बाइक पर एक ट्रक का पीछा करते-करते मिर्जापुर पहुँच गए थे तो उसकी भी कोई वजह नहीं थी। भाँग के हसीन नशे में उन्हें ट्रक का डिपर नियोन लाइट जैसा लग रहा था और वे अगल-बगल के जगमग साइन बोर्ड देखकर— अम्मेरिका, अम्मेरिका – चिल्ला रहा थे। यही कहते-बोलते वे लास वेगास की चाह में मिर्जापुर पहुँच गए, तो इसकी भी कोई वजह नहीं थी।

जैसे सेकेंड इयर सिविल में अमित गुप्ता सबसे कम समय में चिल्ड बियर पी जाने का रिकॉर्ड बना लेना चाहता था तो उसकी भी कोई वजह नहीं थी। वह सोलह सेकेंड का अपना पिछला रिकॉर्ड तोड़ने के लिए हर शुक्रवार आहार-विहार ढाबे पर पाया जाता और पूरा सेकेंड इयर सिविल ताली बजा रहा होता। यह अलग बात है कि मेकेनिकल फर्स्ट इयर के जूनियर ने उसका रिकॉर्ड दो सेकेंड से तोड़ दिया और पूरे सिविल सेकेंड इयर के जूनियर लड़कों के सामने नाक कट गई। इस बात पर दोनों बैच के लड़कों में भरपूर मार और जूतमपैजार हुई, इस बात की भी वजह नहीं थी।

आप मेरी पूछिए तो मैं दोस्त, कॉलेज, बनारस और शुभ्रा के प्रेम में आने वाले दो-ढाई साल गुजार देना चाहता था। इसी सहारे में इंजीनियरिंग कट रही थी। हालाँकि शुभ्रा अक्सर समझाती थी कि मैं पढ़ भी लूँ और कॉलेज में सिर्फ वक्त जाया न करूँ लेकिन मैं खुश था। मेरे साथ पिछले बीस-इक्कीस साल में ऐसा पहली बार हो रहा था कि मैं सिर्फ वही कर रहा था जो करना मुझे अच्छा लग रहा था। मैं थिएटर सीख रहा था। किताबें पढ़ रहा था। सुसुवाही पर बच्चों को पढ़ा रहा था, उन्हें साफ और सही इमला लिखते देख खुश हो रहा था, कोर्स के अलावा जो भी पढ़ा जा सकता था, सबकुछ पढ़ रहा था। अपने ही कंफ्यूजन में खुश था। इन सब में, पहली बार जिंदगी बहुत आसान, सुस्त और हल्की होती जा रही थी। दिन ऐसे बीत जाते थे जैसे सोमवार और इतवार में कोई बुनियादी फरक न हो।

मुझे लगने लगा था कि इन सबके लिए तीन साल बहुत कम हैं और कॉलेज कभी भी खतम हो सकता है। मैं रोज शुभ्रा से जिद करता था कि आज बनारस का कोई नया कोना छान मारते हैं, जो पहले नहीं देखा हो। मैं रोज बनारस की हर गली, हर नुक्कड़ उसके साथ, उसकी आँखों से देख लेना चाहता था। मैं वो सब भी उसके साथ देख लेना चाहता था जो शायद पिछले कितने बरसों से लगभग रोज देख रहा था, लेकिन उसके साथ नहीं देखा था। जैसे कि सुबह का सूरज जो अभी नवजात उगा है, शाम का सूरज जो अभी हाल ही में डूबने वाला है, सूरज डूबने के ठीक बाद निकलने वाला चाँद, पूर्णिमा के दिन वाला चाँद, पूर्णिमा के ठीक चार दिन बाद वाला चाँद, उसके अगल-बगल के तारे, पास वाले तारे, उससे बहुत

More Books - www.The-Gyan.in

दूर वाले तारे, तारों को ढक लेने वाला बादल का टुकड़ा, बादल के टुकड़े को उड़ा लेने वाली हवा, हवा में उड़ने वाली गौरैया, और ऐसी तमाम सारी चीजें जो कि मैं पहले भी कई बार देख चुका था लेकिन उसका हाथ थामे हुए नहीं देखा था।

***

इसी हसीन सिलसिले में, एक सुबह मैं उसके साथ घाट के उस पार गंगा जी की रेत पर टहल रहा था। वैसे तो मल्लाह घाट के उस पार ले जाने के लिए तीन सौ से चार सौ रुपये माँगते थे, लेकिन अगर कोई लड़का-लड़की घाट के उस पार जाना चाहते हों तो वे हजार रुपये के नीचे बात ही नहीं करते थे। उस पर पूरे रास्ते, नाव में, घूरते-जाँचते इस कदर थे कि जैसे वे लड़की के फूफा लगते हों। हुज्जत-फजीहत किसी तरह काट लेने के बाद, जब हम घाट के उस पार पहुँचे तो मल्लाह नाव को थोड़ी दूर पर लगा आया और हमें आधे घंटे बाद आने के लिए बोल गया।

हम एक-दूसरे का हाथ पकड़कर रेत पर, धीरे-धीरे ऐसे चल रहे थे जैसे चलना सीख रहे हों। जैसे कोई किसी बच्चे को उँगली पकड़कर चला रहा हो। या जैसे आप किसी नई जगह पर संभलकर पैर रख रहे हों क्योंकि आपको पता न हो कि जमीन कितनी पोली है। जैसे जब पहले आदमी ने चाँद पर पैर रखा हो तो उसने बड़ी सावधानी से अपना पैर चाँद की जमीन पर जमाया होगा और फिर अपने पैर के निशान को बनते देखा होगा। ऐसे ही मैं गंगा जी की रेत पर पैर बना रहा था। मेरे चलने से मेरे पैर का बड़ा निशान बनता था, जिसमें शुभ्रा अपना छोटा पैर रख देती थी। मैं इस बात से खुश था कि मेरे पैर के बड़े निशान में उसके पैर का छोटा निशान समा जाता था। वह इस बात से खुश थी कि उसके पैर के छोटे निशान मेरे पैर के बड़े निशान में खो जाते थे। हम दोनों इस बात से खुश थे कि हमने कोई सुंदर पेंटिंग जैसे चीज, यूँ ही खेल-खेल में बना दी।

"तुम्हारे पैर के अँगूठे की बगल वाली उँगली, तुम्हारे अँगूठे से बड़ी है", उसने कहा।

"हाँ तो?" मैंने कौतूहल से पूछा।

"और देखो मेरे पैर के अँगूठे की बगल वाली उँगली मेरे अँगूठे से छोटी है।"

"इसका भी कुछ मतलब होता है क्या?"

"बिलकुल होता है। जिनके पैर के अँगूठे की बगल वाली उँगली अँगूठे से बड़ी होती है वो बड़े कंफ्यूज्ड होते हैं। इमोशनल होते हैं। थोड़े आर्टिस्ट टाइप के। थोड़े बुद्धू। जैसे तुम।"

"अच्छा तो जरूर जिनके पैर के अँगूठे की बगल वाली उँगली अँगूठे से छोटी होती है, वो एकदम जीनियस टाइप के होते होंगे। तुम्हारे जैसे। है न!"

"बिलकुल। कोई शक?"

More Books - www.The-Gyan.in

"मैं कंफ्यूज्ड नहीं हूँ।"

"अच्छा कंफ्यूज्ड नहीं हो। बुद्धू हो।"

"नहीं। बुद्धू भी नहीं।"

"अच्छा बाबा! बुरा क्यों मानते हो। मैं तो बस ऐसे ही बात की बात कह रही थी।"

"अच्छा मुझे पता नहीं है क्या! तुम घूम-फिर के अभी यही कहोगी कि पढ़ लिया करो। नहीं तो फेल हो जाओगे."

"तुमको जरूर पता है कि मैं क्या बोलने वाली हूँ!"

"और नहीं तो क्या, आजकल तुम घुमा-फिरा के सारी बात इसी से जोड़ देती हो।"

"बाकी समय का तो पता नहीं, लेकिन अभी ऐसा नहीं बोलने वाली थी।"

"मेरे फेल होने से तुम इतना डरती क्यों हो! तुम्हें मालूम है हम लोग आज फेल होने की पार्टी करने जा रहे हैं!"

"वाह! बड़ा भारी जश्न होना चाहिए फिर तो। इतना बड़ा काम जो किया है आप लोग ने, कितना मुश्किल होता होगा इतनी मेहनत करके अच्छे नंबरों से फेल हो जाना! नहीं?"

"यार वो जितने लोगों ने नाइन प्वाइंटर फोड़ा है, हम उनसे पार्टी माँगने गए तो उन्होंने मना कर दिया। हमने भी ताव में कह दिया कि ठीक है, तुम लोग नाइन प्वाइंटर की पार्टी नहीं देना चाहते, तो हम लोग फेल होने की पार्टी देंगे। हम लोग दिलदार हैं। आ जाना पार्टी में।"

"तुम भी महान हो और तुम्हारे दोस्त भी महान हैं। ठीक है जी। जाओ पार्टी करो। हम कल सुबह मिलते हैं।"

"कल सुबह नहीं। शाम में मिलते हैं। कल वो प्रोटेस्ट है न, इन-टॉलरेंस डिबेट वाला!"

"कैसा प्रोटेस्ट?"

"अरे तुमने पोस्टर नहीं देखा क्या? लंका वाले गेट पर काफी बड़ा प्रोटेस्ट हो रहा है। नई सरकार आने के बाद से जो इनटॉलरेंस बढ़ा है, उसके खिलाफ!"

"किसके खिलाफ?"

"देश में कितनी ही घटनाएँ हो रही हैं। कलबुर्गी को मार दिया गया। गौ रक्षक अलग बवाल कर रहे हैं। हिंदूवादी ग्रुप जैसे बजरंग दल, श्रीराम सेना, RSS वगैरह नई सरकार आने के बाद से अलग शह पा गए हैं। बड़े-बड़े राइटर-कलाकार-डाइरेक्टर लोग उसके खिलाफ अपने अवार्ड लौटा रहे हैं। सारे IIT वाले इस प्रोटेस्ट में शामिल हो रहे हैं। इसलिए हम लोग भी बहुत बड़ा प्रोटेस्ट करने वाले हैं।"

"अच्छा। तो मतलब ये आपका नया जोश है!"

More Books - www.The-Gyan.in

"इसमें गलत क्या कर रहे हैं! एक वाजिब प्रोटेस्ट ही तो कर रहे हैं!"

"गलत कुछ नहीं है। लेकिन ये बस तुम्हारा नया जोश ही है। अभी कुछ दिन पहले तुम दास कैपिटल पढ़ रहे थे। तब तुमको कम्यूनिज्म की किताब फैसिनेट कर रही थी, फिर किसी ने सोशलिज्म की किताब पकड़ा दी तो हफ्ते भर के लिए सोशलिस्ट हो गए। आजकल वापस कैपिटलिस्ट हो। अब आज ये नया प्रोटेस्ट!"

"हाँ तो ठीक है। क्या बुराई है इसमें?"

"कुछ नहीं। मैं जा रही हूँ।"

"अरे बाबा! नाराज क्यों हो रही हो!"

"नाराज इसलिए हो रही हूँ क्योंकि तुम्हारे लिए डर लगता है। चिंता होती है तुम्हारी।"

"क्यों भला?"

"क्योंकि मुझे समझ नहीं आता कि तुम करना क्या चाहते हो।"

"नहीं मुझे नहीं पता कि मैं जिंदगी में क्या करना चाहता हूँ। मुझे क्या किसी को नहीं पता होता। कई-कई बार तो पता लगते-लगते लोगों की जिंदगी बीत जाती है। देखो घाट के उस पार कितने विदेशी साधू बनके बैठे हैं। देश, घर-बार, पैसा सब छोड़ कर इधर आए हैं क्योंकि जो चाहते थे वो शायद उधर नहीं मिला।"

"तो तुम भी बन जाओ बाबा।"

"अरे मैं कब कह रहा हूँ कि मैं बाबा बनना चाहता हूँ? और तुम इतना डरती क्यों हो मेरे लिए? मैं बस थोड़ा एक्सप्लोर कर रहा हूँ।"

"एक्सप्लोर! फेल होकर! एक्सप्लोर करने के लिए पूरी जिंदगी पड़ी है।"

"अरे बाबा मैं पास हो जाऊँगा। आई प्रॉमिस पढ़ लूँगा। जिंदगी भर पढ़ता ही तो आया हूँ। इधर भी पढ़ लूँगा तो पास हो ही जाऊँगा। बीस साल का हूँ लेकिन फिर भी जिंदगी में कहने-बताने को बस यही है कि हर साल टॉप कर लेता हूँ। बस। तुम्हें मालूम है, आज भी कानपुर जाता हूँ तो पापा ही मुझे स्टेशन छोड़ने आते है क्योंकि बीस साल कानपूर रहने के बाद भी मुझे स्टेशन जाने का रास्ता तक नहीं पता। और रात में अकेले कभी स्टेशन तक निकला नहीं। कभी दोस्तों के साथ कानपुर में यूँ ही बाइक पर लोफड़ की तरह घूमा नहीं। घूमता भी क्या, कानपुर भर में मेरा कोई दोस्त नहीं है क्योंकि मैं ऐसे लोगों से अधिक बात नहीं करता था जो पढ़ने-लिखने में मुझसे अच्छे नहीं होते थे। ऐसे लोगों से भी नहीं जो गाली-वाली देकर बात करते थे। मैं जिंदगी भर एक नंबर का नमूना रहा हूँ। मैं हमेशा एक नमूना बने रहना नहीं चाहता।"

"अच्छा तो तुम पढ़-लिख लोगे तो फिर नमूने हो जाओगे! तब फिर क्या करने का

More Books - www.The-Gyan.in

इरादा है?"

"पता नहीं। बस फिलहाल मुझे जो अच्छा लगता है वही करता हूँ।"

"तुमको पता भी है कि तुमको क्या अच्छा लगता है?"

"बिलकुल पता है। मुझे तुम अच्छी लगती हो।"

"टॉपिक मत चेंज करो। मैं तुम्हारी फालतू बात में नहीं आने वाली!"

"बिलकुल ठीक तो कह रहा हूँ। मुझे तुम बहुत अच्छी लगती हो।"

"आई एम नॉट इवन लिसनिंग।"

"जैसे अभी तुम नाराज हो रही हो तो तुम्हारी आँखें और भी गोल हो गई हैं, मुझे उनकी गोलाई अच्छी लगती है। जब तुम नाराज नहीं होती हो तो भी मुझे तुम्हारी आँखें अच्छी लगती हैं, तब वो बिलकुल एक नाव के आकार की लगती हैं। जैसे उधर गंगा जी में वो कश्ती है। सफेद पानी में काले रंग की कश्ती। जैसे तुम्हारी सफेद आँखों के बीच काले रंग की पुतली।"

"बस बातें बनवा लो तुमसे। इन्हीं बातों में फँस गई मैं बेचारी। ये आर्टिस्ट लोग इसी सब में बड़े माहिर होते हैं। भोली-भाली लड़कियों को फँसा लेते हैं।"

"तुमको इतना प्यार करने वाला लड़का कभी ढूँढने से भी नहीं मिलेगा।"

"यार एक तो तुम हर बात में प्यार की बात ऐसे कह देते हो कि पता ही नहीं चलता कि प्यार की बात कह रहे हो या कोई भी रैंडम-सी बात। तुम इतनी बार आई लव यू कह देते हो कि मैं भूल ही जाती हूँ कि तुमने मुझे कभी प्रॉपरली आई लव यू कहा हो।"

"हाहा। ये प्रॉपरली आई लव यू कहना क्या होता है?"

"चलो। नाव वाला वापस आ गया है, कब से घूर रहा है हमें। आधे घंटे का बोलकर गया था। एक घंटे के ऊपर हो गया।"

"अच्छा बता तो दो कि ये प्रॉपरली आई लव यू कहना क्या होता है?"

"मेरा सर होता है!"

"अरे आई लव यू न!"

"ऐसे आई लव यू, उस नाव वाले को बोलो।"

"ए नाव वाले भैय्या, आई लव यू।"

"अरे क्या कर रहे हो, चलो बैठो नाव में!"

"अच्छा बता दो न, प्रॉपरली आई लव यू बोलना कैसे होता है?"

More Books - www.The-Gyan.in

"खुद पता करो।"

लड़कियाँ, नाराज होकर और कितनी सुंदर लगने लगती हैं यह मैंने उस दिन सीखा। नाराज लड़कियों को गले लगाकर वापस से हँसा देने की इच्छा अचानक कितनी तीव्र होने लगती है, यह भी मैंने उस दिन सीखा। मैं एकदम नहीं चाहता था कि मैं उसे नाराज ही हॉस्टल छोड़ आऊँ इसलिए हम और तमाम देर घाट पर टहलते रहे। 'भौकाल चाट' वाला भौकाली लोहे का तवा जोर से पीट रहा था। मैंने ठीक उस क्षण यह भी सीखा कि चाट और गोलगप्पे खिलाकर नाराज लड़कियों को कितनी आसानी से मनाया जा सकता है।

शुभ्रा अपने स्वाद की परफेक्ट चाट बनवाते हुए भूल गई कि वह नाराज थी। "भईया तीखा कम", "अरे थोड़ा और डालो, इतना कम नहीं", "एक नींबू और", "मीठी वाली चटनी थोड़ा और", "अरे आलू को और भूनो न", "इश इतना तेल कौन डालता है", "इसपे एक सूखा गोलगप्पा भी फोड़ कर डालो न", "ये चम्मच साफ है?" ऑर्डर समझते-समझते भौकाली का भौकाल पूरा डाउन हो गया। मैं उसे कौतूहल से देख रहा था।

"अब तुम खा लो, पेट भर गया। इतना तीता बनाया है", शुभ्रा ने कहा

"अरे चार चम्मच ही तो खाया है!"

"कहाँ? सब तो खा लिया। थोड़ा-सा बचा है, वो तुम खा लो। मुझे मोटा नहीं होना। अब मुझे जल्दी से हॉस्टल छोड़ दो, नहीं तो गेट बंद हो जाएगा।"

***

मैं शुभ्रा को हॉस्टल छोड़ आया। हाइवे पर आहार-विहार ढाबे पहुँचा तो उधर दारू पार्टी पहले जी सज चुकी थी। पता चला कि नाइन प्वाइंटर फोड़ने वाले टॉपर लड़के फ्री की दारू पीने भी नहीं आए। लेकिन फेल होने वालों लड़कों ने हिम्मत नहीं हारी और 'हर-हर-महादेव' का नारा लगाकर शाम तर करने की इब्तदा कर दी। पार्टी शुरू होने के पहले तक तो सब ठीक था, लेकिन शब्बीर कुमार और मोहम्मद अजीज के दर्द भरे नगमों के साथ तीन-चार पेग सधाते ही धीरे-धीरे यह एहसास होना शुरू हुआ कि हम सच में फेल हो चुके हैं और अगर अब पढ़े नहीं तो शायद इयर बैक भी लग सकती है। धीरे-धीरे यह बुनियादी सवाल भी बोतल से उतराकर निकल आया कि हम लोग फेल हो जाने का जश्न क्यों मना रहे हैं? पांडे निराशा और गुस्से के रसातल में घुसा जा रहा था। रसातल की गहराई बोतल जितनी थी। बोतल की गहराई समंदर भर।

"क्या होगा इंजीनियरिंग कर के! साला अगर आज कॉलोनी के वो अंकल मिल गए जो आकाश की ओर देखते हुए बोलते थे कि, बेटा बस इंजीनियरिंग कर लो आगे बहुत स्कोप है तो कसम महामना मदन मोहन मालवीय की, उनका घुटना फोड़ दूँगा", पांडे नीट सुटुकते

More Books - www.The-Gyan.in

हुए बोला।

"काहे रो रहे हो बे पंडित! पास हो जाओगे अगले सेमेस्टर में। एक सब्जेक्ट में ही तो बैक लगा है! क्लियर कर लेना", मैंने कहा।

"स्वामी निशांत! आप रहने दें। आप बस एक सब्जेक्ट में फेल हुए हैं। मेरा चार सब्जेक्ट में बैक लगा है। और कोई भला मानुस जरा ये समझने में हमारी मदद करेगा कि हम लोग फेल होने की पार्टी क्यों कर रहे हैं?"

"शांत पंडी जी शांत! जैसे एक बैक क्लियर होगा वैसे ही चार भी क्लियर हो जाएगा।"

"यार ये वही निशांत है? ई ससुर पहले 16 नंबर तरफ जाते भी नहीं थे कि उधर चरित्रहीन लड़के रहते हैं, जैसे उधर छूत की बीमारी वाला लोग रहता हो। कोढ़ी स्वाइन फ्लू वाला। ये दिन-रात लंगोट लपेटकर पढ़ाई करते रहते थे कि हमको नासा जाना है। और आज की तारीख में खुद इतने बड़े कुलटा, कुलक्षिणी हो गए हैं कि पूछिए ही मत। ई सरउ जब पहली बार हमसे मिले थे तो फाइव प्वाइंट समवन लेकर आए थे और आते ही बोले थे कि चलो लाइब्रेरी चलते हैं नहीं तो किताबें खतम न हो जाएँ!"

"हाँ तो तब की बात और थी पांडे! तमाम बार तो आदमी को जिंदगी भर ये पता नहीं होता है कि वो क्या करना चाहता है। या फिर वो जो कुछ भी कर रहा है वो क्यों कर रहा है।"

"ए फिलोसफी मत झाड़ो हमसे! पेग बनाओ।"

"फिलोसफी नहीं झाड़ रहा हूँ, सच कह रहा हूँ।"

"हाँ तो मत बोलो। झूठ बोलो कुछ। बस सर मत चाटो मेरा।"

"देखो, तुमको एक वाकिया बताता हूँ।"

"अबे नहीं सुनना तुम्हारा वाकिया।"

"जब मैं तीसरी क्लास में था तब एक दफा माठ सा'ब ने पूछा था, बच्चों तुम बड़े होकर क्या बनना चाहते हो, अधिकतर ने पायलट कहा, कुछ ने एस्ट्रोनॉट तो कुछ ने डॉक्टर। इंजीनियर किसी ने नहीं कहा और फिर भी आज अधिकतर लोग इंजीनियर ही हैं। इस बार जब इंटर्नशिप की छुट्टी पर कानपुर गया था तो माठ सा'ब मिले और बोले, बेटा हम भी मास्टर कहाँ बनना चाहते थे! इसी भटकाव का नाम ही जिंदगी है। जिंदगी में आप जाना कहीं और ही चाहते हैं, लेकिन पहुँच वहीं जाते हैं जहाँ सब जा रहे हैं, जहाँ पहुँचने के लिए सड़क अच्छी हो, रास्ते में जगमग बत्ती-उत्ती लगी हो, साइन बोर्ड लगे हों, हर मील पर मील के पत्थर हों, ताकि पता चलता रहे कि हम कितना चल लिए और कितना चलना बाकी रह गया", मैंने कहा।

More Books - www.The-Gyan.in

"हमारी दारू का नास मत मारो तुम। अभी हल्का-हल्का मत्था घूमा है और तुम फिर अपना प्रवचन देना शुरू हो गए", पांडे ने कहा।

"पंडित, तुम टेंशन मत लो बे। सब ठीक हो जाएगा", प्रसाद ने कहा।

"कैसे टेंशन न लें यार! ये भी कोई जिंदगी है! फटी पड़ी है कि पास होंगे कि नहीं होंगे। जो फेल हो गए तो अलाहाबाद में जाकर दुकान खोलनी पड़ेगी। देश के यूथ को जिंदगी में कभी तो आराम हो। पढ़-पढ़कर यहाँ मूँछ का बाल सफेद हो गया है, लेकिन पढ़ाई है कि खतम होने का नाम ही नहीं ले रही। साला पढ़ाई न हो गई अटल बिहारी वाजपेई का भाषण हो गई। चले ही जा रही है। कॉलोनी के वो वाले अंकल कहते थे कि बस प्री-बोर्ड में अच्छा नंबर लाओ, सीन सेट है। हम ले आए अच्छे नंबर। फिर कहे दसवीं में अच्छा नंबर ले आओ फिर सीन सेट है। हम साला दसवीं में टॉप मार दिए। फिर बोले बस बारवीं में डिस्टिंक्शन ले आओ सीन सेट है। हम साला उसमें भी अलाहाबाद टॉप कर दिए। फिर बोले बस IIT निकाल लो सीन सेट है, हम उसमें भी सेलेक्ट हो लिए। लेकिन सीन है कि सेट होने का नाम ही नहीं ले रहा है। साला सीन न हो गया अभिषेक बच्चन का फिल्मी कैरियर हो गया। सीन है कि सेट ही नहीं हो रहा भोसड़ी का। बैक लग गया है। यहाँ हर कोई यूथ को डीमोरलाइज करने पर तुला है!"

"बुजरो के पढ़ोगे है नहीं और फिर रोना रोओगे कि IIT आके कुछ नहीं होता", प्रसाद पांडे के विधवा विलाप से चिढ़कर बोला। "पढ़ो चाँप के, लाइब्रेरी-लैब-डिपार्टमेंट जाके माथा टेको। अपने आप नंबर आ जाएगा। क्या सोच के आए थे यहाँ? चार साल लौंडियाबाजी करेंगे, आयशा टाकिया और अंतरी से मोहब्बत के सपने देखेंगे और चौथा साल शुरू होने से पहले ही गूगल फेसबुक वाले तुमको सोलह नंबर में खोजते-खोजते आएँगे और कहेंगे कि अरे पांडे जी, आप कहाँ यहाँ पत्ते खेलने में बिजी हैं, और हम लोग कब से एक करोड़ का पैकेज ब्रीफकेस में भरकर आपको खोज रहे हैं। वैसे कैश लेंगे कि चेक बना दें?", प्रसाद ने कहा.

"नाम मत लो अंतरी का। दिल तोड़ा है उसने मेरा। आयशा टाकिया ही अच्छी थी।"

"अच्छा हुआ कि बस दिल ही तोड़ा है, तुमने जो काम किया है उतने में लड़कियाँ सर भी तोड़ देती हैं", प्रसाद ने सिगरेट जलाते हुए कहा।

"क्यों? क्या कर दिया पंडित ने?" मोहित ने पूछा।

"ई बुजरो वाले उसको पत्र लिखे। सेवा में, सुश्री अंतरी। यहाँ सब कुछ कुशल-मंगल है, आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपके वहाँ भी सब कुछ कुशल-मंगल होगा। आगे समाचार यह है कि चूँकि कल मैंने आपको थर्ड इयर सिविल के लड़के के साथ घाट पर नौका विहार करते हुए देखा था, इसलिए मैंने निर्णय लिया है कि मेरे और आपके रिश्ते की

More Books - www.The-Gyan.in

उम्र यहीं तक हो। अस्तु आपसे निवेदन है कि आपको पा लेने की ख्वाहिश में पिछली तीन चार महीने में मुझे जो भी आर्थिक क्षति हुई है उसकी शीघ्र भरपाई करें। पत्र के साथ निम्नलिखित रसीदें और बिल संलग्न है – बीएसएनएल के रीचार्ज की राशियाँ, आर्चीज के गिफ्ट्स बिल, पिजेरिया और अन्य रेस्त्राँ के चेक, बाइक में पेट्रोल डलाने का खर्चा और कुछ अन्य फुटकर खर्चे। पचास रुपये का खर्चा याद नहीं आ रहा था इसलिए आपको बेनिफिट ऑफ डाउट देते हुए बिल में से काट ले रहा हूँ। धन्यवाद", प्रसाद ने बताया।

"वाह जी वाह! एक गुलजार साहब हुए हैं। और एक हुए हैं अमित कुमार पांडे। इतिहास में आज तक का सबसे दर्द भरा ब्रेक अप लेटर गुलजार साहब ने लिखा— 'मेरा कुछ सामान तुम्हारे पास पड़ा है'। और उसके बाद पांडे जी ने लिखा – 'मेरा सात सौ पिचहत्तर रुपिया, तुम्हारे पास पड़ा है, वो भिजवा दो, मेरा वो सामान लौटा दो', मैंने कहा।

"हाँ तो क्या गलत किया! उसने मेरे साथ धोखा किया है। ऐसे थोड़ी होता है! 'सबका बाँटे है, हमका डाँटे है'। हम भी तो तैयार थे उसे नौका विहार कराने को। अरे हम खुद नाव बन जाते और तैर जाते गंगा जी में। कोई प्यार से कहता तो। उसने मेरा प्यार देखा है, अब वो मेरी नफरत देखेगी।"

"उसके पास और भी बहुत कुछ है देखने को। तुम्हारा बनच्चर जैसा मुँह और तुम्हारी नफरत देखने के अलावा। भूल जाओ और आगे बढ़ो। वो तुम्हारे बस की नहीं है। औकात से बाहर है", मोहित पांडे से उलझ गया।

"हाँ तो हम भी कौन-सा मरे जा रहे हैं। वैसे भी हमारा मन उठ गया है ये सब टुच्चापंती के काम से। इंजीनियरिंग में, आयशा टाकिया में, अंतरी में, पढ़ने-लिखने में कुछ नहीं रखा। सब साला सिस्टम ही खराब है। यार कुछ तो अलग करना बनता है न लाइफ में!"

"कुछ करना चाहते हो न लाइफ में? दारू का पैसा निकालो। आज ही सारा उधार चुकता करो", मोहित ने कहा।

"दे देंगे बे। कहीं भागे जा रहे हैं क्या?"

"हाँ तो सिस्टम बदलने और लाइफ में कुछ करने जैसी बड़ी-बड़ी बातें मत किया करो पंडी जी। मेरा पाँच सौ रुपिया मार के बैठे हो और सिस्टम बदलेंगे! अंतरी से सात सौ पिचहत्तर वसूलने के लिए मरे जा रहे हैं और जीवन में बड़का भारी काम करना है इनको", मोहित ने एक के बाद एक विष भरे बाण चलाकर पांडे को शरशैय्या पर बेध दिया।

"यार कैसे दोस्त हो तुम लोग! तब से गरिया रहे हो! कोई दुखी है तो उसका सहारा नहीं बन सकते तो कम से उसकी छाती पर बैठके तांडव तो मत करो!"

"दोस्त हैं। बीवी नहीं हैं। पैसा निकालो।"

More Books - www.The-Gyan.in

"ले बे भिखारी, रख ले पैसा।"

"सिगरेट का भी निकालो। इस बार डब्बा तुम ही खरीदोगे।"

"ले मर!"

पांडे ने दिल पर पत्थर रखकर मोहित को पचास का नोट पकड़ाया और उसकी घर की महिलाओं के नाम कसीदे पढ़ता हुआ वो अगला पेग बनाने लगा। मैंने अपना गिलास भी आगे बढ़ाया।

"स्ट्रांग बनाओ"

"ए सबका बराबर-बराबर पेग बनेगा", पांडे ने कहा।

"हाँ तो सबका स्ट्रांग बनाओ", मैंने कहा।

"अबे! अबे वो उधर अनिरबन दास बैठा हुआ है क्या?" पांडे ने कहा।

"कौन अनिरबन दास?" मैंने कहा।

"अनिरबन दास। माइक्रोप्रोसेसर का प्रोफेसर जो तुमको फेल किया था।"

"अरे हाँ बे! वही है। चलो पहले से प्रणाम बोल देते हैं। अगर वो हम लोग को देख लिया तो दिक्कत हो जाएगी।"

हम लोग प्रोफेसर अनिरबन दास को प्रणाम बोलने उठे। वो बडवाइजर सधा रहे थे। आम तौर पर ढाबे में बैठकर अकेले ही पिया करते थे। उदास लग रहे थे। दूर से पहचानने की कोशिश में चश्मा नीचे करके देखने लगे। पलकें झपके-मूँदे-खोले, चश्मा वापस ऊपर कर रहे थे। पहचान गए कि मैं आ रहा हूँ। मैंने प्रणाम कहा और अनिरबन दास रूआसे हो गए। भगवान जाने बियर का असर था या सचमुच दुखी थे।

"निशांत बेटा, मैंने अपने पंद्रह साल के कैरियर में किसी को फेल नहीं किया है। पर तुम ही बताओ मैं क्या करता!" बेचारे अपराधबोध में लगभग रो ही दिए।

"अरे कोई बात नहीं है सर", मैंने कहा। पांडे और प्रसाद को हँसी आ गई। दोनों मुँह दबा के कोने में भागे।

"अगर तुम कुछ लिखोगे ही नहीं तो मैं कैसे पास करूँगा। यार सौ में चार नंबर कौन लाता है! मुझे कोई फेल करने का शौक तो है नहीं तुम कुछ तो लिख देते", उन्होंने कहा। हम बुक्का फाड़े उन्हें रोता देख रहे थे। उन्हें इतना अपराधबोध में डूबा देख, बुरा भी लग रहा था। हँसी भी आ रही थी। पर कहना क्या है, अधिक समझ नहीं आ रहा था। उस वक्त मुझे बस यही समझ आया कि उनका गिलास बना दूँ।

"कोई बात नहीं सर। हो जाता है। आपकी गलती नहीं है", मैंने उनका गिलास बनाकर

More Books - www.The-Gyan.in

आगे बढ़ाया।

"अरे कैसे निकालते हो यार! सब झाग-झाग हो गया", अनिरबन दास ने बियर से झाग फूँकते हुए कहा।

"सॉरी। गिलास टेढ़ा करके निकालना चाहिए था", मैंने दूसरा गिलास भरा और आगे बढ़ा दिया।

"कम-से-कम क्लास तो आ जाया करो। क्लास आओगे तो अपने-आप ही पास हो जाओगे। तीस में से सात क्लास आए हो। करते क्या हो कि क्लास नहीं आते?"

"सॉरी सर। लेकिन आपका अधिकतर क्लास शनिवार और रविवार को होता है। उस दिन मेस वर्कर्स के बच्चों को पढ़ाने सुसुवाही जाता हूँ", मैंने कहा।

"अरे पहले खुद तो पढ़ लो।"

"हाँ मैं भी पढ़ लूँगा सर। उनका पढ़ना भी तो जरूरी है!"

"सप्लीमेंट्री कैसे निकालोगे?" अनिरबन दास फिर रूआसे हो गए।

"अरे मैं निकाल लूँगा। आप दुखी मत होइए", मैंने डरते-डरते उनके कंधे पर हाथ डाल दिया।

"ये मत सोचना कि मैं आसान पेपर सेट करूँगा। सबसे टफ पेपर सेट करूँगा", वे अपने कंधे पर मेरा हाथ देखकर बोले।

"हाँ कोई बात नहीं सर। आप टफ ही बनाइए।"

"चियर्स!" उन्होंने गिलास ऊपर किया।

"चियर्स!" मैंने उनके गिलास से अपना गिलास सधा दिया।

More Books - www.The-Gyan.in

हॉर्न ओके प्लीज

बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी की हर सुबह का सूरज लिम्बडी कार्नर पर मजनू भैया की चाय की टपरी पर एल्यूमिनियम के बड़े भगौने में खौलकर उगता है। मजनू भैया देर वाली रात और जल्दी वाली सुबह के बीच का चाँद भगौने में उतारकर उसमें दूध और चाय पत्ती घोल लेते हैं और उसको तब तक घड़े की घंटी से हिलाते रहते हैं जब तक कि वो सफेद रंग के चाँद से नारंगी-कत्थई रंग के सूरज में तब्दील नहीं हो जाता। फिर परात पर गिलास से गिलास सटाकर रख दिए जाते हैं और मजनू भैया इकट्ठे सारे गिलास में पतीले से चाय उलीचते रहते हैं, क्योंकि तड़के ही लिम्बडी कार्नर पर इतनी भीड़ जमा हो चुकी होती है कि उनके पास इतना समय नहीं होता कि वे एक-एक करके अलग-अलग गिलास में चाय निकालें। जो चाय परात में फैल जाती है वो भगौने में वापस खौलने रख दी जाती है। चाय देर शाम तब तक खौलती रहती है जब तक कि सूरज डूब नहीं जाता।

अमूमन हमारी हर सुबह यहीं से शुरू होती है। आज भी हुई। बाकी जगह चाय जागने के लिए पी जाती है लेकिन इधर चाय अलसाने के लिए पी जाती है। गिलास का कोई हिसाब नहीं। दो पीजिए, चार पीजिए, मजनू का पतीला जैसे महाभारत के जमाने का अक्षय पात्र है। उसके भीतर चाय कभी खतम नहीं होती। मजनू की दुकान IIT BHU के लिए वैसा ही है जैसे किसी शहर या दरिया के लिए वाच टावर होता है। जिधर सुकून से बैठकर, अलसाकर, उधर तक देखा जा सके, जिधर तक नजर जा सके। धीरे-धीरे बात की जा सके। जैसे गाय-बैल घंटों जुगाली करते रहते हैं और पता भी नहीं पड़ता कि क्या कह रहे हैं।

हम उसी तरह चाय पी रहे थे, अलसा रहे थे और बतिया रहे थे। मैं, पांडे, प्रसाद, मोहित, विवेक और अखिल।

“लंका गेट पर प्रोटेस्ट है। चलोगे तुम लोग?” मैंने पूछा।

“भाक्क! यही काम रह गया है!” सबने एक सुर में कहा।

“अरे चलते हैं न! देश में इनटॉलरेंस बढ़ गया है। अगर हमारे जैसा देश का यूथ इसके खिलाफ आवाज नहीं उठाएगा तो कौन उठाएगा?” पांडे ने कहा।

“ए पंडित! ये सब निशंतवा को करने दो। तुम ये सब में कब से पड़ने लगे?” प्रसाद ने

More Books - www.The-Gyan.in

पूछा।

"जाने दो पंडी जी को। इसका जाना बनता है", मोहित ने कहा। "अंतरी से लात पड़ी है। आयशा टाकिया दूध डेरी के पोस्टर से बाहर नहीं निकल रही है। चार सब्जेक्ट में बैक लग गई है। इंजीनियरिंग हो नहीं रही है। पंडी जी फ्रस्टिया के युवा, रंग दे बसंती और थ्री इडियट्स जैसी फिल्में देख रहे हैं। कल निशंतवा की दास कैपिटल पढ़ रहा था। गूगल पर पहली बार सनी लियोनी और टेरा पैट्रिक के अलावा मीनिंग ऑफ लाइफ सर्च कर रहा था। आगे खुद ही समझ जाओ", मोहित ने बेज्जती करने की अपनी आदत से मजबूर होकर यूँही कहा।

"अबे ऐसा कुछ नहीं है। IIT का हर लड़का थ्री इडियट्स देख के या फिर फेल होने से फ्रस्टेट होकर जिंदगी के असल मायने नहीं खोजा करता। जो बात वाजिब है वो वाजिब रहेगी। जैसे इस केस में, ये नई सरकार आने के बाद से देश में बकचोदी बढ़ी तो है।"

"क्या बकचोदी बढ़ी है पांडे?"

"अच्छा। बढ़ी नहीं है? कलबुर्गीया को पेल दिए बेचारे को। सब रायटर-एक्टर लोग पे बैन लग रहा है। ये साले गौ-गोबर-गूमूत्र का रायता अलग फैलाए हुए हैं।"

"हाँ तो कोई आज की बात नहीं है पंडित। इधर पहले भी तमाम चूतिये थे, आज भी हैं और आगे भी रहेंगे। उसमें इतना हाय-तौबा करने की क्या जरूरत है!" प्रसाद ने कहा।

"हाँ इसीलिए गालिब ने भी कहा है। चूतियन की कमी नहीं गालिब। एक ढूंढो हजार मिलते हैं", मोहित ने कहा।

"ये गालिब ने नहीं कहा है। व्हाट्सऐप पे आने वाली हर बकचोदी सच नहीं होती। ये तुम्हारे जैसे लोग ही अपनी कही हर फुद्दू-सी बात गालिब और हरिवंश राय बच्चन के नाम से चेंपते फिरते हैं", पांडे भिड़ गया।

"यार तुम लोग झगड़ा मत करो। तुम लोग को नहीं आना तो मत आओ। और पांडे तुम भी तब ही चलो जब तुमको लगे कि उधर जाना जरूरी है", मैंने कहा।

"हमको मीट खाने का मन कर रहा है। पांडे तुम क्रांति करो हम बकरा खाने घर जा रहे हैं", मोहित ने कहा।

"हमको सू-सू आ रही है। पांडे तुम क्रांति करो हम सू-सू करने जा रहे हैं", प्रसाद ने कहा।

"हाँ तुम दोनों जाओ हम बिना मंजन किए चाय पी लिए। जा रहे हैं बुरुश करने", अखिल ने कहा।

"मुझे याद तो नहीं है कि मुझे क्या काम है लेकिन मुझे ऐसा लग रहा है कि मुझे भी

More Books - www.The-Gyan.in

जरूर कोई-न-कोई काम होगा, इसलिए मैं भी जा रहा हूँ", विवेक ने कहा।

बचे मैं और पांडे। और हम दोनों लंका गेट के लिए निकल गए। लंका गेट पर सैकड़ों लोग जमा थे। इन्हें चार तरह के लोगों में बाँटा जा सकता था— एक वे, जो लंका गेट पर मात्र इसलिए आ गए थे क्योंकि उनका खून ठेठ बनारसी था। एक ठेठ बनारसी आदमी दिन भर अपनी दुकान और घर-दुआर छोड़कर तमाम देर सड़क पर सिर्फ इसलिए खड़ा रह सकता है कि वहाँ सरकारी नाला खुद रहा है और उसे सरकारी नाले के काम की तरक्की का मुआयना करना है। दूसरे वे, जो लंका गेट पर इसलिए आए थे क्योंकि उन्होंने सुन रखा था कि IIT की लड़कियाँ बहुत ओपेन और फ्रैंक होती हैं, हाफ पैंट पहनती हैं और दोस्ती करने में हिचकिचाती नहीं हैं। तीसरे वे, जिन्हें इस डिबेट से सच में सरोकार था और वे समझते भी थे कि इन-टॉलरेंस कौन चिड़िया का नाम है। चौथे वे, जिन्हें इस डिबेट से सरोकार तो था पर वो इन-टॉलरेंस को उतना ही समझते थे जितना एक आम बनारसी ग्लोबल वार्मिंग जैसे विषय को समझता है।

श्रद्धा सिंह तखत पर खड़ी थी और धाराप्रवाह भाषण दे रही थी। उम्मीद के मुताबिक उसने इस बहस के भीतर से टॉलरेंस-इन-टॉलरेंस की डिबेट को हाइजैक करके इसे एक और फेमिनिस्ट मुद्दा बना दिया था। फिर भी लंका गेट पर जमा आधे बनारसी उसे एक टक सुन रहे थे क्योंकि श्रद्धा सिंह ने हाफ पैंट पहन रखी थी—

"क्या इस नई सरकार के आने के बाद से इन टॉलरेंस नहीं बढ़ गया है? आप ही बताइए? क्या आज की तारीख में एक लड़की रात में अकेले निकल सकती है? क्या वो अपने-आप को सुरक्षित महसूस कर सकती है? क्या एक लड़की अपनी मर्जी के कपड़े पहन सकती है? मिनी स्कर्ट पहन कर बाहर निकल सकती है? हाफ पैंट पहनकर बाहर निकल सकती है? या चलिए हाफ पैंट की बात छोड़ दीजिए, वो तो आज इत्तफाक की बात है कि मैंने हाफ पैंट पहना हुआ है, पर क्या आज के वक्त में एक लड़की अपनी इच्छा से लड़कों के साथ पब में जा सकती है, सिगरेट पी सकती है?"

"बिलकुल जा सकती है। काहे नहीं जा सकती! चलो अबहिएँ लिए चलते हैं तुमको येल्चिको बार में। जादे हाई-फाई जगह चलना हो तो न्यू डिलाइट चल लेओ", भीड़ में से आवाज आई।

"सिगरेट बिलकुल पी सकती हैं। सिगरेट क्या तुम कहो तो हम तुमको बीड़ी पिला दें। इच्छा हो तो खइनी खा लो। कमला पसंद, बिमल, राजश्री, पान बहार, तुलसी, गोआ, मानिकचंद, जो बोलो अबहिएँ ले आ दें", भीड़ में से एक और आवाज आई।

मौके की नजाकत समझते हुए फोर्थ इयर के लड़कों ने श्रद्धा सिंह को नीचे उतार लिया और स्पीकर तेज चढ़ाकर तीन-चार, पंद्रह अगस्त वाले गाने चला दिया गए। देशभक्ति के

More Books - www.The-Gyan.in

चित्रहार ने जब तक माहौल संभाला तब तक घनश्याम सरन सिंह को तखत पर चढ़ा दिया गया। घनश्याम मिर्जापुर से था, कम्युनिस्ट था, सर से पाँव तक क्रांतिकारी था और देश-दुनिया का DNA सर से पूँछ तक पकड़कर पढ़ता-समझता था। मार्क्स और लेनिन की बात हिंदी, भोजपुरी में समझाता था। मिर्जापुर और बनारस में आनन-फानन ही कनैक्शन बैठ गया और जनता बहस से जुड़ने लगी। समझने लगी। पांडे भी घनश्याम की बातों में बँधा जा रहा था।

"क्या सही बोलता है न ये घनश्याम", पांडे ने कबाड़ी से कहा।

"क्या खाक सही बोलता है! इहाँ तखत बिछा के, माइक पे चिल्ला के क्या उखाड़ लेगा? बहुत क्रांति फूट रही है भीतर, तो जाए जंगल-जंगल। बदल ले दुनिया। इहाँ गला फाड़ के क्या होगा पंडी जी! बनारसी आदमी तो है ही खलीफा। कुच्छो हो जाए, उसकी दुनिया टस-से-मस से न होगी, चाहे इ सरकार आए चाहे उ सरकार। टॉलरेंस कि न-टॉलरेंस। 1999 के बाद जब नया साल लगा तो दुनिया भर में खूब हल्ला हुआ कि साला नया मिलेनियम आ गया। आमिर खान का गाना भी आया, 'देखो 2000 जमाना आ गया, मिल के जीने का बहाना आ गया, बच के रहना, दीवाना हूँ मैं, ऊह ऊह।' दुनिया भर में दे धकापेल खलबली हुई लेकिन बनारस को झाँट अंतर नहीं पड़ा। तब भी रात में दो गोली फाँक के चौड़ में सोते थे और आज भी दो गोली फाँक के सोते हैं। गोली फाँक लेने के बाद दुनिया चाहे टॉलरेंट हो जाए या फिर इन-टॉलरेंट, आदमी को दिखते चाँद सितारे ही हैं। हसीन और सुंदर।"

"यार तुमको इस डिबेट से कोई मतलब नहीं है तो इधर काहे आए हो?"

"हम तो इसलिए आए हैं कहे से साइकिल पंचर हो गई थी। छोटे लाल की दुकान पर पड़ी है। नहीं तो हम घंटा न आएँ यहाँ। ऊ तो नजर रखनी पड़ती है छोटे लाल पर। नहीं तो पंचर होगा एक, बोलेगा पंचर थे छः ठो। सिलते-सिलते पूरा नए टायर का चमड़ा लगा दिए। इतना बड़ा झूठा है कि क्या पता ये भी बोल दे कि टायर भी कम पड़ गया था तो अपनी खाल निकाल के छेद बंद किए हैं।"

"हाँ तो जाओ न, इधर काहे बैठे हो?"

"तुमको बहुत सरोकार है डिबेट से?"

"हाँ है।"

"घंटा सरोकार है। तुम पक्का अंतरी को ताड़ने आए होगे।"

"अंतरी आई है?"

"और नहीं तो ये भीड़ काहे जुटी है। वो देखो उधर बैठी है।"

"हाँ तो बैठी रहने दो। हम यहाँ डिबेट के लिए ही आए थे।"

More Books - www.The-Gyan.in

"भाक साले लौंडियाबाज!"

"बकवास मत करो। और जाओ तुम पंचर बनवाने। हमको डिबेट करने दो!"

"हाँ तो जाओ चढ़ जाओ तखत पे। कुछ तुम्हारे बिचार भी सुने जाएँ पंडित!"

"हाँ तो चढ़ जाएँगे। उसमें ऐसा भी क्या है। श्रद्धा सिंह से तो बढ़िया ही बोलेंगे।"

"हाँ तो चढ़ो न! हमारे हाथ में हमारी खैनी की पुड़िया है तुम्हारे गोटे नहीं।"

"हाँ जा रहे हैं।"

पांडे आनन-फानन में, गुस्से में तमतमाता हुआ तखत पर चढ़ गया। वह तखत पर कुछ यूँ चढ़ा जैसे किसी को बुखार चढ़ता है। जैसे घोड़ी पर दूल्हा परेशान चढ़ता है। जैसे किसी सनकी आदमी के दिमाग को कोई खयाल चढ़ता है। और उसके बाद जो हुआ वो बनारस के दिमाग पर छप जाने लायक करतब था। पांडे यूँ बोला जैसे कोई उभरता हुआ छात्र नेता मंच पर किसी विधायक या मंत्री को विराजमान देख ले और वो बउरा के भाषण पेलने लगे।

पांडे जब तखत से नीचे उतरा तो जैसे आधे बनारस के तोते उड़ चुके थे। काटो तो खून नहीं। हैरान श्रद्धा सिंह की हालत उस लड़की जैसी हो रही थी जिसकी खुद की शादी में कोई दूसरी लड़की उसके लहंगे से भी सुंदर लहंगा पहन कर आ गई हो। कबाड़ी भी यूँ भौंचक्का था कि भूल गया था कि उसे छोटे लाल की दुकान पर ये चेक करने जाना था कि ट्यूब में असल में कितने छेद निकले हैं। अंतरी पांडे को देखकर मुस्कुरा रही थी और हौले-हौले तालियाँ बजा रही थी। घनश्याम सरन बेहद खुश था। उसकी उम्मीद से एकदम अलग, कोई तो था जो टॉलरेंस, इन-टॉलरेंस की इस बहस को समझ पा रहा था।

"अच्छा बोले कॉमरेड। दिल खुश कर दिया तुमने", घनश्याम ने कहा।

"थैंक यू", पांडे ने कहा।

"अब तक कहाँ थे तुम भाई?"

"आज ही पता चला कि ऐसा कुछ डिबेट चल रहा है।"

"डिबेट मत कहो। आंदोलन कहो।"

"हाँ! सॉरी! आंदोलन।"

"साथ लड़ोगे?"

"हाँ बिलकुल!"

"बढ़िया। बहुत कम लोग हैं यहाँ जो इस बात की आत्मा को समझते हैं। बाकी सब तो फैशन में उठकर चले आए हैं। सेल्फी लेने के लिए। थ्रिल के लिए। क्रांति-क्रांति खेलने के लिए। फेसबुक-ट्विटर पर हैशटैग-हैशटैग खेलने के लिए। वो ये नहीं समझते कि हम एक

More Books - www.The-Gyan.in

बड़े इंस्टिट्यूट का हिस्सा हैं। अगर ढंग से कहें तो लोग हमारी बात सुनेंगे।"

"अच्छा बोले पांडे", मैंने कहा।

"तुम बोलोगे?" घनश्याम ने पूछा।

"हाँ सोचकर तो यही आया था।"

"तो चढ़ो गुरु, देर किस बात की है?"

मैं तखत पर चढ़ गया और फिर दिल खोलकर तबियत से, तमाम देर बोल गया।

"मेरा किसी एक चुनावी पार्टी या फिर किसी व्यक्ति विशेष से जवाबदेही माँगने के लिए नहीं आया हूँ। क्योंकि आज की तारीख में उससे अधिक फालतू की बहस संभव ही नहीं है। मुझे मालूम है कि आजकल जब मेरे और आपके फेवरिट नेता या पार्टी पर उँगली उठती है तो हम सब लोग बिलबिला जाते हैं और अपने-अपने तर्क-कुतर्क के पैने हथियार निकालकर पिल पड़ते है। तर्क में हार जाएँ तो ऐसे तिलमिला जाते हैं जैसे किसी कॉकरोच को पलटकर औंधा गिरा दिया हो और वो पेट के बल सीधा होने के लिए छटपटा रहा हो। इसलिए मैं किसी नेता या चुनावी पार्टी का बात नहीं करूँगा। मेरे दोस्त! मैं, मेरी और तुम्हारी बात करना चाहता हूँ। तुम्हारे बगल में खड़ा होकर आईने में झाँकना चाहता हूँ।

मेरे और तुम्हारे पड़ोसी और उनके दोस्तों की बात करना चाहता हूँ। उनकी, जिन्हें पहले राजनीति से कोई मतलब-सरोकार नहीं था। और जो आज इसके नाम पर लड़ने-भिड़ने को तैयार हैं। उनकी बात करना चाहता हूँ जो एक पढ़े-लिखे तबके से ताल्लुक रखते हैं लेकिन अब सिर्फ 'भक्त' रह गए हैं।

मैं उन सबकी, आपकी और मेरी बात इसलिए करना चाहता हूँ, क्योंकि मुझे चुनावी पार्टियों से कहीं अधिक आपसे मतलब है। चुनावी पार्टी का तो काम ही होता है आपको गुमराह करना, उकसाना और अपने दिखाए रस्ते परेड करवाना। वे हमेशा से यही करते आए हैं और आगे भी यही करेंगे। लेकिन मुझे किसी नेता या पार्टी से उतना डर नहीं लगता जितना कि विवेक और लॉजिक खोकर भक्त होती जा रही भीड़ से लगता है।

आपको और मुझे बेवजह बेइंतहा मूर्ख फैन होने की संभावना से सबसे अधिक खतरा है। फैनाटिक होने से खतरा है। ऐसा फैन मत बनिए। इस तरह का फैन एक दिन गुंडा बन जाता है और उसे पता भी नहीं चलता। फैन भावुक होता है। तर्क नहीं करता। अपने आइडल की हरेक बात को सच मान लेता है। ऑफेंड होने को अपना नेशनल स्पोर्ट बना लेता है। भक्त खाली काला और सफेद तय करते हैं और उन्हें बाकी के वो सारे रंग दिखना बंद हो जाते हैं जो बहुत खूबसूरत हैं। हरे, नीले, पीले, बैंगनी, नारंगी जैसे रंग। भक्त और फैन खाली पाले चुनते हैं। उनके लिए दुनिया बस दो हिस्सों में बँटी होती है। एक वो जो उनके भगवान की तरफ है और एक वो जो उसके दूसरी तरफ है।"

More Books - www.The-Gyan.in

मैं अपनी बात कहकर नीचे उतर आया। घनश्याम का चेहरा खुशी से खिल रहा था। वह मुझसे गले मिला।

More Books - www.The-Gyan.in

अखबार, हैशटैग, गाइड और आरडीबी

बचपन में दीवाली के पटाखों में एक साँप वाली टिकिया होती थी। जिसे माचिस छुआ दो तो वो भरभराकर जलने लगती थी और साँप की तरह खुलने लगती थी। सब जानते थे कि वो साँप नहीं है लेकिन उसे साँप कहकर जलाने में बड़ा मजा आता था। मुहल्ले भर के लड़के उसे घेरकर खड़े होते थे और उसे बड़ा होते देख तब तक तालियाँ बजाते थे जब तक कि साँप खुलकर, जलकर, छुरछुराकर भस्म नहीं हो जाता था।

यह छोटी-सी डिबेट बनारस में उसी साँप की टिकिया की तरह खुली और जली। कल तलक जो एक छोटी सी डिबेट थी वो प्रोटेस्ट हो गई और अगले दिन कुछ एक अखबारों की सुर्खियों में थी। छोटे बनारसी अखबारों में बड़ी सुर्खी की तरह और इक्का-दुक्का बड़े अखबारों में छोटी-सी सुर्खी की तरह।

यह अलग बात है कि IIT BHU में राजपूताना हॉस्टल के 16 नंबर कमरे में, मेरी, हमारे प्रोटेस्ट की और पांडे की साख और इज्जत अभी तो कुल जमा कौड़ी भर की ही थी। प्रोटेस्ट को मिलने वाले रसूख से हम उत्साहित थे, लेकिन हमारे लाख मनाने पर भी प्रसाद, मोहित और बाकी लोग हमारे साथ प्रोटेस्ट का हिस्सा बनने के लिए तैयार नहीं थे। हम ताश की बाजी के बीच 16 नंबर के बाशिंदों को आज प्रोटेस्ट में चलने के लिए तैयार कर रहे थे लेकिन बात वहीं की वहीं थी।

“भगवान जाने क्या क्रांति करने में लगे हैं! जब से अखबार में नाम निकल आया है तब से खुद को बड़का भारी क्रांतिकारी समझने लगे है”, मोहित ने कहा।

“देश में टॉलरेंस का सबसे बड़ा सबूत ये है कि निशंतवा और पांडे जैसे गदहे को आज इतनी इज्जत मिल गई है। न जाने क्या बक आए हैं कि सोशल मीडिया पर हीरो बने हुए हैं महराज। इस देश में इन दोनों गदहों को बर्दाश्त किए हुए हैं तो और क्या बर्दाश्त करना बाकी रह गया है! टॉलरेंस का इससे बड़ा सबूत क्या होगा? कुछ इनटॉलरेंस नहीं है देश में”, प्रसाद ने कहा।

“लेकिन पांडे लगता तो काफी सीरियस है”, मोहित ने कहा।

“हो तो रहे मेरी बला से। तुरुप क्या थी?” प्रसाद ने पत्ता फेंका।

More Books - www.The-Gyan.in

"हुकुम।"

"अबे भोसड़ी के झूठ मत बोलो। तुरुप तुम चिड़ी बोले थे न!"

"चिड़ी नहीं हुकुम ही बोले थे।"

"अभी धर देंगे। दिमाग मत खाओ साले हर बार बेमानी!"

"मी लार्ड, आई रेस्ट माय केस! देखो! कितना इनटॉलरेंस बढ़ गया है देश में!" मैंने मोहित और प्रसाद की बाजी को काटते हुए कहा।

"हाँ तो बढ़ गया होगा। अब डाल लो इनटॉलरेंस अपने पीछे। तुरुप चिड़ी ही रहेगी", प्रसाद ने कहा।

"अच्छा ठीक है। कितने हाथ बन गए?" मैंने पूछा।

"आठ। तुम्हारे?"

"छह। अच्छा आज तुम लोग भी चल लो न प्रोटेस्ट में", मैंने फिर कोशिश की।

"अबे चुप करके पत्ते खेलो न! ये सब फालतूगिरी के काम हमसे नहीं होते हैं", प्रसाद बोला।

"जरूरी नहीं है कि जो तुमको ठीक न लगे वो फालतू काम है। धीरे-धीरे सारे IIT इसमें लग गए है। कुछ वजह होगी इसलिए जुट रहे होंगे न!" मैंने कहा।

"हाँ तो तुम जाओ न। हमको काहे लिए जा रहे हो?"

"आज अखबार में था कि कल IIT दिल्ली और बॉम्बे में भी बड़ा प्रोटेस्ट हुआ है। उधर तो मीडिया भी पहुँच गया है कवर करने के लिए।"

"हाँ तो फिर तो तुम TV पे भी आ जाना। लेकिन ये गेम खतम किए बिना नहीं जा सकते। चुपचाप गेम खेलो और फिर TV पे जाके बताना कि प्रसाद ने आज ताश के चार गेम हराए।"

"अबे शुभ्रा का फोन आ रहा है। रुको न दस मिनट में आते हैं बात करके।"

"अबे यार तुम हमेशा गेम के बीच में अपना फोन लेके चल दोगे। अभी प्रोटेस्ट पे जाना था इनको। अब हो गया तुम्हारा प्रोटेस्ट!"

"यार बस आ रहा हूँ। पत्ते मत देखना।"

"यही तो प्रॉब्लम है देश के यूथ का। क्रांति सबको करनी है लेकिन सब काम-धंधे निपटाने के बाद फुर्सत में। अब दुबारा पत्ते खेलने मत आ जाना तुम", प्रसाद चीखा लेकिन उसके बात खतम होने से ही मैं सीढ़ियों की ओर भागा।

"जल्दी नीचे आओ", शुभ्रा ने फोन पर लगभग फरमान-सा जारी किया।

More Books - www.The-Gyan.in

"क्या हुआ?" मैंने समझने की कोशिश की।

"मैंने कहा न, तुरंत नीचे आओ!"

"अच्छा बाबा आता हूँ", मैंने कहा और मैं आनन-फानन में नीचे पहुँचा तो शुभ्रा स्कूटी पर चार-पाँच अखबारों की गड्डी लेकर हॉस्टल के नीचे मेरा इंतजार कर रही थी।

"डफर लड़के। हर अखबार में तुम लोग का फोटो आया है। वाइस चांसलर पवन कुमार मिश्रा ने चिढ़कर वार्निंग इश्यू कर दी कि तुम लोग ये सब करके यूनिवर्सटी की छवि खराब कर रहे हो और फौरन ये प्रोटेस्ट-वोटेस्ट बंद कर दो नहीं तो तुम्हें रस्टीकेट कर दिया जाएगा।"

"किस बात की छवि खराब! हमने ऐसा क्या कह दिया है! देखो अखबारों ने इतनी तारीफ लिखी है हमारी।"

"मुझे कुछ नहीं पता तुम बस बंद करो ये सब। अब से तुम ये प्रोटेस्ट-वोटेस्ट पर नहीं जाओगे", शुभ्रा कहते-कहते रोने लगी।

"अरे बाबा तुम रोने क्यों लगी? अरे बस! रोते नहीं। कुछ नहीं हुआ है।"

"मुझे नहीं मालूम यार! डर लगता है तुम्हारे लिए। तुमको कुछ हो गया तो? तुमको कॉलेज से निकाल दिए तो? एक तो वैसे ही तुम कितने साल में पास होगे उसका ठिकाना नहीं है। आई लव यू, यू इडियट! अगर तुमको कुछ हो गया तो देख लेना!"

"क्या कहा तुमने? फिर से बोलो?" मैं चहक रहा था। लगभग खिलखिला रहा था। दो पैर पर कूद रहा था। फुदक रहा था। मैं ये भूल गया था कि वह रो रही थी।

"मैं रो रही हूँ और तुम हँस रहे हो!" उसने मेरे कंधे पर जोर से मुक्का मारा।

"हाहा! और नहीं तो क्या! यू सेड आई लव यू!"

"कुछ नहीं कहा मैंने। भाड़ में जाओ।"

"साफ-साफ सुना मैंने। बड़ा 'आ', बड़ी 'ई' 'ल', 'ल' के ऊपर 'व', 'य' और 'य' के ऊपर बड़ा ऊ'। आई लव यू कहा तुमने", मैंने नब्बे के दशक के फिल्मी हीरो की तरह खुशी में अखबार हवा में उड़ाकर बिखेर दिए। "शुभ्रा लव्स निशांत", मैं जोर से चिल्लाया।

"एक मारूँगी अगर ड्रामा करोगे तो! बंदर कहीं के!"

"मार ही लो माई लार्ड, जान ले लो। बट आई हर्ड यू, यू क्लियरली सेड, आई लव यू", मैं अभी तक कूद रहा था।

"इश! कैसे बंदर आदमी से पाला पड़ गया है, मैंने कुछ नहीं कहा है। तुमने खुद से अपने मन से वो सुन लिया जो तुम सुनना चाहते हो", शुभ्रा अब नहीं रो रही थी। उसके गाल

More Books - www.The-Gyan.in

गुलाबी हो रहे थे। थोड़ा शर्म से सफेद, थोड़ा गुस्से से लाल। सफेद और लाल घुलकर गुलाबी।

"आई लव यू टू!"

"व्हाट आई लव यू टू! जब मैंने आई लव यू कहा ही नहीं। अजीब जबरदस्ती है!"

"अच्छा आई प्रॉमिस हम लोग ऐसा कुछ नहीं करेंगे कि रस्टीकेट हो जाएँ। मैं पढ़ना भी शुरू कर दूँगा। बस एक बार दुबारा कह दो न। प्लीज", मैंने घुटनों पर कहा।

"आई लव यू", उसने कहा और वह शरमाकर अपनी स्कूटी स्टार्ट करके फरार-सी हो गई।

'आई लव यू' उसने एक बार ही कहा था, लेकिन मैंने उसे बार-बार अपने दिमाग में इको होते हुए सुना। मैं उसे नाइंटीज की किसी ऑडियो कैसेट की तरह रिवाइंड, फॉरवर्ड और प्ले कर सकता था।

***

अगले दो-तीन दिनों में डिबेट में कुछ नए लोग जुड़े और कुछ पुराने लोग पीछे हो लिए। बहरहाल जोड़-घटाव के बाद भी डिबेट का कद कुछ एक फुट और बढ़ गया था। पांडे ने हाथ खींच लिए थे क्योंकि करेली, अलाहाबाद में उसके पिताजी ने पांडे की फोटो अखबार में देख ली और वो शिवगंगा एक्सप्रेस में बैठकर सीधे यूनिवर्सिटी पहुँच गए। देखने लायक नजारा था। इस उमर में दोस्त को बाप से पिटते देखना दुःख भी देता है लेकिन इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि मजा भी बहुत देता है।

घनश्याम ने बाकी फैकल्टी के लोगों को भी कारवाँ में जोड़ लिया। हालाँकि मैं इस बात से खुश नहीं था। कबाड़ी ने मुझे साफ आगाह किया था कि बिड़ला, रुइया और ब्रोचा हॉस्टल के लड़के आवारागर्द होते हैं और वे यूनिवर्सिटी में बस पॉलिटिक्स फैलाते फिरते हैं। घनश्याम फिर भी इस बात का सपोर्ट करता था क्योंकि वह कहता था कि हम इस डिबेट को पॉलिटिक्स से अलग करके नहीं देख सकते, जैसे ही कोई बात जनता के हक के लिए कही जाती है और जनता के द्वारा कही जाती है, वो उसी क्षण पॉलिटिक्स का हिस्सा हो जाती है।

घनश्याम पॉलिटिक्स को बुरे अर्थ में नहीं देखता था, पर मैं उससे दूर ही रहा। बिड़ला, रुइया और ब्रोचा के लड़के चाहते थे कि हम अंसारी, जो कि सुंदरपुर से विधायक रह चुका था, उसे भी इस डिबेट से जोड़ लेते और यह अपने-आप में एक बड़ी बात होती। लेकिन मेरी जिद पर अंसारी इसका हिस्सा नहीं बना। मेरा मानना था कि यह यूनिवर्सिटी के लड़कों की बात थी और कोई MLA आकर इसका झंडाबरदार नहीं बनेगा। अंसारी का आने से हम वाइस चांसलर पवन कुमार मिश्रा के कोपभाजन भी बनते।

More Books - www.The-Gyan.in

हालाँकि फिर भी अंसारी और उसके लड़के अगले कुछ दिनों तक बिन बुलाए इसका हिस्सा हो गए और वाइस चांसलर ने इस बात से चिढ़कर लंका गेट पर प्रॉक्टर तैनात कर दिया। अब तलक जो शांतिपूर्ण तरीके से चल रहा था वो एक बेलगाम छात्र आंदोलन जैसा नजर आने लगा। एक दिन लंका गेट जाम हो जाने की वजह से वाइस चांसलर पवन कुमार मिश्रा ने चिढ़कर चीफ प्रॉक्टर और लंका पुलिस थाना को फोन घनघना दिया। पुलिस तमाम देर तक लड़कों को लंका गेट खाली करने के लिए समझाती रही पर लड़के टस-से-मस नहीं हुए। सुनने में यह भी आया कि अंसारी के किसी एक लड़के ने प्रॉक्टर को धक्का दे दिया, कुछ एक लड़कों ने पत्थर भी चला दिए। इधर बीच रिंकू और उसके दोस्त पास ही में पहलवान के यहाँ लस्सी पी रहे थे और उन्होंने IIT के लड़कों को परेशानी में देखकर हाथ भाँज दिए।

भीड़ में ये सब कुछ इतनी जल्दी हुआ कि समझ नहीं आ रहा था कि भगदड़ क्यों हो गई है। जब तक मैं और घनश्याम उसे रोकने की कोशिश करते मेरे सिर पर प्रॉक्टर की लाठी बज चुकी थी। या शायद पत्थर ही रहा होगा और मैं जब उठा तो सर सुंदरलाल अस्पताल के वार्ड में था।

***

कुछ घंटों के बाद जब मुझे होश आया तो सभी दोस्त मुझे घेरकर बैठे थे। मैं धीरे-धीरे यह समझने की कोशिश कर रहा था कि मैं लंका गेट से सुंदरलाल अस्पताल कैसे पहुँच गया।

"याददाश्त तो नहीं चली गई न। अब यह मत बोलना कि मैं कौन हूँ, मैं कहाँ हूँ", प्रसाद ने गुस्से में कहा। "साले तुम्हारे क्रांति-क्रांति के ड्रामा के चक्कर में क्या बवासीर हो गया है तुमको आइडिया भी है?"

"बढ़िया हुआ साला, लाठी खाया", मोहित ने कहा।

"अब अकल तो आएगी कम-से-कम। बहुत क्रांतिकारी बने फिर रहे थे", प्रसाद ने कहा,

"ज्यादा तो नहीं लग गई", पांडे ने पूछा।

"लग गई हो तभी बढ़िया है। हम तो कह रहे हैं कि लाठी ढंग से घली होती और याददाश्त चली जाती इनकी तो बला टलती!" प्रसाद ने कहा।

"उसकी याददाश्त चली भी गई न तो हम मार लप्पड़ वापस ले आएँगे उसकी याददाश्त। मेरा पूरा पैसा नहीं लौटाया है अभी तक। उस दिन चाय की दुकान पे 100 रुपया दिया था उसके बाद साला पाँच सौ वापस उधारी ले लिया है", मोहित ने कहा।

"अबे मेरा सेलो ग्रिपर का पेन लिया हुआ है", पांडे ने कहा।

"अबे दस रुपया के पेन के लिए रो रहे हो! मेरा पाँच सौ रुपया था!" मोहित ने कहा।

"अबे चंद्रकांता देखे हो?"

"अभी तुमको चंद्रकांता काहे याद आ रहा है?"

"अरे उसमें क्रूर सिंह रहता है न! उसका बात-बात पे याददाश्त जाता रहता है न! तो उसके सर पे वापस से उसके चेले पत्थर मारते हैं और उसकी याददाश्त वापस आ जाती है।"

"अबे हाँ। अंदाज अपना-अपना में भी यही होता है।"

"कैसे दोस्त हो बे तुम लोग! इतना तेज सर में दर्द हो रहा है। अबे कोई शुभ्रा को ही बुला दो", मैंने कहा।

"शुभ्रा आई थी। बहुत रो रही थी। अभी दवाई लेने गई हुई है। आएगी तो तुमको दस लप्पड़ जड़ेगी। साला परेशान कर दिए हो हमलोग को। तुम्हारा क्रांति का भूत उतार देगी। तुमको मालूम है तुम क्या कर दिए हो", प्रसाद ने कहा।

"क्या हो गया?"

"खबर फैल गई है कि पुलिस ने शांतिपूर्वक प्रदर्शन कर रहे IIT के छात्रों पर लाठीचार्ज कर दिया। वाइस चांसलर भयानक बौरा गया है कि तुम लोग नेतागीरी करके IIT BHU का नाम खराब कर रहे हो", प्रसाद ने कहा।

"ये सरउ चले थे रंग दे बसंती के आमिर खान बनने और बन गए पीपली लाइव के नत्था सिंह", मोहित ने कहा। "ये साला मरे तभी ठीक है।"

"अबे भोसड़ी के सेब संतरा ही ले आते! कम-से-कम पानी ही ले आते! कुछ लाए-वाए हो नहीं और उल्टा गरिया और रहे हो तुम लोग!" मैंने कहा।

"नत्था मरेगा। नत्था जरूर मरेगा", मोहित ने कहा।

"ये अखबार वालों के पास कुछ काम नहीं है क्या?" मैंने पूछा

"ये तुमको साले बकचोदी शुरू करने से पहले सोचना था न! जब नहीं था पीछे गूदा, तो क्यूँ लंका में कूदा!" मोहित ने कहा।

"अबे कुत्तो, कुछ अच्छा खाने को मँगा दो।"

"लाठी खाओगे? बुलाएँ प्रॉक्टर को?" प्रसाद ने कहा।

"यार तुम लोग कैसे दोस्त हो बे! यहाँ हमारा कपार फूट के खरबूजा हो गया है और तुम लोगों को दया भी नहीं आ रही है!"

"हैं? इतना बड़ा क्रांतिकारी खुद के ऊपर दया खाने की बात कर रहा है? कितने

More Books - www.The-Gyan.in

दुर्भाग्य की बात है!" मोहित ने कहा।

"मर जाओ सालो!" मैं सिर पकड़कर बैठ गया और तभी कबाड़ी और शुभ्रा कमरे में दाखिल हुए। शुभ्रा रो रही थी। कबाड़ी बहुत गुस्से में था।

"तुमको वाइस चांसलर ने रस्टीकेट कर दिया है", उसने कहा।

"हैं? क्यों भला? मैंने ऐसा क्या कर दिया?"

"अब किसी-न-किसी को तो बलि का बकरा बनाना था न! हम पहले ही तुम लोग को मना किए थे कि ई सब नेतागीरी में मत पड़ो तुम लोग। लेकिन तुम लोग हमारी बात सुनो तब न!"

"ए अब तुम ज्यादा नेतागीरी मत करो कबाड़ी! पहले जब एग्जाम में सबका अटेंडेंस शार्ट हो गया था तो तुम ही आगे बढ़के नेतागीरी करवाए थे सबसे। और अब निशंतवा बेचारा बेकार में फँस गया है तो तुम ऐसे ज्ञानी बन रहे हो जैसे तुमको सब पहले से पता ही था", प्रसाद कबाड़ी से भिड़ गया।

"हाँ तो उस वाले प्रोटेस्ट में भाइस चांसलर खउवा के सब चौपट कर दिया था इसीलिए हम इस बार तुम लोग को मना कर रहे थे। हमको पहिले से ही अंदेसा लग गया था कि मामला कुछ भी गड़बड़ा गया तो ऊ इज्जत पर ले लेगा। बुजरो के भाइस चांसलर को झूठ-मूठ का IIT BHU की शान का कीड़ा हमेशा से है। ई सब अखबार में आना ही नहीं चाहिए था", कबाड़ी ने झाड़ पिलाई।

"एक सेकेंड। हम जो किए हैं उसमें मेरी कोई गलती नहीं है। मैंने नहीं कहा था अखबार वालों से कि सब काम-धाम छोड़कर उसे इतना बड़ा मुद्दा बनाने आ जाओ। उसमें कॉन्सपिरेसी भी घुसा दो। मीडिया की गलती है तो इसमें मुझे क्यों दोषी बनाया जा रहा है। और गलती उन लड़कों की है जिन्होंने सैबोटाज किया और मार-पीट की। उन्हें पकड़ो। उनको रस्टीकेट करो", मैंने कहा।

***

आप जब किसी परेशानी में हों और इसके बाबत दोस्तों से कुछ कहें तो वे आमतौर पर आपकी बात को कान नहीं देते और कभी ये नहीं कहते कि सब ठीक हो जाएगा। जब वे ये कहने लग जाएँ कि सब ठीक हो जाएगा तो समझ लेना चाहिए कि शायद सब कुछ बहुत खराब हो चुका है। शायद कुछ ठीक नहीं होगा और कुछ तो बड़ी भारी आफत आने वाली है।

प्रसाद, पांडे, मोहित, अखिल, शुभ्रा सब बार-बार यही कह रहे थे। "सब ठीक हो जाएगा।" हमेशा की तरह गाली भी नहीं दे रहे थे। मैं समझ गया था कि मैं सचमुच

More Books - www.The-Gyan.in

इन्स्टीट्यूट से निकाला जा चुका हूँ। मेरे हाथ में वीसी ऑफिस से आया लेटर था जिसमें मेरा एक्सपल्शन छप आया था। शुभ्रा की गोल आँखों में बड़े गोल आँसू लेटर के सच होने की मुहर जैसे लग रहे थे।

पहले तो इन सबके सच होने पर भरोसा नहीं हो रहा था क्योंकि ये सब कुछ इतना अचानक हुआ, लेकिन राजपूताना हॉस्टल के बाहर खड़े-खड़े, दोस्तों को रिक्शे पर अपना सामान लादते देख सभी मुगालते साफ हो गए थे।

"चलो जब तक यहाँ का मैटर क्लियर नहीं हो जाता मेरे घर पर रुको। मम्मी से कह दिए हैं। उनको समझा दिया है कि तुम्हारा तबियत खराब है और हॉस्टल में देखभाल नहीं हो पा रहा है, इसलिए थोड़े दिन घर पर रहोगे", प्रसाद ने कहा।

"नहीं यार। घर पर नहीं रुकूँगा। थोड़े दिन लंका पर या अस्सी पर किसी सस्ते लॉज वगैरह में रह लूँगा। तुम लोग परेशान मत हो", मैंने कहा।

"अरे यार इसमें परेशानी की कोई बात नहीं है। चलो हम छोड़कर आते हैं। तब तक यहाँ हम लोग वीसी से बात करके सब सुलटा लेंगे", पांडे बोला।

"सर की चोट कैसी है? दवाई जरूर खा लेना", शुभ्रा ने गले लगा लिया।

"तुमको भी लगता है कि मैं बेवकूफी कर रहा था? ये साले तो मुझे गाली भी नहीं दे रहे और बात-बात पे सब ठीक होने की एक्टिंग कर रहे हैं। मुझे लग रहा है कि मैंने सचमुच सब गलत कर दिया", मैंने कहा।

"तुमने कुछ गलत नहीं किया। और मैं ये नहीं कहूँगी कि सब ठीक हो जाएगा। क्योंकि वो तो बस बात की बात होती है। मुझे बस ये जरूर पता है कि जब तक तुम BHU वापस नहीं आ जाते, मेरे लिए BHU, BHU नहीं रहेगा। और मैं इसके वापस BHU हो जाने तक चुप नहीं रहने वाली।"

"आई लव यू। मैंने कुछ गलत नहीं किया न?"

"नहीं। तुमने कुछ गलत नहीं किया। क्योंकि तुम बहुत ऑनेस्ट हो। अपनी हर बात बिना लाग लपेट के कहते हो। तुमने वही किया। हमेशा साफ बात कहते हो और तुम्हारा मन बहुत साफ है। इतना कि जब तुम मुझे पहली बार प्रपोज कर रहे थे तो तुमने बढ़ा-चढ़ाकर या घुमा-फिराकर कुछ नहीं कहा, बस यही कहा कि मैं तुमसे प्यार करता हूँ तो उसके पीछे कोई कारण नहीं है। बस प्यार हो गया, सो हो गया। हो सकता है कि कल को मुझे लगे कि ये इन्फैचुएशन था। पर अभी लगता है कि ये खालिस प्रेम है। निष्काम प्रेम। ऐसा कहा था तुमने। याद है?"

"हाँ याद है।"

More Books - www.The-Gyan.in

"तुम बहुत ऑनेस्ट हो। प्यारे हो। मैं तुमसे जिद करती थी कि तुम ये भी कह सकते हो कि शुभ्रा तुम बहुत सुंदर हो, इसलिए मैं तुमसे प्यार करता हूँ लेकिन फिर भी तुम कहते थे कि मैं तुम्हें प्यार करने का ये कोई कारण नहीं है। बल्कि तुम्हें प्यार करने का कोई कारण नहीं है। तुम कभी गलत मन से कुछ नहीं करते। मुझे पता है इधर भी तुमने कुछ गलत नहीं किया।"

"थैंक यू!"

"बस अपना ध्यान रखना। अभी भी सर पर गहरी चोट है।"

"हाँ! अब भर जाएगी।"

मैं रिक्शे पर बैठ गया। रिक्शा अपने चक्के से BHU की लंबाई नाप रहा था। मैं सारे साइन बोर्ड पढ़ रहा था। राजपूताना हॉस्टल, धनराजगिरी हॉस्टल, लिम्बडी हॉस्टल, रुइया, बिरला, ब्रोचा, भगवानदास, विश्वकर्मा हॉस्टल, सर सुंदरलाल अस्पताल। और आखिर में यूनिवर्सिटी का बोर्ड। काशी हिंदू विश्वविद्यालय। रिक्शा उसके भी बाहर निकल गया। रिक्शे के साथ मैं भी। यूनिवर्सिटी के बाहर।

More Books - www.The-Gyan.in

ओरायन, छोटा भालू, मोगरे के फूल और टिक-टैक-टो

वाइस चांसलर ऑफिस से घर पर फोन जा चुका था। बदले में घर से तमाम फोन मुझे आ चुके थे। एक बारगी हिम्मत नहीं हुई थी कि फोन उठाकर पापा से बात कर सकूँ। सोच रहा था कि पहले कहीं टिकने का बंदोबस्त कर लूँ फिर घर पर बात करूँगा। रिक्शे वाला अदद चिढ़ रहा था कि मैं उसे लंका और अस्सी घाट के बीच इधर-उधर भटका रहा हूँ। मुझे भी कहाँ पता था कि रिक्शा कहाँ रुकवा लूँ। "लिट्टी खाओगे?" मैंने उससे पूछा। "हाँ", उसने कहा और हम लंका से घाट के रास्ते एक दुकान पर रुक गए। घर से वापस फोन आया। मैंने हिम्मत करके फोन उठा लिया और रिक्शे वाला लिट्टी खाने लगा।

"पापा, आई एम सॉरी", इससे पहले कि पापा कुछ कहते, मैंने कहा।

"सब कुछ तो बर्बाद कर लिए तुम। अब सॉरी बोलकर क्या होगा बेटा", पापा ने कहा। उनकी आवाज में गुस्सा नहीं था। हताशा थी। वही हताशा जो गुस्से से अधिक खतरनाक होती है।

"मैं कुछ-न-कुछ कर लूँगा पापा", मैंने कहा।

"वाह! कुछ-न-कुछ! क्या कर लोगे— कुछ-न-कुछ?"

"पापा, इसमें मेरी गलती तो है नहीं। किसी और की गलती के लिए मुझे रस्टीकेट कर दिया गया। मैं तो बस शांति से प्रोटेस्ट कर रहा था", इस बार मैंने दृढ़ता से कहा।

"वाह! किसने कहा था प्रोटेस्ट करने के लिए? तुमको वहाँ पढ़ने के लिए भेजे थे या ये नेतागीरी करने के लिए। सर अलग फुड़वा के बैठे हो?", पापा ने कहा। अब उनकी आवाज में हताशा नहीं थी, गुस्सा था।

"पापा, इसमें मेरी कोई गलती नहीं है। मेरा प्रोटेस्ट करना भी गलत नहीं था। और मैं तो तब भी सॉरी बोल रहा हूँ।"

"सॉरी बोलकर एहसान कर रहे हो?"

"मैं कम-से-कम सॉरी कह तो रहा हूँ", मैंने मुस्कुराते हुए कहा।

More Books - www.The-Gyan.in

"क्या मतलब है तुम्हारा?"

"मतलब आपने तो कभी सॉरी नहीं कहा। कहने को तो आप भी तो सॉरी कह सकते थे!"

"अच्छा! और किस बात के लिए भला?"

"छोड़िए।"

"नहीं! बोलो!"

"आपको याद है मैं बचपन में कॉमिक्स बहत पढ़ता था। डोगा, नागराज, सुपर कमांडो ध्रुव, तौसी, अंगारा, बाँकेलाल। कितना शौक था मुझे! इतना कि एक बार मैंने खुद कॉमिक्स लिखी थी। अपने हाथ से तीस पेज पर चित्र बनाए थे। खाँचे में डायलाग भरे थे। एक सुपर हीरो बनाया था। खुद का। ज्वालापुत्र।"

"हाँ तो?"

"मैंने आपको वो कॉमिक्स पोस्ट करने के लिए दी थी। बाकायदे उस कॉमिक्स को लिफाफे में रखा। उस पर पता भी लिखा। संजय गुप्ता, राज कॉमिक्स, दरीबाकला दिल्ली। आपने कहा कि आपने संजय गुप्ता को कॉमिक्स भेज दी है। उसके बाद से मैं तमाम दिन संजय गुप्ता के जवाब का इंतजार करता रहा। कि वो मेरी कॉमिक्स छाप देगा। लेकिन उसका जवाब नहीं आया। मैं उसकी हर कॉमिक्स को पढ़ता तो मुझे लगता जैसे उसने मेरे सुपर हीरो का आइडिया चुरा लिया हो। और मुझे क्रेडिट भी नहीं दिया। कितना दुखी हो गया था मैं। रोया भी था। मैंने सोच लिया था कि मैं अब से कभी नहीं लिखूँगा।"

"इस सब बात का क्या मलतब है!"

"यही कि आप सॉरी बोल सकते थे।"

"किस बात के लिए?"

"आपने मुझसे झूठ कहा था कि आपने वो कॉमिक्स पोस्ट कर दी है। दो-तीन महीने बाद मुझे मेरी लिखी हुई कॉमिक्स आपकी अलमारी में मिली थी।"

"तो?"

"तो आप सॉरी कह सकते थे। आपने नहीं कहा। उस दिन मैंने अपना एक सपना खो दिया था। बच्चों के सपने यूँ तोड़े नहीं जाते हैं।"

"हाँ तो अच्छा किए थे जो तुम्हारी कॉमिक्स छुपा दिए थे। तुम्हारा फितूर तो शांत हुआ था कम-से-कम। तुम्हें कभी लिखना था, कभी जर्नलिस्ट बनना था तो कभी बच्चों को पढ़ाने का चस्का लगा था। अगर मेरा दबाव नहीं होता तो तुम IIT कभी नहीं पहुँच पाते। बस सपने देखते रह जाते।"

More Books - www.The-Gyan.in

"नहीं पहुँच पाता तो दुनिया तो नहीं खतम हो जाती पापा। मेरे हिस्से कोई और दुनिया होती। और आप लोग इस बात से इतना डरते क्यों हैं कि बच्चे सपने देखने लगेंगे तो वे भटक जाएँगे। इसीलिए वे सपने देखने लगें तो उन्हें डरा दो। कुछ भी नया करना चाहें तो उस नए रास्ते से ही डरा दो। मुझे अभी भी याद है कि बचपन में हम जब भी गाँव जाते थे तो दादी हमेशा कहती थी कि अंदर वाली अँधेरे कोठरी में मत जाना, वहाँ भूत है। हम कौतूहल से डरते-डरते कमरे के दरवाजे तक जाते थे और लौट आते थे। भूत के डर से। कुछ साल बाद, जब बड़े हो गए, तो एक दिन हिम्मत करके हम कमरे के अंदर चले गए तो पाया कि दादी वहाँ सब फल और मिठाई छुपाकर रखती थी क्योंकि हम शैतान थे और बाहर रखी मिठाइयाँ और फल खा जाते थे। अपने बच्चों को कुछ भी नया, सुंदर-सा, सपना देखने से डराना भी तो वैसा ही है। वहाँ मत जाना, वहाँ भूत है। पर पापा, अब मैं बिना जाए, बिना देखे, ये बात तो मानने से रहा कि अंदर वाली कोठरी में भूत है। हाँ ये ठीक बात है कि मैं IIT आकर दिन-रात पढ़ नहीं रहा था लेकिन ऐसा करके मैंने आपको निराश नहीं किया है। कोई अपराध नहीं किया है। यहाँ आकर मैंने जो सीखा है वो शायद मैं जिंदगी में कभी नहीं सीख पाता।"

"रस्टीकेट होकर? और भला क्या सीखा है तुमने?"

"मैंने सीखा है कि नए सपने देखने के लिए सुस्ता लेना बहुत जरूरी है। बिना सोए-सुस्ताए, हम सुनहरे सपने नहीं देख सकते पापा।"

"अरे ये क्या बोले जा रहा है, सुनो इधर। निशांत को समझाओ", पापा ने माँ को फोन थमा दिया।

"माँ, पापा से कहना नाराज न हों। अगर मैं उनका एक सपना पूरा कर सकता हूँ तो बाकी भी। IIT आना उनका सपना था। फिर भी दिन-रात, घंटों पढ़ता था कि मैं उधर पहुँच जाऊँ। और मैं उधर पहुँचा भी। मैं आप लोगों को निराश नहीं करूँगा। कुछ-न-कुछ जरूर कर लूँगा। आप अपना ध्यान रखना।"

***

मैं मुमुक्षु भवन में ठहर गया था। भैरव नाथ जी ने रहने के लिए एक कमरा दे दिया था। मैं कुछ दिनों के लिए बस छुप जाना चाहता था। जहाँ मुझे कोई खोज न पाए। जैसे बचपन में जब आइस-पाइस खेलते थे तो हम ऐसी जगह छुप जाते थे जहाँ खोजे जाना सबसे अधिक मुश्किल हो। मुमुक्षु भवन में आपको कौन खोज पाता! भैरव नाथ जी कहते थे कि यहाँ कोई नहीं आता। यमराज भी नहीं आते। यहीं रह जाओ।

दोस्त फोन करते थे तो मैं कहता था कि मैं ठीक हूँ। शुभ्रा फोन करती थी तो उसे भी

More Books - www.The-Gyan.in

यही कहता था कि मैं एकदम ठीक हूँ। बस छुप गया हूँ। आ जाऊँगा। "तुम ईडियट हो। मुझसे मिलने अभी आओ नहीं तो मैं तुमसे कभी बात नहीं करूँगी", कहते हुए रोने लगती थी। "मैं कल जरूर आऊँगा", मैं कहता था। "आई लव यू", मैं हर बार कहता था। मिलना टाल जाता था। लेकिन शुभ्रा नहीं मानी। मैंने उसे ये नहीं बताया कि मैं मुमुक्षु भवन भवन में रुका हूँ और उसे घाट पर मिलने के लिए बुला लिया। वहाँ जहाँ हम पहली बार मिले थे। वहाँ जहाँ मैंने उसे पहली बार देखा था। गंगा जी में कंकड़ फेंकते हुए।

"एक बार भी मिलने नहीं आ सकते थे?"

"आ सकता था। लेकिन मैं बस छुप जाना चाहता था। ताकि खुद से बात कर सकूँ। सब से बात करते-करते हमें कभी खुद से बात करने का मौका ही नहीं मिलता?" मैंने हँसने की कोशिश की।

"एक बार ये भी तो सोचा होता कि तुम्हारे बिना मैं कैसी हूँ? तुम्हारे बगैर कुछ भी तो पहले जैसा नहीं है। आदत-सी हो गई थी, कि हॉस्टल से बाहर निकलूँगी तो गेट पर तुम खड़े होगे। मुस्कुरा रहे होगे। इतने प्यार से मुझे देख रहे होगे कि मैं शरमाकर जमीन देखने लगूँगी। तुम मजाक में कहोगी कि आपका सौ का नोट खो गया है क्या मैडम? और मैं कोशिश करूँगी कि ऊपर देखूँ, लेकिन देख ही नहीं पाऊँगी। जैसे पलकों पर मन भर बोझ हो। आँखें इतनी भारी हों कि उठ ही नहीं पाएँगी। अब भी हॉस्टल के बहार आती हूँ तो अचानक से आँख उठाकर नहीं देख पाती, डर लगता है कि तुम हुए तो? फिर सोचती हूँ कि तुम क्यों नहीं हो"

"निष्काम प्रेम हो गया तुमको भी", मैंने मजाक करने की कोशिश की और मैं हँसा।

"एक घूँसा खाओगे अभी यू ईडियट", शुभ्रा ने मुट्ठी दिखाई।

"बेघर आदमी को मारोगी? जिसके रहने-खाने का ठिकाना नहीं है। बड़ी ना-इंसाफी है", मैंने फिर भी मजाक करने को कोशिश की और शुभ्रा ने मेरे कंधे पर धौल जमाया।

"तुम जल्दी से हॉस्टल आ जाओ नहीं तो मैं तुम्हें छोड़ूँगी नहीं।"

"अब उम्मीद तो नहीं लग रही।"

"उम्मीद कैसे नहीं है। मैं रोज वाइस चांसलर के दफ्तर जा रही हूँ। पांडे, मोहित, प्रसाद, सब। कबाड़ी भी कोशिश कर रहा है कि किसी-न-किसी प्रोफेसर से कहलवा दे, जो वीसी के करीबी हो। कब तक नहीं मिलेगा! तुम परेशान मत होना।"

"मैं परेशान नहीं हूँ। पता नहीं क्यों। कभी-कभार तो गुस्सा आता है कि मैं परेशान क्यों नहीं हूँ। और मुझे बस यही अकेली बात परेशान कर रही है कि मैं परेशान क्यों नहीं हूँ। सच। मैं ऐसा कभी नहीं था। बल्कि मैं उन लोगों में था जो एग्जाम में एक नंबर का सवाल ही गलत

More Books - www.The-Gyan.in

कर दें तो उनको लगे कि अब शायद सब कुछ खतम हो जाएगा। भगवान से तुरंत मनाने लगता था कि बस इस बार मुझे इस मुसीबत से निकाल लो। कैसे भी। तमाम बार प्रार्थना करता था। और अब मुझे कॉलेज से निकाल दिया गया है तो भी मैं परेशान नहीं हूँ? मुझे बुरा लग रहा है तो बस इस बात का। मैं जब कॉलेज आया था तो तुम्हें मालूम है? मैं जब कॉलेज आया था तो 16 नंबर कमरे की तरफ जाता ही नहीं था क्योंकि वहाँ प्रसाद और मोहित रहते थे। जो पढ़ने-लिखने से कन्नी काटते थे। ताकि मैं उनके जैसा न हो जाऊँ। और अब? अब मुझे ऐसा लगता है जैसे कॉलेज, BHU कोई मजबूत गढ़ हो। किला हो। क्योंकि यहाँ दोस्त हैं। तुम हो। बनारस है। कबाड़ी हमेशा हँसकर कहता था— 'काहे से ई बनारस है महराज' – और हँसता था। पांडे कहता था – 'ये मउज वाली जगह है' – दोनों की बात कितनी सच निकली", मैं हँसा।

"तब फिर इसे गढ़ और किला ही समझ लो। जब तक हम लोग हैं तुम्हें कुछ नहीं होगा", शुभ्रा ने मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया।

"जानती हो? तुम्हारा हाथ थामना तुम्हारे हाथों से भी सुंदर है। ऐसा लगता है कि सिर्फ इसलिए क्योंकि तुम कह रही हो, सचमुच सब ठीक हो जाएगा", मैंने कहा।

"बिलकुल", शुभ्रा ने चहकते हुए कहा।

"तुम्हारा हाथ थामने से मुझे केदारनाथ सिंह की एक कविता याद आ जाती है। सुनोगी?"

"सुनाओ"

"उसका हाथ

अपने हाथ में लेते हुए मैंने सोचा

दुनिया को

हाथ की तरह गर्म और सुंदर होना चाहिए", मैं कविता सुनाकर उसकी आँखों में देखने लगा।

"और?"

"बस"

"बस इतनी ही"

"हाहा। हाँ"

"सॉरी मुझे ये कविता-अविता समझ नहीं आती", शुभ्रा ने शरमाते हुए कहा।

"हाँ पर तुम्हें हाथ पकड़ना तो आता है", मैंने कहा।

More Books - www.The-Gyan.in

***

यह शरद पूर्णिमा की रात थी, जब मैं सातवीं में था तो हिंदी के टीचर ने पढ़ाया था कि शरद पूर्णिमा की रात साल की सबसे खूबसूरत रात होती है। चाँद इतना सुंदर होता है कि तुलसीदास सीता जी के रूप को शरद के चाँद जैसा कहते थे। इत्तफाकन, ये तुलसीदास घाट था, जहाँ मैं नाव पर लेटा हुआ था। सोच रहा था कभी शायद वे भी यहीं ऐसे ही लेटे रहे होंगे। या शायद कलम दावत लेकर कागज पर कुछ लिख रहे होंगे। मैं आसमान में तारे देख रहा था। घाट की देहरी पर गंगा जी की लहरों की आवाजाही से नाव डोल रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे गंगा जी झूला झुला रही थीं। दो बार झपकी भी लग चुकी थी। मैं फिर उठ जाता था और आसमान ताकने लगता था।

इतना सुंदर, शांत और साफ आसमान आखिरी बार पता नहीं कब देखा था। नाव पर लेटे हुए, आसमान पढ़ते, चार घंटे बीत गए थे। सुबह होने को तीन-चार घंटे और थे। सोच रहा था कि आसमान देखना कितने सुकून की बात है। सोच रहा था या फिर यह बात रात के आसमान में तारों की इबारत से लिखी रही होगी, जिसे मैंने पढ़ लिया होगा। आसमान में और भी बहुत कुछ था। जैसे वह कोई मायावी, अय्यार रहा होगा। घड़ी-बड़ी कुछ नया बना-बिगाड़ रहा होगा। इच्छाधारी। कुछ देर पहले आसमान किसी सुंदर लड़की के जूड़े जैसा लग रहा था, जिसमें छोटे-छोटे, मोगरे के सफेद फूल, गूँथ लिए गए हों। थोड़ी देर बाद वो काली स्लेट जैसा लग रहा था जिसपे बच्चे सफेद खड़िया से कट्टम जीरो खेल रहे हों। तीन जीरो या तीन क्रॉस एक लाइन में मिल जाएँ तो खेल खतम, पैसा हजम। अगली बाजी सजा दी जाए।

अभी अचानक आसमान उस पहेली जैसा लगने लगा था जो बचपन में अखबार में आती थी। जिसमें अलग-अलग बिंदु बने होते थे और उस पर एक, दो, तीन, करके नंबर लिखे होते थे। सबको एक-एक करके जोड़ दो तो हाथी, जिराफ, मछली जैसा कुछ बन जाता था और पहेली हल हो जाती थी।

पता नहीं क्यों मैं यह नहीं सोच पा रहा था कि अब शायद मुझे IIT में दुबारा घुसने को भी नहीं मिलेगा। दुबारा सोलह नंबर नहीं जाऊँगा। इस बात की चिंता नहीं हो रही थी। हाँ बस यह जरूर दिमाग में आ रहा था कि शायद रोज शुभ्रा के हॉस्टल के बाहर खड़ा उसका इंतजार नहीं कर पाऊँगा। उसकी चिंता आ-जा रही थी। बार-बार दोस्तों के फोन भी आ रहे थे, लेकिन मैं उठा नहीं रहा था। सब कुछ इतना शांत था कि कोई और आवाज सुनने की इच्छा नहीं हो रही थी।

मैं सात तारों वाला सप्तर्षि खोज रहा था। मिल नहीं रहा था। बचपन में एक बार में मिल जाता था। छुटपन में तो ओरायन भी आसानी से दिख जाता था। आज नहीं दिख रहा

More Books - www.The-Gyan.in

था। छोटा वाला भालू, वर्गो, हरक्यूलिस, कहीं तो होंगे। उधर एरीज है क्या, मैं उँगली से तारे जोड़ते हुए खोज रहा था?

"कुछ मिल पाया?" एक आवाज आई। सफेद बाल, सफेद दाढ़ी और भगवा कपड़े में एक फिरंग हक से मेरी नाव पर चढ़ आया और मेरे बगल में बैठ गया।

"आप साफ हिंदी बोलते हैं, इंडिया के नहीं लगते", मैंने कौतूहल से पूछा।

"अमेरिकन हूँ। चौदह साल से बनारस में हूँ। हिंदी क्या संस्कृत भी खूब बोलता हूँ", कहते हुए उसने अपनी पोटली खोल ली। मिट्टी की चिलम, गाँजा, तंबाकू, माचिस, और सफेद कपड़ा निकालकर नाव पर सजा दिया।

"वापस नहीं गए?"

"न।"

"क्यों?"

"इच्छा नहीं हुई।"

"इधर क्यों आए?" मैंने सीधे पूछ ही लिया क्योंकि हैरानी हो रही थी।

"तुम इधर क्यों आए?" उसने पूछा।

"मतलब? मैं तो इधर का ही हूँ।"

"ये बजरा मेरा है। मैं रोज इस नाव पर ही सोता हूँ। तुमने मेरी सोने की जगह हथिया ली", उसने हँसते हुए प्रेम से कहा और चिलम में तंबाकू भरकर उसे ठोकने लगा।

"मैं बस यूँ ही। और कहीं जाने को नहीं था।"

"मैं भी बस यूँ ही। समझ लो मेरे पास भी और कहीं जाने को नहीं था", उसने फिर हँसते हुए प्रेमपूर्वक कहा।

"बताइए न?" मैंने आग्रह किया।

"मैं जो बताऊँगा वो सुनकर तुम उसे झूठ नहीं कहोगे?"

"नहीं।"

"वादा करना होगा।"

"जी किया। बताइए न!"

"ठीक है। तो सुनो फिर", वह मुस्कुराया और चिलम सुलगाने लगा। "चौदह साल पहले मैं एक कंपनी में वाइस प्रेसिडेंट हुआ करता था। तब बयालीस साल का रहा हूँगा। दिन, शाम, रात जी-तोड़ काम करता था ताकि एक दिन कंपनी में मुझे ग्लास चैम्बर वाला

More Books - www.The-Gyan.in

केबिन मिल जाए और खुद की पर्सनल सेक्रेटरी भी। इसी सपने का पीछा करते-करते एक रात, मेरा प्रमोशन हुआ था। उस रात के पहले तक डेप्यूटी वाइस प्रेसिडेंट हुआ करता था। बहुत खुश था, पार्टी कर रहा था क्योंकि सपना पूरा हुआ था। पार्टी में, यूँ ही बतकही में किसी ने बात छेड़ दी, कि सब दो मिनट आँख बंद करके सोचेंगे, और सबसे पहले दिमाग में आने वाला, पिछले कुछ सालों की अपनी जिंदगी का, सबसे मजेदार वाकिया बताना होगा।"

"फिर?"

"सबने गिलास रखकर दो मिनट के लिए आँखें मूँद लीं। दो से तीन और शायद तीन से चार मिनट भी हो गए होंगे। मैं आँखें नहीं खोल पाया। न ही ऑफिस में मेरे सीनियर। मेरे बॉस और उसके बॉस के बॉस भी", उसने कहा।

"क्यों?" मैंने और भी कौतूहल से पूछा।

"शायद बताने को कुछ था ही नहीं। हमारी मशीनी जिंदगी में मजेदार, या गौरतलब, या हैरतअंगेज कुछ हुआ ही नहीं था।"

"फिर?"

"फिर क्या? मैंने गिलास रखा। घर आया, सामान बाँधा और यहाँ चला आया"

"मतलब? ऐसे थोड़ी होता है!" मैंने अविश्वास में कहा। जैसे मैं कुछ और सुनना चाहता था और कहानी कुछ और निकली।

"तुमने वादा किया था?"

"क्या?"

"यही कि तुम मेरी बात को झूठ नहीं मानोगे।"

"हाँ, माफ कीजिए। पर?"

"मेरी कहानी बस इतनी ही है बरखुरदार। मैं नहीं चाहता था कि कि कल को जब कुछ और साल बीत जाएँ, मैं बूढ़ा हो जाऊँ, और मेरे बच्चे मुझसे कहें, कि दादा जी अपनी जिंदगी की कोई मजेदार कहानी सुनाइए न। तो मैं दो मिनट के लिए आँखें बंद करूँ और मेरे पास उन्हें सुनाने के लिए कुछ न हो।"

"हम्म। अब कुछ-कुछ समझा", मैं मुस्कुरा रहा था।

"तुम सुनाओ। कुछ मजेदार, कुछ गौर-तलब, कुछ हैरतअंगेज", वह मुस्कुरा रहा था और जोर से चिलम खींच रहा था।

"अभी सबसे हैरतअंगेज बात तो यही है कि मैं पिछले कई साल से जहाँ पहुँचने के लिए दिन-रात एक कर रहा था, पढ़ रहा था, उस कॉलेज से मुझे रस्टीकेट कर दिया गया।

More Books - www.The-Gyan.in

देश के सबसे अच्छी यूनिवर्सिटी से एक्सपेल कर दिया गया है। रहने के लिए छत नहीं है, कहाँ जाना है ये भी नहीं पता। यहाँ नाव पर पड़ा बार-बार झपकी ले रहा हूँ। सो-जग रहा हूँ। और ये सोच रहा हूँ कि अब क्या करूँगा, जिंदगी में क्या करना चाहता हूँ, ये भी।"

"हम्म। इसीलिए यहाँ लेटे-लेटे तारे देख रहे थे! देखो। ऐसे ही जवाब भी मिल जाएगा।"

"तारे देखने से?"

"हाँ। अपने चौदह साल का कुल जमा-जोड़ एक लाइन में बता रहा हूँ। रोज रात शांति से आसमान के नीचे लेटकर तारे देखा करो। जवाब मिल जाएगा। मैं रोज रात यहाँ, इसी जगह, इस नाव पर लेटकर जवाब खोजता हूँ। रात के तीन बजे आदमी कुछ और ही हो जाता है, जो वो दिन भर में नहीं होता, आदमी गर जो, रोज रात, खुले आसमान के नीचे लेटकर बस यूँ-ही आसमान पढ़ता-तकता रहे तो वो बिना कुछ किए ही शायद बेहतर इंसान हो जाए।"

"और जवाब मिल जाते हैं?"

"हाँ। तारे देखने में यही तो खास बात है"

"और जवाब है क्या?"

"सबका जवाब अलग है। जैसे मुझे वहाँ छोटा भालू दिख रहा है। तुम्हें शायद वो पतंग जैसा लग रहा हो। या शायद वो भी न लग रहा हो। हो सकता है वहाँ छोटा भालू हो भी नहीं। ये सब एक कोरी गप्प हो। या सच भी। मेरी जिंदगी का सच तुम्हारी जिंदगी के सच से अलग होगा। बस अपने हिसाब से खोज लो।"

"वो देखिए उधर ध्रुव तारा। मिल गया।"

"कहाँ?"

"अरे उधर। वो चार तारे हैं न, उनकी पूँछ के आखिर में।"

"वहाँ कहाँ?"

"हो सकता है आपका वाला ध्रुव तारा न हो, या कुछ और हो, या कुछ भी न हो", मैं हंसने लगा।

"अच्छा जी! तुम तो गुरु निकले महाराज!"

"हाहा!" मैं फिर से नाव पर लेट गया।

***

More Books - www.The-Gyan.in

भैरव नाथ जी, हमेशा की तरह बूढ़े बरगद के नीचे बैठे अहमद फराज की गजलें सुनते रहते थे। अगर आँखें नम हो जाती थीं तो पोंछ लेते थे। आते-जाते लोगों को देखा करते थे। जो आकर पास बैठ जाता था उसका हाल चाल कह— पूछ लेते थे। अरजी लगाने पर कोई कहानी सुना देते थे। बदले में फीस के तौर पर बगल की दुकान से स्पेशल चाय लेते थे।

एक बानबे साल के बूढ़े की कहानी सुना रहे थे जो शरीर नहीं छोड़ पा रहा था। या यह कहे लें कि शरीर जिसे छोड़ नहीं पा रहा था। कह रहे थे कि बूढ़ा आज तक इसी आस में है कि एक दिन उसके घर से कोई उसे मिलने आएगा। बच्चे या नाती। उसे उसके नाम से पूछते हुए। हाल चाल लेने। उस दिन वो तर जाएगा।

"भैरव नाथ जी एक बात पूछूँ?"

"चाय पिलाओगे?"

"हाँ!"

"स्पेशल वाली?"

"हाँ स्पेशल वाली ही!" मैंने मुस्कुराते हुए कहा।

"तब फिर पूछो।"

"आप सबकी बात और सबकी कहानी सुनाते हैं। आपकी कहानी क्या है?"

"मेरी कहानी कुछ नहीं है।"

"स्पेशल चाय बोल दी है। बताना होगा। यूँ ही, ऐसे ही कोई होटल डेथ का चौकीदार होने नहीं आ जाता।"

"तुम बड़े दुष्ट हो जी। एक तो रहने की जगह दी, तुम कल को चाय पिलाके वसीयत ही लिखा लोगे।"

"अहमद फराज की गजलें सुनते हुए किसी की आँखें, इस उमर में, यूँ ही तो नम नहीं हो जाती भैरव नाथ जी!"

"इतना जानते हो तो पूछते क्यों ही जी?"

"अरे गुस्सा मत कीजिए। बता दीजिए न!" मैं शरारत से मुस्कुरा रहा था।

"अब यही जान लो कि हम भी किसी का इंतजार ही कर रहे हैं। और उनके इंतजार में ही बनारस आए थे। वो हमें खोजते हुए इधर आ गईं तो ठीक बात। नहीं भी आईं तो एक दिन यमराज तो आएँगे ही!"

"आपको पहली बार जब इधर गजल देखकर रुआसे होते देखा था मुझे तब ही मालूम हो गया था", मैंने मुस्कुराने लगा।

More Books - www.The-Gyan.in

“ए तू बहुत दुष्ट है। बूढ़े को बेवकूफ बनाकर सब निकलवा लिया। भाग यहाँ से। कॉलेज क्यों नहीं जाता?”

“हाहा। वापस बुला लेंगे तो कॉलेज भी जाऊँगा।”

“तू कैसा आदमी है! निकाल दिया गया है और परेशान भी नहीं है?”

“परेशान होकर क्या होगा भैरव नाथ जी! सब ठीक हो जाता है। आप ही तो कहते हैं”, मैं हँसने लगा।

“अच्छा?”

“तब क्या। ई बनारस हओ महराज!” मैं हँसा।

“खुश रहो बेटा। हमेशा ऐसे ही रहना”, भैरव नाथ जी ने सर पर हाथ से थपकी दी।

“आपसे एक आग्रह करूँ?” मैंने पूछा।

“कहो बेटा।”

“मैं और मेरे दोस्त, जब बूढ़े हो जाएँगे, अपने आखिरी दिनों में हम यहीं रहने आएँगे। आप हमें फिर से जगह देंगे?”

“क्यों भला? ऐसा क्या रखा है इधर?”

“पता नहीं। बस अभी यूँ ही दिमाग में आया। इसलिए कह दिया। कितना अच्छा हो कि तमाम साल बाद, जब हम बूढ़े हो जाएँ, तो इधर वापस आएँ। यूनिवर्सिटी घूमें, पहलवान के यहाँ लस्सी पीने जाएँ, इधर सूरज डूबते-उगते देखें, उस पार जाएँ, फिर इस पार लौट आएँ, और जब भी आखिरी साँस लें, तो इधर ही आकर लें।”

“जब जी करे आ जाना बेटा। तुम सब एक दिन पार लगो।”

“एक और आग्रह कर सकता हूँ?”

“कहो।”

“वो जो बानबे साल के बूढ़े की कहानी आप सुना रहे थे। वो किस कमरे में हैं? मैं उनसे मिल सकता हूँ?”

“हाँ बिलकुल। वो लाल दरवाजे वाले कमरे में चला जा”, भैरव नाथ जी ने इशारे से कमरा दिखाया। मैं उनसे मिलने चला गया। एक 92 साल का वृद्ध बिस्तर पर लेटकर छत देख रहा था। ऐसे जैसे पता नहीं कब से छत देख रहा था, अपने आस-पास रखी एक-एक चीज। इतने ध्यान से जैसे अगर आप यूँही पूछ दें तो आँख मूँद कर बता देगा, कि कौन चीज कहाँ रखी है। कमरे का नक्शा बना देगा। पंखा, पंखे के बीच में बना गोल निशान, गिलास, स्टूल, बक्सा, चादर, चादर में बनी चौकोर आकृतियाँ, खिड़की, खिड़की में गिनकर कुल पाँच

More Books - www.The-Gyan.in

लोहे की रॉड। वह उन सब को ध्यान से देखता था, पर वे उसे पलटकर नहीं देखते थे। मैं कोशिश करके उनके बगल में रखे स्टूल पर बैठ गया। उन्होंने मुझे ऐसे देखा जैसे मुझे नहीं देख नहीं, पढ़ रहे हों। जैसे मैं कोई गणित का सवाल हूँ, जो सिलेबस के बाहर से आ गया हो। आँख पर हाथ से छप्पर बनाते हुए उन्होंने पूछा—

"कौन हो बेटा?"

"आप मुझे नहीं जानते, लेकिन मैं आपको जानता हूँ, दादा जी", मैंने कहा।

"कितनी अजीब बात है न बेटा! तुम मुझे जानते हो लेकिन मैं तुम्हें नहीं जानता। जिन लोग को मैं जानता हूँ, वो लोग मुझे नहीं जानते। हैरानी की बात है न!" उन्होंने इतने सधे लफ्जों में कहा जैसे अरसे से पता था कि कोई कमरे पर आएगा तो यही कहेंगे।

"हैरानी की बात तो है दादा जी। पर क्या फरक पड़ता है! चलिए न आपको घाट घुमा कर लाता हूँ। आपको भूँजा खिलाता हूँ।" मैंने प्रेम से कहा।

"अरे मेरे दाँत कहाँ हैं बेटा!" वे हँसे। हँसने में कोशिश साफ दिखाई दे रही थी।

"तो चलिए आलू की चाट खिलाता हूँ। आलू मीस के बना देगा। अच्छा लगेगा।"

"चलने में मेरी मदद करनी होगी", उन्होंने कहा।

"हाँ! मेरा कंधा पकड़कर धीरे-धीरे चलिए", मैंने कहा। और मैं उन्हें लेकर घाट की सीढ़ियों पर टहलाने लगा।

मेरा कंधा थामे हुए, वे एक-एक पाँव, नापकर यूँ रखते थे जैसे पाँव लंबा पड़ गया तो गलती हो जाएगी। बीच-बीच में मुझे देखने लगते थे, जैसे अब तक समझने की कोशिश कर रहे हों कि मैं आखिर हूँ कौन। उन्हें कहाँ और क्यों लिए जा रहा हूँ। मेरा चेहरा ऐसे पढ़ने लगते थे जैसे उस पर कहीं-न-कहीं इस सवाल का जवाब भी लिखा ही होगा। फिर शायद स्मृति पर जोर डालने लगते थे। उसमें मैं कहीं मिल जाऊँ और ये गुत्थी हल हो। झल्लाकर, कौतूहल से उन्होंने पूछ ही लिया,

"तुम मुझसे मिलने क्यों आए हो?"

"मैं वहीं रहता हूँ। मुमुक्षु भवन में। आपके कमरे के पास ही मेरा कमरा है। आपको रोज देखता हूँ तो सोचा आज मिल ही लेता हूँ। मुझे चाट खाने के लिए कोई साथी भी तो चाहिए था!" मैंने आलू मीसते हुए कहा और चाट की प्लेट उनकी ओर बढ़ा दी।

"झूठ बोलते हो। वहाँ तो मुमुक्षु रहते हैं। तुम्हें भला अभी से मृत्यु की अभिलाषा क्यों ठहरी!" उन्होंने प्लेट वापस कर दी, जैसे वो मेरे जवाब पर अपनी नाराजगी जाहिर करना चाहते थे।

"अरे आप चाट तो खाइए दादा जी", मैंने प्लेट फिर बढ़ाई।

More Books - www.The-Gyan.in

"नहीं। पहले सच बोल", उन्होंने प्लेट फिर वापस की।

हार मानकर मुझे उन्हें अपनी कहानी संक्षेप पे कह दी। कहानी सुनकर, संतुष्ट होकर वे चाट खाने लगे। "भौकाल चाट, सबसे भौकाली चाट", चाट वाला चीखता रहा।

"तुमको डर नहीं लग रहा?" उन्होंने पूछा।

"थोड़ा-बहुत। इस बात का कि इतनी बड़ी मुश्किल में पड़ गया हूँ। पर एक अजीब-सा कौतूहल भी है।"

"कौतूहल? किस बात का?"

"कौतूहल जैसा एक बार बचपन में महसूस किया था। जब मैं पहली बार मेला घूमने गया था। मेले में तरह-तरह के झूले थे, खाने-पीने की भतेरी चीजें। अजीबोगरीब लोग। मसखरे, सर्कस, जादूगर। मैं इतना हैरान रह गया था कि मेला घूमते-घूमते खो गया। मैं डर गया था। रो भी रहा था लेकिन फिर भी मेले में इधर-उधर घूम रहा था। मैं पूरा मेला देख लेना चाहता था। जो कुछ भी रह गया था। जब घर वालों ने मुझे खोजा तो बहुत पिटाई हुई। और हिदायत दी गई कि दुबारा कभी मेले में नहीं जाना। उनकी बात मानकर मैं दुबारा कभी मेले नहीं गया। मुझे इस बात का मलाल आज तक है।"

"मैं कुछ समझा नहीं।"

"कॉलेज आया तो पता नहीं क्यों मुझे ऐसा लगा कि मैं उसी हसीन से मेले में दुबारा घूमने आ गया और मेरा मलाल दूर हो गया।"

"बेटा तुम क्या कहते हो मुझे कुछ समझ नहीं आता।"

"मेरे पापा को भी समझ नहीं आता दादा जी", मैं जोर से हँसने लगा। "भैय्या दादा जी के लिए एक टमाटर चाट और बना दो", मैंने चाट वाले से कहा।

***

घाट की सीढ़ियों पर बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे। कुछ लड़के पतंग उड़ा रहे थे। कुछ पतंग लूट रहे थे। अधिकतर, गंगा पर आरती करने वाले पंडितों के बच्चे थे। चोटी, धोती सँभालते क्रिकेट खेल रहे थे। उनमें से एक फील्डिंग करते हुए दौड़ते-दौड़ते, गेंद खोजते बरगद तक आ गया।

"ए गुरु। इधर गेंद आई है क्या?"

"न। इधर नहीं आई।"

"इ इधरी आई है, हम देखे थे।"

"इधर नहीं आई छोटे पंडित जी।"

More Books - www.The-Gyan.in

"ससुर गेंद भिड़ा लिए हो। दो।"

"अरे गजब बात है। गेंद नहीं आई इधर!"

"दो।"

"बोला न गेंद नहीं आई इधर!"

"भोसड़ी के!"

"पंडित जी गाली देते हैं", मेरी हँसी छूट गई।

"तो का तोहार आरती उतारब। चोर सरउ। गेंद देबा कि नहीं देब हमारी!"

"गेंद एक शर्त पर दूँगा।"

"का रे!"

"ये बताओ कि तुम पंडित जी होकर गाली क्यों देते हो? और गाली देते-देते, क्रिकेट खेलते-खेलते, पतंग लूटते, छोटे से बउवा जी, तुम पंडित कैसे बन गए", मैं जोर से हँस रहा था।

"ए भाग बकलोल। बाउ आरती करते हैं। बोले तुम भी करो, तो हम करते हैं। चोर सरउ गेंद भिड़ा लिहिस और ज्ञान पेल रहे हैं", वह मुझे गाली देता हुआ भाग गया। मैं उसे देर तक देखता रहा। थोड़ी देर में मैच खतम हो गया, अँधेरा होने लगा, आरती का टाइम हो गया और वो आरती के लिए थाली सजाने लगा। मेरी इच्छा हुई कि जाकर उससे और बातें करूँ लेकिन फटाफट गंगा आरती की तैयारी कर रहा था। साथ में उसके पिता रहे होंगे शायद। वह रुई का गट्ठा दे रहे थे और लड़का उसको फाड़ कर मोटी-मोटी बातियाँ बना रहा था।

वह इतना चंचल था कि कहीं से भी इस सबका हिस्सा नहीं लग रहा था। ऐसे उछल-मचक रहा था जैसे प्रेशर कुकर की सीटी। इस पूरे सेट अप में अगर कहीं कोई एक चीज एलियन लग रही थी तो वह उस लड़के की मौजूदगी थी। लोग आरती की तैयारी होते देख आसपास इकट्ठा होने लगे थे। वह भीड़ के उस पार कुछ और खोज रहा था। तखत के नीचे उसका क्रिकेट का बल्ला रखा हुआ था, जिसे वह दो बार चेक कर चुका था। कहीं वो भीड़ में गुम न हो गया हो। पिता उसे बार-बार डाँट रहे थे। बाती जल्दी से बनाने के लिए। आसपास खड़े लोग हाथ जोड़कर बैठे थे। वे आरती शुरू होने का इंतजार कर रहे थे। लड़का आरती खतम होने का। आरती जैसे ही खतम हुई वह बैट लेकर भगा। पिता ने डाँटकर वापस बुला लिया। आदेश दिया कि सबको आरती देकर आओ। वह दीया लिए खड़ा रहा। लोग हथेली धरकर आँच लेते और उसकी उजास अपने चेहरे पर मल लेते। मन-ही-मन कुछ प्रार्थना करते। मैं भी आगे बढ़ा।

"मैं बॉल नहीं दूँगा। मेरे पास ही है", मैंने मुस्कुराते हुए कहा।

More Books - www.The-Gyan.in

"ससुर बकलोल, दे गेंद", उसने बाकियों से नजर और कान बचाते हुए कहा।

"एक शर्त पर।"

"के शरत रे?"

"तुम ये सब पंडिताई छोड़ दो। स्कूल जाया करो पढ़ने। मैं सुसुवाही में बच्चों को पढ़ाता हूँ। मैं तुमको बिना फीस के पढ़ा दूँगा।"

"ए जा भाग यहाँ से।"

"हाहा! तुम्हारे पिता से कह दूँगा कि तुम गाली देते हो", मैं हँसा।

"बाऊ तो खुद्दे गाली देते हैं", वह और जोर से हँसा।

***

"तुम घाट पर हो न! अभी इसी वक्त मुझे तुमसे मिलने आना है। और प्लीज ड्रामा मत करना। मैं स्कूटी लेकर निकल रही हूँ। वहीं रुको। अभी तुरंत आ रही हूँ", शुभ्रा ने एक साँस में फोन पर कहा।

"आ जाओ। ऐसे हाँफ क्यों रही हो?"

"आकर बताती हूँ", उसने झट से फोन काट दिया और अगले बीस मिनट में वो घाट पर थी। साथ में प्रसाद, पांडे, अखिल, मोहित। सब।

"यू डफर। हम लोगों से छुपकर बैठे हो", शुभ्रा दौड़ते हुए आई और उसने पेट पर मुक्का-सा मारा।

"लगता है", मैं पेट पकड़कर बैठ गया।

"हाँ तो आरती उतारी जाई तुम्हारी। ईडियट। छुपकर क्यों बैठे हुए हो", उसने फिर धौल जमाया।

"इधर हम लोग साला इनके लिए वीसी के दफ्तर के चक्कर काट रहे हैं और ये सरउ यहाँ लौंडों के साथ घाट पर क्रिकेट खेल रहे हैं", प्रसाद चिल्लाया। और फिर सब के सब मुझ पर चढ़ बैठे।

"इधर हम लोग परेशान होकर, दौड़ भाग करके, चप्पल घिसवा रहे हैं और ये जीवन का आनंद ले रहे हैं। मारो साले के एक और। दिमाग का दही करके रखा हुआ है", पांडे चिल्लाया।

"अब चलो। हॉस्टल चलना है कि नहीं?" शुभ्रा ने कहा।

"हॉस्टल?"

More Books - www.The-Gyan.in

"हाँ तो यहीं मोक्ष लेने का इरादा है क्या?" शुभ्रा फिर से धौल जमाने आगे बढ़ी।

"लेकिन हॉस्टल में तो घुसने नहीं देंगे!" मैंने कहा।

"हाँ तो हम लोग इतने दिन से अंताक्षरी नहीं खेल रहे थे। लड़ रहे थे वीसी से। रस्टीकेट का डिसीजन वापस हो गया है", मोहित ने कहा।

"हैं?" मैं खुशी में उछल पड़ा।

"हाँ। तुमको अनिरबन दास फेल किया था न। और तुमको फेल करके बहुत कलप रहा था। उसके सप्लीमेंट्री एग्जाम में तुमको 60 में 59 आया है। तुम्हारा कॉपी चेक करके वो बिचारा और रोया। बोला कि इस लड़के को जब इतना आता था तो फेल कहे हो गया। मेरे बीस साल के टीचिंग करियर में किसी को 40 नंबर भी नहीं आया। वो इतना सदमे में आ गया कि वो खुद वाइस चांसलर से जाके रिक्वेस्ट किया कि तुम्हारा करियर न खराब किया जाए", प्रसाद बोला।

"मुझे 60 में 59 आया है?" मैं अवाक् था।

"हाँ। अनिरबन दास फिर आहार-विहार ढाबे पर मिला था। परसों हम लोग बियर पीने गए थे। तुम्हारी बात पूछ के फिर कलप रहा था। हम लोग पूछे अब क्या हो गया सर? फेल वाली बात तो पुरानी हो गई। निशांत ने भी आपसे बोला था कि कोई कोई बात नहीं। तो मालूम है वो क्या बोला?" प्रसाद हँसते-हँसते गिरा जा रहा था।

"क्या बोला?" मैंने पूछा।

"यूरेका-यूरेका की तर्ज पर 'इम्पोसिबाल-इम्पोसिबाल' चिल्ला रहा था। चखने में तोता जैसे हरी मिर्ची कुतर रहा था। अट्टहास कर रहा था। उसके देखकर गोलमाल के कलाईमैक्स में उत्पल दत्त की याद आ रही थी", प्रसाद जमीन पर पड़ गया था।

"कबाड़ी भी बहुत मदद किया बे। घनश्याम और बिरला-ब्रोचा वाले लड़कों को पकड़ के वीसी दफ्तर ले जाके कबूल करवाया कि सब हरामखोरी उनका था। वीसी अब उनको एक्सपेल करके तुम्हारा रस्टीकेशन वापस ले लिया है", पांडे बोला।

"वो लोग कैसे कबूल लिए?"

"अरे वो गुरु घंटाल आदमी है भाई। हॉस्टल जाकर गरज दिया कि अगर ये लड़के वीसी ऑफिस रिपोर्ट नहीं किए तो सबका गल्ला पानी बंद। न एग्जाम का पेपर, न परीक्षा में आने वाले सवालों की खुफिया खबर, न ही एडवांस में परीक्षा की तारीख। न किताबें, न नोट्स, न कूलर-केटल-तखत। बोला सबका लाइफ लाइन काट देगा। देखने लायक नजारा था। और वैसे भी ये लड़के आवारागर्द ही थे। उनके लिए आगे बढ़के कौन आता। फौरन पेशी लगवा दी गई", मोहित ने कहा।

More Books - www.The-Gyan.in

“वाइस चांसलर को तो बस इस बात से मतलब था कि जो फजीहत और जूतमपैजार हुई है, उसका ठीकरा किसी के सर फोड़ा जा सके। तुम्हारे सर नहीं तो उनके सर”, पांडे ने कहा,

“तुमको मालूम है? तुम सुसुवाही के जिन लड़कों को पढ़ाने जाते हो, उनके घर से जो लोग वीसी के दफ्तर और घर में काम करते हैं, वो भी वीसी से बोले कि तुमको वापस ले लें”, शुभ्रा ने कहा।

“सरवा वीसी भी सोच रहा था कि ये कौन लड़का है जिसके लिए प्रोफेसर से लेकर मेस वर्कर और सफाई करने वाले कर्मचारी तक सिफारिश लगाने आए हैं”, पांडे ने कहा।

“मेस वर्कस के बच्चे तुमको पूछ रहे थे। कह रहे थे भैया बहुत दिन से पढ़ाने नहीं आए है”, शुभ्रा मुस्कुरा कर मेरे गले लग गई। मैंने भी उसे जोर से गले लगा लिया।

“निष्काम प्रेम”, प्रसाद बोला।

“निष्काम प्रेम”, पांडे बोला।

“निष्काम प्रेम”, मोहित बोला।

“ए चुप करो सालो!” मैंने कहा।

“हाँ सारा प्रेम उसी को दे दो। हम लोग तो कुछ किए ही नहीं हैं न!” पांडे ने तंज कसा।

मैंने तीनों को भींचकर गले लगा लिया।

“ओह! तो ये हैं तुम्हारा ध्रुव तारा”, पीछे से आवाज आई। वो फिरंगी साधू बाबा पास से गुजर रहे थे। मुस्कुरा रहे थे।

“जी। यही हैं”, मैं मुस्कुराया।

“क्या ध्रुव तारा?” शुभ्रा ने पूछा।

“कुछ नहीं। चलो नाव से उस पार चलते हैं यार”, मैंने कहा।

“चलो”, सबने कहा।

हम भूँजा लेकर, नाव पर बैठे हुए, तमाम देर बस गंगा जी में कंकड़ फेंकते रहे। हमेशा की तरह कंकड़ पानी में बिला जाता था। जब कंकड़ पानी की तह पर गिरता था तो लुप की आवाज आती थी और गोल-गोल चक्कर दार लहरें छूटती थीं। फिर धीरे-धीरे गायब हो जाती थीं। जैसे लहर कभी थी ही नहीं। कंकड़ कहीं था ही नहीं। थीं तो बस गंगा जी।

“यार अबकी अगले सेमेस्टर ढंग से पढ़ेंगे। साला नहली मार देंगे, इसकी जात का”, पांडे ने कहा।

“हाँ पंडी जी सीधे टॉप मार देना”, प्रसाद ने कहा।

More Books - www.The-Gyan.in

“हम तो कह रहे हैं अभी से डेटा स्ट्रक्चर और सी प्लस प्लस घोटना शुरू कर देते हैं। प्लेसमेंट का तैयारी भी बढ़िया से हो जाएगा।”

“अबे यार इसको कोई नदी में फेंको”, मोहित ने कहा।

“अबे निशंतवा तुमको मालूम है, रोहित MMV की एक और लड़की पटा लिया। साला डबल डेट मार रहा है। लार चुआता है और दो-दो लड़की घुमा रहा है”, पांडे ने खबर सुनाई।।

“अभी तो तुमको टॉप मारना था पंडित। देख लिए तुम्हारा कमिटमेंट हम”, प्रसाद ने कहा।

“अबे हाँ यार। अब कल ही से पढ़ाई शुरू एकदम”, पांडे ने गलती सुधारी।

“भैया जी नदी जहाँ सबसे गहरी हो उधर रोक देना। एक लड़के को फेंकना है”, मोहित ने मल्लाह से पूछा।

“ए वो देखो, पत्ते के दोने में दीया तैर रहा है”, शुभ्रा ने चहकते हुए कहा। जैसे कोई अजूबा देख लिया हो।

“हाँ। सुंदर लग रहा है”, मैंने कहा।

“भैया नाव जरा बचा के निकालिए। दिया से टकरा गई तो वो डूब जाएगा”, शुभ्रा ने डरते हुए कहा।

“नहीं डूबेगा। डूबेगा तो निशंतवा पानी में कूद जाएगा और उसको बचा लेगा”, प्रसाद हँसा।

“हाहा! निष्काम प्रेम! निष्काम प्रेम!” मोहित ने कहा।

“निष्काम प्रेम! निष्काम प्रेम!” पांडे ने जैसे इको दिया।

“चुप करो सालो!” मैंने कहा।

“लीजिए भैया जी। पार हो गए”, मल्लाह ने कहा।

***

मैं बच्चों को पढ़ाने सुसुवाही पहुँचा तो सारे बच्चे नहा-धोकर, साफ-सुधरे कपड़ों में, बाल-वाल काढ़कर, कॉपी किताब खोलकर, ऐसे बैठे थे मानो मेरा तमाम देर से इंतजार कर रहे हों। बच्चों ने ब्लैकबोर्ड पर पानी मारकर उसे चमका दिया था, खड़िया से किसी ने फूल बनाकर, उसके बगल में तारीख और दिन लिख दिया था। दाहिने और बाएँ सिरे पर लाइन खींचकर एक-एक बीते का मार्जिन भी बना दिया था।

More Books - www.The-Gyan.in

“अरे क्या भइया जी, यहाँ हम लोग को इतना होमवर्क पकड़ाकर इतना दिन के लिए खुद्दे गायबे हो गए। कहाँ हिरा गए थे!” मेरे कमरे में दाखिल होते ही एक बच्चे ने कमर पर हाथ रखकर, दुसरे हाथ को घुमाते हुए कहा।

“इधर हम लोग सब निबंध-उबंध वगैरह पूरा रट-उट के बैठे हैं और आप खुद्दे फरार थे। झुट्ठे कॉपी घिसवा रहे हैं हम लोग से। कहाँ थे?” दूसरे ने झूठ-मूठ का गुस्सा दिखाते हुए पूछा।

“और आपको मालूम भी है? आप जो बियच्चू वालों को अपलीकेसन दिए थे, हम लोग के नए क्लासरूम के लिए। उसका मंजूरी आ गया। अखिल भइया पढ़ाने आए थे, तो बता रहे थे। अब बड़का वाला क्लासरूम मिलेगा, वहाँ कुर्सी, मेज, खड़िया, डस्टर, सब”, तीसरे ने कहा।

“क्या! वो हॉल मिल गया?” मैंने चहकते हुए कहा।

“हाँ तब क्या। अब उधरे क्लास लगाइए हम लोग का”, पहले वाले ने कहा।

“और गोला कहे मारते हैं, यहाँ हम लोग कितने दिन से रोज नहा के पढ़ने आ रहे थे। और यहाँ आ रहे हैं तो आप गायब हैं। झूट्ठे नहलवा दिए बिना बात के। खुजली करने लगता है”, दूसरे वाले ने कहा।

“तुमको नहाने से खुजली होता है?” मैंने पूछा

“हाँ तब क्या! नहाने से कितना देह खुजाता है”, वो बोला

“अच्छा बैठ जाओ। नेतागीरी करवा लो बस तुमसे। होमवर्क किए हो?”

“हाँ किया हूँ।”

“क्या होमवर्क दिया था? मैं भूल गया।”

“हम बड़े होकर क्या करना चाहते हैं उस पर निबंध सुनाना था।”

“तब तुम सुनाओगे?”

“हाँ! सीट पर खड़ा होकर।”

“तब शुरू हो जाओ बुलंद आवाज में।”

“मैं बड़ा होकर बहुत कुछ करना चाहता हूँ। जैसे जब मैं बड़ा हो जाऊँगा तो लंबा हो जाऊँगा। तो मैं अलमारी से करौंदे का अचार का डब्बा उतारकर खाऊँगा। अभी माई छुपा देती है और हाथ नहीं पहुँचता है। जब अउर बड़ा हो जाऊँगा तो मोटरसैकिल चलाना चाहता हूँ। अभी मेरा पैर नीचे तक नहीं पहुँचता है। बड़ा होकर सुंदर लड़की से बियाह भी करूँगा। बड़े भइया का बियाह हो गया है, उनको शादी में स्कूटर मिला था। बड़ा होकर मैं कॉलेज भी

More Books - www.The-Gyan.in

जाऊँगा। उधर पढ़ाई करूँगा। समाप्त", लड़के ने बुलंद आवाज में कहा।

"बहुत सुंदर", मैंने कहा।

मैंने इससे अच्छा निबंध पहले कभी नहीं सुना था।

***

भले ही इस वक्त मैं इतने ठीक और पक्के तरीके से ये नहीं बता सकता था कि मैं बड़े होकर क्या बनना चाहता था लेकिन इन बच्चों को सुनते हुए मेरा ये मलाल धीरे-धीरे कम होने लगता था। साल भर में मैंने, शुभ्रा और दोस्तों के साथ इनका एक छोटा-सा स्कूल सजा लिया था। पढ़ने वाले बच्चों की संख्या भी बढ़ने लगी। एक दिन मटकते-लचकते वह बच्चा भी पढ़ने आ गया था जो बस दिन रात अस्सी पर क्रिकेट खेलता था और जबरन आरती करता था। और उसके जैसे तमाम और भी।

इन्हें पढ़ाना घाट पर खुले आसमान के नीचे लेटकर ध्रुवतारा खोजने जैसा था। मैं हर रोज उन्हें पढ़ाने आता और अक्सर उन्हें यह निबंध लिखकर सुनाने को कहता। वे बड़े मान और दुलार से मुझे अपनी भोली किस्सागोई से वही निबंध सुनाते और मैं साफ-साफ देख पाता कि फिलहाल मैं उन्हें पढ़ाने में अपना सब कुछ लगा देना चाहता हूँ। इधर बीच घर से अपनी पुरानी डायरी भी उठा ले आया था। उसमें गाहे-बगाहे कविताएँ और कहानियाँ लिख लेता हूँ और इन बच्चों को सुनाता हूँ। वे खूब मन से सुनते हैं। ताली बजाते हैं। पापा फोन करते हैं तो उन्हें भी सुनाकर तंग करता हूँ। अब वे सिर्फ मौसम, बारिश, दूध और पढ़ाई की ही बात नहीं करते, और भी बहुत कुछ बोलते-बताते हैं।

बाकी न बनारस बदला है और न बनारस हिंदू यूनीवर्सिटी। अब भी जब वहाँ एक नया बैच दाखिला लेता है तो उनका एक ऑफिशियल इन्डक्शन होता है और एक अन-ऑफिशियल। कबाड़ी आज भी उन्हें केदारनाथ की लंबी कविता सुनाकर ही बनारस से उनका परिचय कराता है और उन्हें लहरतारा से उठने वाले धूल के बवंडर से लेकर दशाश्वमेध घाट पर बैठने वाले बंदरों की नम किरकिराती आखों के बारे में बताता है। पांडे कॉलेज के चौथे साल में भी कॉलोनी के उन वाले अंकल को खोज रहा है जो कहते थे कि बेटा बस IIT कर लो फिर लाइफ सेट है और मैं अब भी जोर से हँसते हुए उसे कहता हूँ—"सब पार लग जाएगा बे पंडित"। वह चिढ़ते हुए "कैसे?" पूछता है और मैं "काहे से ई बनारस है महाराज" कहकर उसके कंधे पर हाथ रख देता हूँ।

सच में मुझे खुद नहीं पता कि जब भी मैं, "काहे से ई बनारस है महाराज" कहता हूँ तो उसका क्या अर्थ होता है? कुछ है भी या नहीं भी है। बस मुझे इतना पता है कि ऐसा कहने से सीना फूल जाता है, जैसे दम भरकर साँस खींच ली हो। ऐसा कहने से मन में उजास हो

More Books - www.The-Gyan.in

जाता है, जैसे गंगा जी में कोई दीया तैरा दिया हो। ऐसा कहने से दिल शांत हो जाता है, जैसे शुभ्रा ने अपने गरम हाथ से मेरा हाथ पकड़ लिया हो। ऐसे कहने से सब कुछ ठहर जाता है, जैसे भैरव नाथ जी से मिलने जाऊँ तो वे बताएँ कि मुमुक्षु भवन में आज फिर किसी को मुक्ति मिल गई है।

More Books - www.The-Gyan.in